

आर.एन.आई. नं. 3653/57
मुद्रण तिथि 5 से 8 जुलाई, 2017
डाक प्रेषण तिथि 10 जुलाई, 2017

वर्ष : 75 अंक : 07 डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
श्रावण, 2074 मूल्य : 10 रु. WPP LICENCE NO. JAIPURCITY/WPP-004/2015-17

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

‘कषाय’ अंक



एसो पंच णमोक्कारो, सव्व पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं

75
हीरक
वर्ष



चित्त की मलिनता का मूल है- ‘कषाय’
मन की शान्ति और आत्मिक सामर्थ्य का मूल है। - ‘कषाय-विजय’

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती



आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा



जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'॥

संरक्षक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

संस्थापक

श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

प्रकाशक

विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)

फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-4068798

प्रधान सम्पादक

प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2,
नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2626279

E-mail : editorjinvani@gmail.com

E-mail : jinvani@yahoo.co.in

सह-सम्पादक

नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

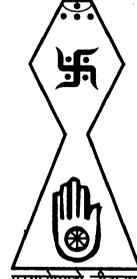
भारत सरकार द्वारा प्रदत्त Phone :

रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57

डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2015-17

WPP Licence No. JaipurCity-004/2015-17

ISSN 2249-2011



परस्परपन्नो जीवानाम्

पुयमदं निसामित्ता
हेळ कारणचोड्ड्रो।
तद्रोवमिरायरिसिं,
देविदो इणमब्बवी॥

-उत्तराध्ययन सूत्र, 9.17

यह हेतु और कारणप्रेरित,
देवेन्द्रवचन श्रुतिगोचर कर।
राजर्षि नमि को यों बोले,
अन्तर में गहरा चिन्तन कर॥

जुलाई, 2017

15 वीर निर्वाण संवत्, 2543

श्रावण, 2074

वर्ष 75

अंक 7

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.

20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.

20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.

स्तम्भ सदस्यता : 21000/-

संरक्षक सदस्यता : 11000/-

साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि 'जिनवाणी' बैंक खाता संख्या SBBJ 51026632986 IFSC No. SBBJ 0010843 में जमा कराकर

जमापत्री (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता 'जिनवाणी', दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)

फोन नं.0141-2575997, फैक्स : 0141-4068798, E-mail:sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

‘कषाय’ अंक

सम्पादकीय-	जिनवाणी की हीरक यात्रा (7)	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-विवेचन : डॉ. धर्मचन्द जैन	9
विचार-वारिधि-	कषाय : आत्मघातक	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	10
प्रवचन-	कषायों को घटाएँ, कर्मास्रव को रोकेँ	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.	11
	कषायों के शमन से होती है शान्ति-समाधि	-श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.	14
	योग और कषाय : एक चिन्तन	-उपाध्याय श्री रमेशमुनि शास्त्री	16
कषाय-स्तम्भ -	जैनागमों में कषाय : स्वरूप एवं समीक्षा	-प्रो. सागरमल जैन	19
	क्रोध, मान, माया एवं लोभ के पर्यायार्थक		
	शब्दों का विवेचन	-डॉ. दिलीप धींग	32
	कषाय का स्वरूप	-श्री सम्पतराज चौधरी	40
	कषाय-मुक्ति का सोपान : ध्यान	-श्रीमती अभिलाषा हीरावत	42
	राग-द्वेष	-डॉ. धर्मचन्द जैन	47
	क्रोध-विजय के व्यावहारिक उपाय	-श्री सम्पतराज डोसी	50
	कर्मों से प्रभावित हमारा स्वास्थ्य	-डॉ. चंचलमल चोरडिया	53
शरीर-विज्ञान	शरीर एवं मित्र जीवाणु	-श्री पी. शिखरमल सुराणा	31
कविता/गीत-	भीषण गर्मी में साधु-साध्वियों का टोला	-श्री गजेन्द्रकुमार जैन	13
विचार-	Law of Nature	-विजेता लोढ़ा	8
	विचार-मुक्ता	-महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा.	39
बाल-जिनवाणी -	ध्वजवंदन	-संकलित	83
	चाबी, ताला और हथौड़ा	-श्री गौतम पारख	83
	रात्रिभोजन त्याग से कई लाभ	-श्री अभयकुमार जैन	84
	चौबीस तीर्थंकरों की 24 शिक्षाएँ	-डॉ. दिलीप धींग	84
	प्रश्न-पहेली	-संकलित	85
	Behaviour of Children towards fellow groups, elders, society and other people	-Miss Anjita Bhandari	86
	‘चमत्कार’ चाहिए	-श्री नमन मेहता	86
	Jain Values	-Sh. Dulichand Jain	87
	राजा का न्याय	-श्रमण : डॉ पुष्पेन्द्र	87
	तीसरा बोल - काया छह	-संकलित	88
	अधूरा ज्ञान	-संकलित	89
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	-डॉ. श्वेता जैन	58
चातुर्मास-सूची-	सन् 2017 के रत्नसंघ के घोषित चातुर्मास	-संकलित	60
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	68
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	81

जिनवाणी की हीरक यात्रा (7)

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

स्थानीय धार्मिक शिक्षण शिविरों की योजना को 1974 में गति प्राप्त हुई एवं यह निर्णय लिया गया कि शीतकालीन और ग्रीष्मकालीन अवकाशों में स्थानीय स्तर पर बालकों के ज्ञानार्जन हेतु शिविर लगाये जाने चाहिए। दो वर्ष पूर्व परीक्षण के तौर पर जोधपुर में स्थानीय शिविर आयोजित हुआ था, जो अत्यन्त सफल रहा। इसके पश्चात् दूसरे वर्ष जलगांव, जामनेर, राजकोट, जालोर, श्यामपुरा, अलीगढ़-रामपुरा आदि क्षेत्रों में भी ऐसे शिविर आयोजित किए गए। स्वाध्याय संघ के संयोजक श्री सम्पतराजजी डोसी ने एतदर्थ योजना प्रस्तुत की।

शिक्षित युवावर्ग प्रायः जैन धर्म के मौलिक सिद्धान्तों एवं परम्पराओं से अनभिज्ञ रहता है, ऐसा सन् 1974 के मार्च अंक की जिनवाणी में प्रकाशित एक परिचर्चा से विदित होता है। जैन धर्म में आई विकृतियों के प्रति युवक-युवतियों ने विरोध प्रकट किया है तथा वे अपने को जैन कहलाने में संकोच का अनुभव करते हैं। अप्रैल 1974 के अंक से श्री महावीर कोटिया द्वारा लिखित 'आत्मजयी' शीर्षक से भगवान महावीर के जीवन और उपदेशों पर आधारित मानवतावादी एक लघु उपन्यास प्रकाशित हुआ, जो पाठकों को रुचिकर एवं विचारोत्तेजक रहा।

पूज्य आचार्य हस्ती ने सन् 1974 का चातुर्मास सवाईमाधोपुर में चौका प्रथा एवं बारी प्रथा को चालु न रखने की शर्त पर घोषित किया ताकि छोटे क्षेत्रों को भी चातुर्मास कराने में कठिनाई का अनुभव न हो। धर्म एवं अर्थ में किसको प्रधानता दी जाए इसके सम्बन्ध में पूज्य आचार्य हस्ती कहते हैं- "धर्म अर्थ को प्रभावित करता रहे। आज इसकी अपेक्षा है। लेकिन हो यह रहा है कि अर्थ धर्म को प्रभावित करने लग गया है।

यह शुभ लक्षण नहीं है।" 'तप एक विश्लेषणात्मक अध्ययन' शीर्षक से श्री रमेशमुनिजी शास्त्री के आलेखों की निरन्तर शृंखला चली, जो लगभग 10 किशतों में पूर्ण हुई। भगवान महावीर के 2500 वें निर्वाण वर्ष के अवसर पर समारोह समिति के अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री सोहननाथजी मोदी ने सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों को एक पत्र लिखा, जिसमें इस वर्ष को 'अहिंसा वर्ष' घोषित करने एवं कत्लखानों पर रोक लगाने तथा एक सप्ताह के लिए मांस एवं शराब की दुकानें बंद रखने का आह्वान किया गया। सरकार ने इसे 'अभय वर्ष' घोषित करते हुए 6 दिन कत्लखानों बंद रखने की घोषणा की। इस वर्ष दो भाद्रपद होने से संवत्सरी के सम्बन्ध में मतभेद रहा। मतभेद का समाधान करते हुए पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रथम भाद्रपद में तो संवत्सरी पर्व मनाया ही, किन्तु द्वितीय भाद्रपद में भी पर्युषण पर्व मनाने हेतु स्वाध्यायियों को स्वीकृति प्रदान की।

जयपुर में सुश्राविका श्रीमती इचरजकंवरजी लुणावत द्वारा 165 दिवसीय तपस्या का कीर्तिमान स्थापित किया गया। पूज्य आचार्यप्रवर सवाईमाधोपुर का ऐतिहासिक चातुर्मास सम्पन्न कर जब जयपुर पधारे तब 23 दिसम्बर 1974 को आपने पारणे का संकल्प पूर्ण किया। 22 दिसम्बर को आयोजित समारोह में केन्द्रिय कृषि एवं खाद्यमंत्री श्री जगजीवन राम, राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री हरिदेवजी जोशी, वित्तमंत्री श्री चन्दनमल वैद आदि ने सम्बोधित किया। पूज्य आचार्य श्री हस्ती ने मेवाड़सिंहनी महासती श्री जसकंवरजी म.सा. को 25 दिसम्बर 1974 को 'शासन प्रभाविका' के विरुद्ध से व्याख्यान में सम्बोधित कर सम्मानित किया। महासतीजी के द्वारा जोगणिया माता मंदिर में प्रतिवर्ष 4000 पशुओं की बलि को अपने प्रवचन प्रभाव से हृदय

परिवर्तन कर बंद करवाया गया था।

जिनवाणी पत्रिका में समय-समय पर अनेक अच्छी कथाएँ एवं कविताएँ प्रकाशित होती रही हैं। डॉ. नरेन्द्र जी भानावत के सम्पादन में प्रकाशित अंकों में मोतीलाल सुराना की लघु कथाओं के साथ प्राकृत ग्रंथ कुवलयमाला एवं समराइच्चकहा की कथाएँ भी प्रकाशित हुईं। फरवरी 1975 के अंक में श्री हीरामुनिजी (वर्तमान आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.) के प्रवचन में विदेशों में धर्म प्रचार हेतु मुनियों के स्थान पर मध्यमवर्ग का निर्माण करने का सुझाव दिया गया। आज भी इस प्रकार के मध्यम वर्ग की आवश्यकता है। तेरापंथ समाज में समणियाँ इस प्रकार के प्रचार-प्रसार में संलग्न हैं।

भगवान महावीर के निर्वाण वर्ष में विनोबा भावे के सत्प्रयत्नों से **समणसुत्त** ग्रंथ का संकलन हुआ। विनोबा भावे की भावना रही- “मैंने कई दफा जैनों से प्रार्थना की थी कि जैसे वैदिक धर्म का सार ‘गीता’ में सात सौ श्लोकों में मिल गया है, बौद्धों का ‘धम्मपद’ में मिल गया है, जिसके कारण ढाई हजार साल के बाद भी बुद्ध का धर्म लोगों को मालूम होता है, वैसे जैनों का होना चाहिए।” विनोबा भावे के विचारों से प्रभावित होकर श्री राजेन्द्रसूरिजी ने ‘जैनधर्म सार’ पुस्तक तैयार की। उसकी हजार प्रतियाँ निकली और जैन समाज के विद्वानों के पास भेजी गईं। विद्वानों के सुझावों से कुछ गाथाएँ हटाकर, कुछ जोड़कर ‘जिणधम्म’ पुस्तक सर्व सेवा संघ वाराणसी ने प्रकाशित की।” उसके पश्चात् विनोबा भावे के साथ मुनि, आचार्यों और श्रावकों ने मिलकर 29-30 नवम्बर 1974 को दिल्ली में 300 लोगों की उपस्थिति में इसका नाम ‘समणसुत्त’ किया तथा कुछ स्वरूप भी बदला, जिसमें 756 गाथाएँ हैं। 7 और 108 को गुणा करें तो 756 बनता है। विनोबा भावे इस ग्रंथ के प्रकाशन से अत्यन्त प्रसन्न हुए तथा इस ग्रन्थ को चैत्र शुक्ला त्रेयोदशी, 24 अप्रैल 1975 को सम्पूर्ण भारत में उपलब्ध कराने का निर्णय लिया गया।

अप्रैल से जुलाई 1975 का संयुक्त अंक ‘जैन

संस्कृति और राजस्थान’ विशेषांक के रूप में प्रकाशित हुआ। लगभग 500 पृष्ठों में प्रकाशित यह विशेषांक बहुत प्रशंसित हुआ। इस विशेषांक के चार खण्डों में प्रथम खण्ड में ‘जैन संस्कृति’ पर 16 आलेख, द्वितीय खण्ड में ‘राजस्थान में जैन संस्कृति का विकास’ विषय पर 4 आलेख, तृतीय खण्ड में ‘राजस्थान का सांस्कृतिक विकास और जैन धर्मानुयायी’ में 31 आलेख प्रकाशित हैं। तृतीय खण्ड पाँच विभागों में विभक्त है- 1. पुरातत्त्व और कला, 2. भाषा और साहित्य, 3. प्रशासन और राजनीति, 4. उद्योग और वाणिज्य, 5. धर्म और समाज। चतुर्थ खण्ड में विभिन्न विद्वानों की परिचर्चा प्रकाशित है। इस विशेषांक को लक्ष्मीदेवी जैन पुरस्कार प्राप्त हुआ। आज भी यह विशेषांक अपनी महत्ता एवं उपयोगिता रखता है। इस विशेषांक में अर्थ सहयोगियों के विज्ञापन प्रथम बार प्रकाशित हुए। सितम्बर के अंक में पर्युषण एवं प्रतिक्रमण से सम्बद्ध आलेख प्रकाशित हुए। प्राकृत, अपभ्रंश, संस्कृत, कन्नड़ और अंग्रेजी भाषाविद् एवं प्राच्य विद्या के प्रकाण्ड पण्डित डॉ. आदिनाथ नेमिनाथ उपाध्ये के निधन के समाचारों को जिनवाणी में पर्याप्त स्थान दिया गया। इनका 08 अक्टूबर 1975 को कोल्हापुर में देहावसान हो गया था।

भगवान महावीर के 2500वें निर्वाण वर्ष में अन्तरराष्ट्रीय महिला वर्ष भी मनाया गया। इस अवसर पर अखिल भारतीय श्री महावीर जैन श्राविका संघ जोधपुर की सक्रिय भूमिका रही। लगभग चार वर्ष पूर्व इसकी स्थापना हुई थी, जिसका प्रथम अधिवेशन ब्यावर में 17 नवम्बर को सम्पन्न हुआ। समिति के 21 नियम तय किये गये जो समाज की नींव को सुदृढ़ करने वाले थे। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. के इस वर्ष ब्यावर चातुर्मास में इसी दिन अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की बैठक हुई, जिसमें संघ की गतिविधियों का कार्य क्षेत्र विस्तृत करने का निर्णय लिया गया। संघ के प्रमुख पाँच उद्देश्य निर्धारित किए गये- 1.

चतुर्विध संघ की सार-सम्भाल एवं सहयोग करना। 2. चतुर्विध संघ की शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था करना। 3. जरूरतमंद भाई-बहनों की यथाशक्य सहायता करना। 4. संघ के संगठन के माध्यम से सदस्यों में ज्ञानदर्शन चारित्र्य भावना की अभिवृद्धि करना। 5. आबाल वृद्ध में वात्सल्य भाव दृढ़ करना।

जनवरी 1976 में आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. के 66 वें जन्मदिवस पर श्रद्धेय श्री हीरामुनिजी (वर्तमान आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा.) ने अपने विचार प्रकट करते हुए उनकी मौलिक विशेषताओं को रेखांकित किया। उनके अनेक लक्ष्यों में एक था- दुर्लभ अनमोल मानव जीवन का निमिषार्द्ध मात्र क्षण भी व्यर्थ न खोना। दूसरा था- सर्वांगपूर्ण कठोर श्रमणाचार का निरतिचार रूपेण पालन करते हुए सुनिश्चित समय पर स्वाध्याय, ध्यान, जाप एवं आत्मचिन्तन के अनवरत क्रम द्वारा आध्यात्मिक प्रगति के प्रशस्त पथ पर उत्तरोत्तर आगे बढ़ते जाना। उनकी भावना रही कि जैन धर्मावलम्बी का ऐसा घर शेष न रहे जिसमें सामायिक, स्वाध्याय और पंच परमेष्ठी जाप का नियमित दैनिक क्रम न चलता हो।

पूज्य आचार्य श्री हस्ती के सुशिष्य श्री माणकमुनिजी का 66 वर्ष की उम्र में लगभग 33 वर्षीय संयम-साधना के साथ 09 मार्च 1976 को 35 दिवसीय संथारा पूर्ण करते हुए घोड़ों का चौक स्थित स्थानक में समाधिमरण हो गया। जिनवाणी में आपका परिचय प्रकाशित हुआ। घोड़ों का चौक जोधपुर में सम्प्रति श्री वर्द्धमान जैन अस्पताल उनकी स्मृति में सेवाकार्य में संलग्न है। 'दीक्षा कुमारी का प्रवास' उपन्यास का गुजराती से हिन्दी अनुवाद अक्टूबर 1976 के अंक से निरन्तर प्रकाशित होना प्रारम्भ हुआ। इसे पाठकों ने बड़े चाव से पढ़ा।

**सन् 1944 से 1949 के जिनवाणी अंकों
के आधार पर**

जनवरी 2017 के अंक से 'जिनवाणी की

हीरक यात्रा' के शीर्षक से जिनवाणी पत्रिका के विकास, इसमें प्रकाशित विविध सामग्री, संघ एवं समाज से सम्बन्धित घटनाओं आदि का परिचय प्रकाशित किया जा रहा है। देश की स्वतन्त्रता के पूर्व श्री जैन रत्न विद्यालय भोपालगढ़ से प्रारम्भ हुई इस पत्रिका के हमें सन् 1944 से 1949 तक के अंक प्राप्त नहीं हो सके थे। सुज्ञ श्रावकों ने इस दिशा में प्रयत्न कर इन वर्षों के कई अंक उपलब्ध कराये हैं। श्री जैन रत्न विद्यालय के भवन का शिलान्यास समारोह 11 मार्च 1944, चैत्र कृष्णा द्वितीया शनिवार को सम्पन्न हुआ। इससे पूर्व यह विद्यालय निजी भवन में संचालित हो रहा था। जिनवाणी के अंकों में 'बटुक' उपनाम से अनित्य, अशरण आदि भावनाओं पर विभिन्न अंकों में पूज्य गुरुदेव आचार्य हस्ती ने आध्यात्मिक प्रकाश डाला। भारतीय दर्शनों में जैन धर्म जैसे आलेख भी प्रकाशित हुए। डॉ.एम.डी सांकरिया ने देवगढ़ के जैन स्मारक आलेख लिखा। सट्टा प्रथा के विरोध में आलेख प्रकाशित हुआ। प्रसिद्ध जैन चिन्तक श्री छोटालाल हरजीवन सुशील के 'कर्म मीमांसा' विषयक गुजराती लेखों का हिन्दी अनुवाद क्रमशः विभिन्न प्रकाशित हुआ।

पूज्य श्री जयमलजी म.सा. का परिचय मई 1945 के अंक में प्रकाशित हुआ। श्री समीरमुनिजी ने मेरी भारत यात्रा के अन्तर्गत विभिन्न धर्म दर्शनों के आचार, अनुयायियों एवं परम्पराओं से अवगत कराया। आचार्य श्री खूबचन्द्रजी महाराज के स्वर्गगमन पर उपाध्याय श्री अमरचन्द्रजी म.सा. द्वारा लिखित काव्य श्रद्धाजलि प्रकाशित हुई। रत्न सम्प्रदाय की महासती श्री पानकुंवरजी म.सा. का स्वर्गगमन हो गया। वे आत्मार्थी, भद्रिक-परिणामी महासती थी, जिन्होंने 40 वर्ष का संयम जीवन तेजस्विता के साथ जीया। अगस्त 1945 का अंक पर्युषण सम्बन्धी लेखों से सम्पन्न रहा। इस अंक का सम्पादन पण्डित रतनलाल संघवी न्यायतीर्थ ने किया।

जैनागमों में मांसाहार के उल्लेख का खण्डन

श्री अगरचन्दजी नाहटा के लेखों में हुआ। फरवरी 1946 के अंक में 'प्रार्थना का महत्त्व' शीर्षक से प्रकाशित आलेख में महात्मा गाँधी लिखते हैं- "प्रार्थना ही मेरे जीवन की पूँजी है, उसके बिना मैं कभी का पागल हो गया होता। आप मेरे आत्म चरित्र में देख सकते हैं कि मुझे अपने व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन में बुरे से बुरे अनुभवों का सामना करना पड़ा है और वह भी प्रचुर मात्रा में। कुछ काल के लिए मैं निराशा के गर्त में भी डूबा रहा और यदि मैं उससे बाहर निकलने में समर्थ हुआ हूँ तो वह केवल प्रार्थना के सहारे।" मौन के सम्बन्ध में वे कहते हैं- "मौन की अवस्था में पहुँचने पर आत्मा को अपना पथ सुस्पष्ट और प्रकाशमय दिखाई देने लगता है।" जैन कन्या बोधिनी के तीन भाग प्रकाशित हुए जो कन्याओं के लिए धार्मिक अध्ययन एवं जीवन निर्माण हेतु उपयोगी थे। "सत्य धर्म की राह बताती समता सुधा शान्ति सरसाती। अन्त सार है यह सिखाती यह जीवन है नश्वर फानी, स्वागत है तेरा जिनवाणी।।" जिनवाणी के सम्बन्ध में यह अभिव्यक्ति की गई ऋषभ जैन-मैसूर के द्वारा। भरत, बाहुबली, ब्राह्मी एवं सुन्दरी से सम्बद्ध एकांकी नाटक प्रकाशित हुआ। (नवम्बर 1946)

भगवान महावीर के बाद की आचार्य परम्परा विभिन्न अंकों में प्रकाशित होती रही। 1947 का जनवरी अंक सत्य से सम्बन्धित आलेखों से सज्जित रहा,

जिसमें आचार्य श्री जवाहरलालजी महाराज, आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज, श्री हरिसागरसूरिस्वरजी महाराज, उपाध्याय श्री अमरचन्दजी महाराज, आचार्य श्री आत्मारामजी महाराज आदि के प्रवचनों एवं आलेखों का समावेश हुआ। सत्य की व्याख्या की दृष्टि से जिनवाणी का यह अंक वृहद् सामग्री समेटे हुए है। अप्रैल 1947 का अंक महावीर जयन्ती अंक के रूप में प्रकाशित हुआ, जिसमें प्रभु महावीर से सम्बद्ध उपयोगी आलेख उपलब्ध हैं। श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़ द्वारा 31 जनवरी 1948 को जिनवाणी के प्रकाशन की सम्पूर्ण व्यवस्था सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल को सौंप दी गई। जुलाई 1949 के अंक में सूचना प्रकाशित हुई कि जिनवाणी जोधपुर रेलवे स्टेशन के बुक स्टॉल एवं किताबघर सोजतीगेट पर उपलब्ध रहती है। श्री शान्तिचन्द्रजी मेहता विद्वान सम्पादक थे। उनके सम्पादन में अंग्रेजी आलेख भी प्रकाशित हुए तथा उनका वैविध्यपूर्ण लेखन भी श्रेष्ठ था। जिनवाणी की प्रगति इस प्रकार योग्य हाथों से निरन्तर होती रही। (क्रमशः) (श्री देवेन्द्रनाथ जी सुराणा, नागौर एवं श्री रत्न जैन पुस्तकालय, घोड़ों का चौक से हमें सन् 1963 से 1966 के कुछ अंक प्राप्त हो गए हैं। अतः इन अंकों के आधार पर लेखन आगामी जिनवाणी अंक में प्रकाशित किया जाएगा।-सम्पादक)

Law of Nature

विजेता लोढ़ा

प्रसिद्ध वैज्ञानिक सर आइजेक न्यूटन ने प्रकृति के तीन नियम (Law of Nature) उद्घाटित किये थे, जिनमें एक नियम है- "There is an equal and opposite reaction to every action." अर्थात् संसार में हर कर्म की बराबर व विपरीत प्रतिक्रिया होती है।

अंग्रेजी में एक कहावत है- "What goes around comes back." जो दोगे वही पाओगे अर्थात् जैसा बीज डालोगे वैसा ही फल मिलेगा। प्रकृति बाह्य हो या आन्तरिक, परिणाम तो झेलना ही होगा। जैन मतानुसार जैसा कर्म करोगे वैसा पाओगे। अच्छे कर्म करेंगे तो अच्छा ही वापस मिलेगा, पर बुरे कर्म करेंगे तो फल अच्छा प्राप्त नहीं होगा। अगर अच्छे कर्म करेंगे, अच्छे विचार रखेंगे तथा गलती हो जाने पर पापों का प्रायश्चित्त करेंगे तो निःसंदेह भव-भव में भटकना बन्द होगा और हम मोक्ष पद के अधिकारी बनेंगे। आगमवाणी के वचनों को विज्ञान सिद्ध कर रहा है। जरूरत है इस नियम को जीवन में उतारने की, इसके लिये सजग रहने की।

आगम-वाणी

(कषाय : आन्तरिक शत्रु)

सत्तू य इइ के वुत्ते, केसी गोयमब्बवी।
तओ केसिं बुवंतं तु, गोयमो इणमब्बवी।।
एगप्पा अजिए सत्तू, कसाया इंदियाणि य।
ते जिणित्तु जहानायं, विहरामि अहं मुणी।।

—उत्तराध्ययन सूत्र, 23.37-38

अर्थ— केशीश्रमण ने गौतम स्वामी से पूछा— शत्रु किन्हें कहा गया है? गौतम स्वामी ने यह प्रश्न करने वाले केशी श्रमण को उत्तर दिया— नहीं जीती गई अपनी आत्मा, कषाय एवं इन्द्रियाँ शत्रु हैं। इनको न्यायोचित उपाय से जीतकर मैं विचरण करता हूँ।

विवेचन— संसार में हम प्रायः अपनी इच्छाओं की पूर्ति में बाधक बनने वाले लोगों को अपना शत्रु समझते हैं। अपने लक्ष्य की पूर्ति में जो बाधा उत्पन्न करता है, उसे भी शत्रु मानते हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से शत्रुता को बाहर ढूँढना उचित नहीं है। अपने भीतर विद्यमान शत्रुओं पर दृष्टिपात करना आवश्यक है। भीतरी शत्रुओं को जीते बिना बाहरी शत्रुओं को जीतने का कोई महत्त्व नहीं है। उत्तराध्ययन सूत्र निर्देश करता है कि आत्मा ही अपना शत्रु होता है तथा वही अपना मित्र होता है। जब वह सन्मार्ग पर चलता है तो अपना मित्र कहलाता है तथा जब उन्मार्ग पर चलता है तो शत्रु कहलाता है। युद्ध में लाखों शत्रुओं को जीतने की अपेक्षा स्वयं को जीतना अधिक महत्त्व रखता है। वही परम जय कही गई है।

परिवार, समाज और व्यवसाय क्षेत्र में हमें अनेक शत्रु दिखाई देते हैं। उन शत्रुओं के कारण हम अपने जीवन में अशांति और उद्विग्नता का अनुभव करते हैं। किन्तु वास्तव में अपने भीतर में यदि समता का भाव हो तो बाहरी शत्रु हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। हमारी दृष्टि का मोह आत्मा को मलिन बनाये रखता है। यह मलिन आत्मा ही प्रमुख शत्रु है। केशी श्रमण के द्वारा पूछे गये प्रश्न के उत्तर में गौतम स्वामी ने दस शत्रुओं का कथन किया है। इनमें दृष्टिमोह से युक्त मलिन आत्मा प्रथम शत्रु है, फिर क्रोध, मान, माया और लोभ ये चार कषाय हमारे

आभ्यन्तर शत्रु हैं। क्रोध उत्पन्न होने पर हम क्या कर बैठते हैं, उसका हमें भान नहीं होता। क्रोध के कारण व्यक्ति अपना विनाश तो करता ही है, दूसरों को भी हानि पहुँचाता है। इस प्रकार यह शत्रु आत्मघातक एवं परघातक होने से हेय है। मान-कषाय आत्म-गुणों के विकास में सबसे बड़ा बाधक तत्त्व है। यह मनुष्य को मिथ्या अभिमान के नशे में चूर रखता है जिससे स्वयं के दोष न तो दिखाई देते हैं और न ही उन्हें दूर करने का सामर्थ्य उत्पन्न होता है। माया-कषाय मनुष्य को भुलावे एवं आत्म वंचना में बांधे रखता है।

मायावी व्यक्ति सच्चाई को जानता हुआ भी पुरुषार्थ नहीं कर पाता तथा स्वयं को झूठी तसल्ली देता रहता है। लोभ कषाय सबसे बढ़कर है। इसके चंगुल में फँसा हुआ व्यक्ति स्वाधीनता को खोकर विषय एवं वस्तुओं के आधीन हो जाता है। ये चार कषाय उत्तेजना के समय मधुर लगते हैं, किन्तु इनका परिणाम दुःखद होता है। पाँच इन्द्रियाँ भी एक अपेक्षा से शत्रु कही गई हैं। क्योंकि व्यक्ति इन इन्द्रियों के कारण ही विषयों के प्रति आकृष्ट होता है। यद्यपि विरक्त चित्त वाले साधक को इन्द्रियों के विषय विचलित नहीं कर पाते, किन्तु असजग चित्त वाले व्यक्ति इन्द्रियों के विषयों के प्रति आकर्षित होकर अपनी समता और साधना को कलुषित कर देते हैं। इन्द्रियाँ वास्तव में तो विषयों का ज्ञान कराती हैं, किन्तु मन में रही मलिनता के कारण व्यक्ति उन विषयों के अनुकूल होने पर राग तथा प्रतिकूल होने पर द्वेष करने लगता है। इसी कारण इन्द्रियाँ भी शत्रु कही गई हैं। जो इन्द्रियों को एवं मन को नियंत्रित करके संयम के मार्ग पर आगे बढ़ता है वह चार कषायों को जीतता हुआ पूर्ण रूप से आत्म-जय को प्राप्त कर लेता है। इनको जीतने के उपायों का उल्लेख आगम में यथास्थान किया गया है। इन शत्रुओं को जीतने के प्रमुख उपायों में संयम, समता तथा अप्रमत्तता का समावेश होता है। जीतने का प्रारम्भ दृष्टि मोह को तोड़ने पर ही संभव होता है। —प्रधान सम्पादक

कषाय : आत्मघातक

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

■ एक घर नहीं, एक ग्राम नहीं, एक नगर नहीं, घर-घर में क्रोध, मान, माया, लोभ और विषय-कषायों के दुष्परिणामों के दृश्य प्रतिदिन देखने को मिलते हैं। आप में से प्रायः प्रत्येक को इसका कटु अनुभव अवश्य हुआ होगा। जिस दिन आप क्रोध के अधीन रहे, उस दिन आपका चिन्तन ठीक तरह से नहीं चला, सामायिक समभाव से नहीं हुई, स्वाध्याय में मन लगा नहीं, किसी भी कार्य में ठीक तरह से चित्त लगा नहीं और बिना किसी बीमारी के बीमार हो गये। इस प्रकार क्रोध, मान, माया, लोभ में आसक्ति का कटु फल न केवल एक-दो बार ही, अपितु अनेक बार भोग चुकने के उपरान्त भी पुनःपुनः उन्हीं विषय-कषायों से प्यार करते रहे तो निश्चित रूप से यही कहा जाएगा कि हमारा ज्ञान भ्रान्त है, मिथ्या है।

■ आपने किसी पर क्रोध किया तो क्रोध करते ही आपने सर्वप्रथम अपने आत्मगुणों की हिंसा कर डाली। क्रोध करने पर क्या किसी के मन में, मस्तिष्क अथवा हृदय में शान्ति रहेगी, आत्मा का सत् स्वरूप रहेगा? नहीं, क्रोध करते ही ये सब गुण नष्ट हो जाएंगे। क्रोध करने से हो सकता है कि दूसरे की हिंसा न भी हो, पर स्वयं हिंसा तो तत्क्षण असंदिग्ध रूप से हो ही जाती है।

■ क्रोध, मान, माया, लोभ आदि में फंस कर प्राणी सर्वप्रथम स्वयं की, आत्मा की हिंसा करता है। क्रोध, मान, माया, लोभ आदि से हमारी स्वयं की हिंसा हो रही है, यह हमने सम्यग् रूप में जाना नहीं है, इसलिए बार-बार इस रास्ते पर लग रहे हैं। यदि हम यह भली-भाँति जान लें, विषय-कषायों के

आत्मघाती भयावह परिणामों को समीचीनतया समझ लें, तो फिर इस रास्ते पर कभी लगेगे ही नहीं।

■ पुलिस का आदमी 303 बोर राइफल से किसी के शरीर पर ही फायर करता है, किन्तु क्रोध, मान, माया एवं लोभ के सिपाही तो आत्मगुणों की अमूल्य निधि पर फायर कर उसे विनष्ट कर देते हैं। पुलिस के सन्तरी द्वारा किये गये फायर से किसी व्यक्ति के शरीर में किसी भाग में चोट लग सकती है। उसका हाथ छूट सकता है। पैर टूट सकता है और कदाचित् किसी भाई का इस जन्म का शरीर भी छूट सकता है। किन्तु विषय-कषायों, क्रोध, मान, माया, लोभ के संतरियों द्वारा किये गये फायरिंग से भले ही किसी का इस जन्म में हाथ, पैर अथवा गला न भी कटे, पर उसके अनेक जन्म-जन्मातरों तक के लिए, असंख्य काल और यहाँ तक कि अनन्तानन्त काल तक के लिए भी हाथ, पैर, नाक, कान, मुख कट सकते हैं अर्थात् उसका निगोद में पतन हो सकता है, तिर्यच, नारकादि गतियों में अधोगमन हो सकता है।

■ क्रोध, मान, माया, लोभ पर विजय से, संयम से, साधना से, धर्म की आराधना और धर्म के आचरण से स्व-पर के आत्मदेव की रक्षा हो सकेगी। जिन महापुरुषों ने क्रोध, मान, माया, लोभ पर विजय प्राप्त कर अपने आत्मगुणों की तथा अन्य आत्माओं की रक्षा की है, इतिहास के पृष्ठों पर स्वर्णाक्षरों में अंकित उनके जीवन-चरित्र प्रकाश-स्तम्भ के समान हमें मार्गदर्शन करते रहते हैं।

- 'नमो पुरिसवरगंधहृत्पीणं' ग्रन्थ से साभार

कषायों को घटाएँ, कर्मास्त्र को रोकेँ

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

अनन्तज्ञानी, अनन्तदर्शी, अरिहंत प्रभु महावीर ने अपनी अन्तिमवाणी उत्तराध्ययन सूत्र के 30वें अध्ययन में जीव को शिव, नर को नारायण और आत्मा को परमात्मा बनने का मार्ग बताया। परमार्थतः यह जीव अनन्तज्ञानी है, अनन्तदर्शी है, किन्तु इस पर ज्ञानावरणादि कर्मों का आवरण आया हुआ है। उत्तराध्ययन के 30 वें अध्ययन में कहा गया-

जहा महातलायस्य सण्णिरुद्धे जलागमे ।
उस्सिचणाए तवणाए, कमेणं सोसणा भवे ॥5॥
एवं तु संजयस्सावि, पावकम्मणिरासवे ।
भवकोडीसंचियं कम्मं, तवसा णिज्जरिज्जइ ॥6॥

तीर्थंकर भगवान् ने कर्म-मुक्ति हेतु संवर एवं निर्जरा ये दो कार्य बताये। उदाहरण के लिए एक तालाब पानी से भरा है। उसे खाली करना चाहें तो दो कार्य करने होंगे। पहला- संचित पानी को बाहर निकालना होगा या उसे सुखाना होगा। दूसरा- नया पानी आने का मार्ग बन्द करना होगा। इसी तरह आत्मा रूपी तालाब में कर्म रूपी पानी भरा है। इस कर्म रूपी पानी को बाहर निकालने या सुखाने के लिये आप तपस्या कर रहे हैं, लेकिन कर्म आने का रास्ता बन्द नहीं कर रहे हैं तो इससे कर्मों से मुक्ति होने वाली नहीं है।

तप कर्मों को काटने वाला, खपाने वाला है, इसके द्वारा करोड़ों भवों के संचित कर्म खपाये जा सकते हैं। जिससे जितना बनता है, तप कर रहा है। कोई ध्यान करता है तो कोई स्मरण कर रहा है, कोई आतापना लेकर तप कर रहा है। कहते हैं -सयंमी का तप सार्थक होता है। तालाब में जो पानी की सीर है, आने का स्रोत है, उसको यदि बन्द नहीं करेंगे तो तालाब खाली होने

वाला नहीं है। अतः कर्मों के आने के कारणों को भी समाप्त करना है।

कर्म-निरोध संयम से ही संभव है। जब तक संयम नहीं अपनायेंगे सिद्धि मिलने वाली नहीं है। कर्म आने का प्रमुख कारण है- 'कषाय'। ट्यूमर, कैंसर जैसे रोग शरीर की कोशिका में विकृति आने से होते हैं। कुछ रोग संक्रमण जन्य होते हैं - दमा, कुष्ठ आदि; कुछ जल जन्य रोग होते हैं- बाले निकलना आदि; कुछ प्लेग जैसे रोग महामारी के रूप में होते हैं। पूज्य आचार्य भगवन्त (पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा.) के कनार्टक प्रदेश पदार्पण के समय संवत् 1997 में यहाँ शोरापुर में महामारी थी।

संसार में एक रोग ऐसा है जो तीनों लोकों में फैला हुआ है, वह है- कषाय का रोग। इस रोग से न नारकी बचे हैं, न तीर्थंकर, न मनुष्य और न देवता। चारों गतियों के प्राणी इससे ग्रस्त हैं। यह रोग नरकगति, तीर्थंकर गति, मनुष्य गति, देव गति सभी के साथ है। आपने आज तक जितनी भी अच्छाइयाँ की, उन्हें क्रोध खा गया। यह व्यक्ति को पाताल में पहुँचा देता है। आचार्य भगवन्त पूज्य श्री फरमाया करते - सांप के पास मणि है, मणि में अनेक गुण हैं। गुण होते हुए भी सांप की मणि को कौन लेने की हिम्मत करता है? पिताजी जब प्रेम करें, तो सब पास जाते हैं, जब उन्हीं पिताजी को गुस्सा आ जाय तो.... पास जाना तो दूर कोई बात तक नहीं करता, धारा 144 लग जाती है। उनके आते ही सब अपने-अपने काम में लग जाते हैं; सब गाय बन जाते हैं। पिताजी परिवार की सार संभाल करते हैं, सुख सुविधा देते हैं, पर क्रोध के कारण उनके आते ही चुप्पी। सब अच्छी आदतें हैं, एक बुरी आदत ही पाताल में

धकेल सकती है।

जब तक जीवन में संयम नहीं आयेगा तब तक कषाय जरूर रहेगा। अन्य अच्छाइयाँ होने पर भी यदि कषाय की अधिकता है तो व्यक्ति सबका प्रियभाजन नहीं हो सकता। मैं आपको तप के मूल में ले जा रहा हूँ। सभी धर्मों ने तप के महत्त्व को स्वीकार किया है। वैष्णव, बौद्ध, मुस्लिम, सिक्ख सभी तप की आराधना यथाशक्ति करते हैं। आपको भी यदि कर्मों को काटना है तो माला, सामायिक, नवकारसी, पौरसी, एकासन, उपवास, आयम्बिल, दया में से जो कर सकते हैं, करें—पर एक बात अवश्य करें—अपने को काबू में रखें। तप में, जीवन में, व्यवहार में जब तक संयम नहीं आयेगा, तप बदनाम हो जायेगा। राम नाम का दुपट्टा ओढ़ने मात्र से कोई राम का भक्त नहीं बन सकता। जिसने राम के किसी गुण को ग्रहण किया है, वह ही रामभक्त कहला सकता है। साधक हर परिस्थिति में समता को नहीं छोड़ता।

जवानी दीवानी होती है, भान भुला देने वाली होती है। यौवनावस्था हो और धन-दौलत आ जाय तो हम चौड़े, गली संकड़ी लगती है। कनक कनक ते सौ गुनी, मादकता अधिकाय। सोना तिजोरी में रखा है, बैंक के लॉकर में हैं, पर नशा यहाँ बैठे-बैठे आ रहा है। यौवन एवं सम्पत्ति के साथ यदि प्रभुत्व, अधिकार, पद आदि मिल जाये तो.... सरपंच, एम.एल.ए., सांसद, मंत्री बन जाये तो व्यक्ति उछल-कूद करने लग जाता है। मैं आपको कर्म आने के कारण बता रहा हूँ। आने के रास्तों को बंद करना है।

अविवेकी जो होते हैं, नारद बनकर लड़ाना चाहते हैं। किन्तु ऐसी प्रवृत्ति समाज, गांव, देश की बरबादी का कारण है। आज घर में चार भाई मिलकर नहीं रह सकते, अविवेक का पसारा है। भाई! कर्म की आवक बन्द नहीं हुई तो कर्म का कीचड़ कैसे खाली होगा? अतः हर स्थिति में संयम की बात का खयाल रखना है। कितनी सुन्दर सीख दे रहा है यह भजन—

यदि भला किसी का कर न सको तो,

बुरा किसी का मत करना।

अमृत न पिलाने को घर में तो,

जहर पिलाते भी डरना ॥

यदि सत्य मधुर न बोल सको तो

झूठ कभी भी मत बोलो।

यदि मौन रखो सबसे अच्छा,

कम से कम विष तो मत घोलो ॥

बोलो तो पहले तुम तोलो,

फिर मुख ताला खोला करना ॥

यदि घर न किसी का बांध सको तो,

झोपड़िया न जला देना।

यदि मरहमपट्टी कर न सको तो,

खार नमक न लगा देना ॥

यदि दीपक बनकर जल न सको तो,

अंधकार भी मत करना ॥

यदि फूल नहीं बन सकते हो तो,

काँटे बनकर न बिखर जाना।

मानव बनकर सहला न सको तो,

दिल भी किसी का दुःखाना ना।

यदि देव नहीं बन सकते तो,

दानव बनकर भी मत मरना ॥

भजन की कड़ियों का सार है— किसी का बुरा मत करो, किसी को बुरा मत कहो, किसी का बुरा मत सोचो। यही सबसे बड़ा तप है। कई भाई कहते हैं— घर संसार में बैठे हैं, इसलिये बोलना पड़ता है। भाई! बोलना मना नहीं है, लेकिन जो भी बोलो—बोलने से पहले तोलो। सत्य बोलो, सत्य को भी मधुर शब्दों में कहो। सामने वाला आज नहीं तो कल अवश्य प्रभावित होगा। यदि कोई नादानी के कारण नासमझी के कारण बोल गया तो आप अनुभवी हैं, वृद्ध हैं, समझदार हैं, आपने गम खाना सीखा है। आप संतोष रखें, किसी को गलत साबित करने के लिये आवेश की आवश्यकता नहीं है। सामने वाले पर भूत सवार है तो उसको कहे गए

प्रियवचन भी अप्रिय साबित होंगे। अतः गम खाना ठीक है, शान्त रहना श्रेयस्कर है। तप करने वाले हर भाई-बहिन से, कर्म काटने वाले हर श्रद्धावान से कह रहा हूँ- भाई! कर्म काटने के साथ नये कर्मों को बाँधने का मार्ग भी रोकना है। निर्जरा के साथ संवर की आराधना आवश्यक है। अतः कर्म आने का रास्ता जो पाप का है, उसे बन्द करना है। हिंसा, झूठ, द्वेष जितना घटा सको उतना घटाओ। कर्मों को हलका करने के रास्ते पर चलिये। इस रास्ते से चलोगे तो कीचड़ नहीं लगेगा।

मासखमण तप करने वाले संयमी गुस्सा करने पर चण्डकौशिक बन गये। बडेरों की बात कहूँ तो तीन बातों का ध्यान रखो- कम खाओ, गम खाओ और नम जाओ। किन्तु जानते हुए भी इसका अनुसरण कितने भाई-बहिन कर रहे हैं?

क्रोध और अहंकार ही लड़ाई का कारण है, अतः समताभाव स्थानक में तो रखते ही हैं- घर व

दुकान पर भी रखें। ग्वाला महावीर के कानों में कीलें ठोक रहा है, महावीर का चिन्तन चल रहा है- मेरे कर्म के कारण ही यह सब हो रहा है- 'क्षमा वीरस्य भूषणम्।' आशा है आप भी इसी तरह अहंकार, क्रोध को तजकर मंदिर स्थानक में बैठकर, भजन-स्मरण, सामायिक-तप की आराधना कर, कषाय का शमन कर, धर्म की शोभा बढ़ाते हुए, जीवन को दीप्तिमान बनायेंगे।

'तवेसु वा उत्तमं बंधचेरं' तपों में श्रेष्ठ तप ब्रह्मचर्य बताया है। आज दो भाई सदार आजीवन शीलव्रत के खंध लेकर षट्काय जीवों में पंचेन्द्रिय जीवों को यावज्जीवन अभयदान दे रहे हैं। संघ यद्यपि छोटा है, लेकिन शेषकाल विराजने का प्रसंग मिला। हर दिन अच्छी धर्मप्रभावना रही। हमारे जाने के बाद भी धर्मारोधाना का ऐसा स्वरूप गतिमान रहे, इन्हीं भावों के साथ.....।(जिनवाणी, जनवरी 2008 से गृहीत)

भीषण गर्मी में साधु व साध्वियों का टोला

(तपती धरती पर उन पंचमहाव्रतधारी पुण्यात्माओं के विहार की विवेचना करती हुई कुछ पंक्तियाँ)

संकलित : श्री गजेन्द्रकुमार जैन

जब ऐसी भीषण गर्मी में, लोहा तक पिघल जाता है,
चार कदम भी तब कोई, इंसान ना चल पाता है,
जिनशासन की ज्योत जलाने, अंधकार के सागर में,
साधु व साध्वियों को देखो, टोला निकल जाता है।
महावीर की वाणी, जन-जन तक पहुँचाने को,
धर्मारोधाना साधना व उपासना करवाने को,
सोते हुए संघ श्रावक में, धर्म ध्वजा फहराने को,
साधु व साध्वियों को देखो,
टोला निकल जाता है।

प्रभु अरिहंत की संसार में, जाहोजलाली बढ़ाने को,
श्री संघ में समरसता व एकजुटता लाने को,
साधु व साध्वियों को देखो, टोला निकल जाता है।
पार करते हैं निरन्तर, उबड़-खाबड़ रास्तों को,
नंगे पैर आगे बढ़ जाते, ना देखे अपने छालों को,

कंकर-पत्थर की चुभन और,
सिर पर सूरज चढ़ जाता है,
साधु व साध्वियों को देखो, टोला निकल जाता है।
इतने-इतने कष्ट उठाते,
वो उप्फ तक नहीं करते हैं,
त्याग-तपस्या आत्मशुद्धि, अपने हृदय में धरते हैं,
ऐसी चारित्र आत्माओं से,
सिर अपना ऊँचा हो जाता है,
साधु व साध्वियों को देखो,
टोला निकल जाता है।

जिनशासन को दीपायमान करती

ऐसी चारित्र आत्माओं के चरणों में शत-शत नमन।

-आध्यात्मिक शिक्षा समिति, ए-9, महावीर उद्यान
पथ, बजाज नगर, जयपुर-302015 (राज.)

कषायों के शमन से होती शान्ति-समाधि

महान् अध्यक्षवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.

आधि, व्याधि और उपाधि से संत्रस्त बना हुआ जीव अनादि काल से समाधि की गवेषणा में इतस्ततः परिभ्रमण कर रहा है। जीव मात्र का लक्ष्य सुख की आकांक्षा है, समाधि है, शांति की अभिलाषा है। वह नगर-नगर और डगर-डगर में घूम रहा है। कभी किसी को अवसर लग जाय तो वह जंगलों में जाकर राख रमा लेता है और चाहता है मुझे शांति मिले, समाधि मिले। वह मंत्रवेत्ता और तंत्र विज्ञाता के पास पहुँचता है, कहता है- मुझे दुःख से मुक्ति का रास्ता बताओ।

आप संतों के पास आते हैं। संतों के पास आकर वंदन-नमस्कार करते हैं और कहते हैं- “भगवन्! कोई रास्ता बताओ, जिससे मेरे दुःख-दावानल समाप्त हो जायें। ऐसी चाहना आपकी ही है, यह बात भी नहीं है। सुख पाने की चाहना सभी की है। दुःख समस्या है। समस्या है तो उसका समाधान भी है। जहाँ झगड़ा होता है वहाँ समाधान भी होता है। आप धन का अर्जन क्यों करते हैं? मकान क्यों बनवाते हैं? कपड़ें क्यों पहनते हैं? धन का अर्जन इसलिए करते हैं कि पैसा है तो पूछ है, आपके मन में यह बात जम गई है। पैसा है तो सब कुछ है। मारवाड़ में कहावत है- ‘कने व्हे रोकड़ा तो परणीजे डोकरा, नहीं तो कुंवारा रह जावे छोकरा।’ बच्चा पैसा कमा कर देता है तो आप उसे सपूत कहते हैं। पैसा पास में है तो घर पर ही नहीं, ससुराल में भी पूछ होती है।

आपने तन-धन-परिजन की सुरक्षा के लिए बंगला बनवाया। तन की रक्षा के लिए वस्त्र बनवाए। आत्म-साधना करने वाला साधक तीन

कारणों से वस्त्र धारण करता है। लज्जा के निवारण के लिए, सर्दी-गर्मी को सहन करने के लिए और शासन की हीलना नहीं हो इसलिए वस्त्र धारण किए जाते हैं। आप किस कारण वस्त्र धारण करते हैं? लज्जा निवारण का लक्ष्य होगा तो सादे वस्त्र पहने जायेंगे। वस्त्र शरीर को ढकने के लिए हैं, किन्तु आज शरीर दिखाने के लिए वस्त्र पहने जा रहे हैं। जैसे वस्त्र धारण करने के तीन कारण हैं ऐसे ही मकान के तीन कारण हैं।

आज से नहीं, अनादि काल से सबकी एक चाहना रही हुई है कि मुझे समाधि प्राप्त हो। सुख, शांति और समाधि की चाहना सबकी है। जीव अनादि काल से दुःख का अनुभव कर रहा है। शास्त्रकार कह रहे हैं- चारों गतियों में दुःख है। नरक में दुःख है, तिर्यच में दुःख है। देवलोक में भी दुःख बताया जा रहा है तो मानव जीवन में भी दुःख है। दुनिया में दुःख ही दुःख है। आपको दुःख छोड़ना है या नहीं?

प्रज्ञा पुरुष भगवान् महावीर का कथन है जो भी मुक्ति चाहता है वह कषायों का वमन करे। जब तक कषाय हैं दुःख से किसी को मुक्ति हुई नहीं और होने वाली भी नहीं। कषाय समाप्त हो जायेगी या मन्द पड़ जायेगी तो समाधि की ओर गति अपने आप हो जाएगी। आप कषायों को बढ़ाते जा रहे हैं, इसीलिए न शांति मिल रही है, न समाधि प्राप्त हो रही है। कषायों का वमन नहीं हो रहा है इसलिए सुख की चाहना करते हुए भी सुख प्राप्त नहीं हो रहा है।

एक भाई धर्म-स्थान में आता है, जिनवाणी

सुनता है और यहाँ पर पाँच सामायिक करता है लेकिन घर जाने पर बाईजी पर ऐसा क्रोध करे कि वह खुद तो लाल-पीला होता ही है घर के सदस्यों को भी अशान्त कर देता है। मैं कह गया कषायों को जीतने पर ही शांति प्राप्त होने वाली है।

क्षमा आयेगी तो क्रोध चला जायेगा। हम

जितनी-जितनी मात्रा में कषायों को मन्द करेंगे उतनी-उतनी मात्रा में शांति प्राप्त करते हुए संसार का अन्त कर सकेंगे। आप सुखी होना चाहते हैं तो कषायों का वमन करें, समता का सर्जन करें।

(जिनवाणी से संकलित)

जिनवाणी पर अभिमत

श्री पी. रमेशचन्द्र जाँगड़ा

जिनवाणी अपनी हीरक यात्रा का प्रारम्भ 2017 से नई आकर्षक साज-सज्जा व नूतन आवरण से कर रही है। जनवरी का प्रथम अंक मोह-द्वेष, वैर-विरोध, पुद्गलासक्ति पर आत्म-पुरुषार्थ द्वारा विजय प्राप्त कर पतित से पावन बनने के, मृत्यु को महोत्सव बनाने के विज्ञान (संलेखना-संधारा) को समर्पित रहा।

द्वितीय अंक “जैन धर्म और विज्ञान” जो बताता है कि हम सत्री पंचेन्द्रिय मानव (84 लाख योनियों में सर्वोत्कृष्ट पद, ज्ञान-शक्ति सत्ता से परिपूर्ण) बने हैं तो एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक की रक्षा व सहयोग करने के लिए, उन्हें साता देने के लिए, उनकी यतना करने के लिए न कि उनका शोषण करने, पीड़ित करने या विराधना करने के लिए। निर्बल सबल से अपनी सुरक्षा की आशा नहीं करेगा तो किससे करेगा? छहकाय जीवों की सुरक्षा अगर हम करते अर्थात् प्रभु वचनों की पालना करते तो आज विश्व पर ग्लोबल वार्मिंग का संकट उत्पन्न ही नहीं होता, समय-काल-दूरी-गणित के आगमिक ज्ञान को वर्तमान विज्ञान के साथ तुलनात्मक अध्ययन करके बताया गया कि किस तरह हम अपनी ऊर्जा का सदुपयोग करके 63 कर्म प्रकृतियों का क्षय करके भव-भ्रमण से मुक्त बनकर अरिहंत अवस्था को प्राप्त करें।

तृतीय अंक (मार्च) ‘जैन जीवन शैली’ - ‘जो

मिला है वह मेरा नहीं’, मुझे उसका सदुपयोग करना है। यह जिनवाणी के स्वरूप को अभिव्यक्त करता है और मानव मात्र को जीवन को आदर्श बनाने की प्रेरणा देता है। सामाजिक विकृतियाँ, जैनों का आहार कितना वैज्ञानिक है, यह विकारमुक्त, स्वस्थ, दीर्घायु जीवन जीने की रामबाण औषधि है, इसके विभिन्न रहस्यों को उद्घाटित करता है, कैसे हम अहिंसक व ब्रह्मचर्य का पालन करके जीवन को सुंदर बना सकते हैं, इसका वैज्ञानिक स्वरूप बताता है।

चतुर्थ अंक (अप्रैल) जैन जीवन-शैली (2) में- “दूसरों को दुःख देने से दुःख एवं सुख देने से सुख मिलता है।” हम ऐसा आध्यात्मिक साधनायुक्त जीवन जिएं, जिसमें तप एवं सेवा द्वारा कर्म-निर्जरा हो। अहिंसक जीवन शैली से ही हम पर्यावरण-संरक्षण कर सकते हैं, परमात्म पद पाने के लिये किस तरह स्वदोष सुधार की आत्म प्रेरित प्रक्रिया प्रतिक्रमण करें ताकि उन्मादी, आतंकवादी विकृत मनोवृत्तियों को सुधारकर आत्मा को परमात्मा बना सकें।

प्रबुद्ध विद्वानों के कई लेख तो न मात्र मननीय, पठनीय एवं चिंतनीय हैं, बल्कि वे स्वाध्यायियों के लिए तो संग्रहणीय भी हैं। यह वीतराग वाणी प्रकाशित करने वाली ‘जिनवाणी’ स्वर्णिम अतीत की तरह ही भविष्य में भी ज्ञान रश्मियों के द्वारा हमें आलोकित करे, यही मंगल भावना है।

-88, अन्नामल्लई स्ट्रीट, फर्स्ट फ्लोर, साहुकारपेट,
चेन्नई-600079 (तमिलनाडु)

योग और कषाय : एक चिन्तन

उपाध्याय श्री रमेशमुनिजी शास्त्री

यह ध्रुव सत्य है कि कर्म स्वयं किसी को सुख-दुःख नहीं देता है और वह स्वयं भी किसी भी जीव से स्वतः संश्लिष्ट नहीं होता है। परन्तु आत्मा अपने विशुद्ध स्वभाव को भूल कर जब किसी वस्तु, भाव अथवा व्यक्ति को लेकर मन, वचन और काया से प्रवृत्ति करता है, क्रिया करता है, तब कर्म-वर्गणा के पुद्गल का आगमन होता है, आकर्षण होता है। परन्तु केवल कार्मिक पुद्गलों के आगमन मात्र से वह आत्मा के साथ आबद्ध नहीं होता है। वह केवल आता है, इसके अनन्तर आत्मा के साथ प्रदेश रूप से प्रथम समय में प्रदेश बंध से बंधकर, द्वितीय-तृतीय समय में आत्मा से अलग हो जाता है, झड़ जाता है। परन्तु कर्म के आगमन के साथ काषयिक-भावनाओं की स्निग्धता के कारण कर्मबन्ध होता है।

इस सन्दर्भ में यह ज्ञातव्य है कि कर्म बन्ध के अंगरूप अथवा अंशरूप जो चतुर्विध अवस्थाएँ अथवा व्यवस्थाएँ हैं, वे इस रूप में निष्पन्न होती हैं।

1. प्रकृति बन्ध- प्रत्येक कर्म का अपना स्वभाव।
2. स्थिति बन्ध- कर्म की आत्मा के साथ रहने की काल मर्यादा।
3. अनुभाग बन्ध- कर्म का शुभाशुभ रस।
4. प्रदेश बन्ध- कर्म के दलिकों का समूह।

इन चतुर्विध अंगों के मिलने पर ही बन्ध की समग्रता, सुदृढ़ता और सुस्थायिता होती है। अतएव प्रकृति बन्ध, स्थिति बन्ध प्रभृति बन्धांगों के लिये योग एवं कषाय- इन दोनों का सद्भाव अनिवार्य है। योग और कषाय ये दोनों ही उन बन्ध अंगों के पृथक्-पृथक् कारण हैं। इसलिये यह पूर्णतः प्रगट है कि प्रकृति बन्ध

और प्रदेश बन्ध इन दोनों का निर्माण योग से होता है, जबकि स्थिति-बन्ध और अनुभाग-बन्ध इन दोनों का निर्माण कषाय से होता है।¹ इस प्रकार एक ही कर्म के बन्ध में उत्पन्न होने वाले पूर्वोक्त चतुर्विध बन्ध रूप अंगों के प्रमुख कारणों का विश्लेषण करने की अपेक्षा से और संक्षेप दृष्टि से योग तथा कषाय इन दो बन्ध हेतुओं का प्रतिपादन किया गया है। वास्तव में कर्म-बन्ध के इन चतुर्विध अंगों के निर्माण प्रक्रिया में योग एवं कषाय ये दो ही आधार रूप हैं।

यह पूर्णतः प्रगट है कि जीव की ओर कर्म-परमाणुओं को आकृष्ट करने का जो कार्य है, वह योग के माध्यम से होता है। मानसिक, वाचिक एवं कायिक प्रवृत्ति का नाम 'योग' है। जीव की प्रत्येक क्रिया अथवा प्रवृत्ति के साथ योग के द्वारा कर्म परमाणु आत्मा की ओर आकृष्ट होते हैं। उसके पश्चात् आत्मा के राग, द्वेष, मोह आदि वैभाविक भावों का निमित्त पाकर आत्मा से बन्ध जाते हैं। इस प्रकार हम स्पष्टतः देखते हैं कि कर्म परमाणुओं का आत्मा तक जाने का कार्य योग द्वारा होता है अर्थात् जीव की कायिक, वाचिक और मानसिक क्रिया अथवा प्रवृत्ति को योग की संज्ञा दी गई है तथा उसके साथ बन्ध कराने का कार्य कषाय अर्थात् आत्मा के रागात्मक एवं द्वेषात्मक भाव करते हैं। तात्पर्य यह है कि आत्मा की योग शक्ति और कषाय भाव ये दोनों मिलकर प्रकृति बन्ध प्रभृति चतुर्विध बन्धांगों के प्रमुख कारण हैं। इसीलिये उल्लेख मिलता है कि योग के निमित्त से, कषाय युक्त आत्मा का कर्म वर्गणा के पुद्गलों के साथ विशेष प्रकार का संश्लेष होना, चिपक जाना 'कर्मबन्ध'³ है। इसी कारण, कारण में कार्य का उपचार करते हुए बन्ध के दो प्रकार प्रतिपादित हुए हैं।

प्रथम योगबन्ध है और द्वितीय कषाय बन्ध है। तथ्य यह है कि योग के द्वारा कर्मों का आकर्षण एवं कषाय के द्वारा बन्ध होता है। संक्षेप दृष्टि से बन्ध के ये दो ही मूलभूत कारण हैं।

यह तथ्य सत्यपूर्ण है कि सांसारिक आत्माओं के साथ प्रवाह रूप से अनादिकाल से कर्म लगा हुआ है, क्योंकि जब तक वह राग-द्वेष अथवा कषाय से उन्मुक्त नहीं हो जाता तब तक आत्मा के साथ कर्मबन्ध की परम्परा प्रारम्भ रहेगी, गतिमान रहेगी। इसी तथ्य के सम्बन्ध में कहा गया है कि कषाय युक्त जीव योग के द्वारा कर्म योग्य जिन-जिन पुद्गल द्रव्यों को ग्रहण करता है। उनका आत्म-प्रदेशों से चिपकना, संश्लिष्ट हो जाना 'बन्ध' समझना चाहिये। संक्षेप में कहा जाय तो कषाय ही कर्मबन्ध का मूलभूत हेतु है। तात्पर्य यह है कि संसारी जीव की प्रत्येक प्रवृत्ति अर्थात् क्रिया के पीछे राग-द्वेष अथवा प्रेरणादायक कषाय होता है। उससे कार्मिक वर्गणा के पुद्गल स्वतः खिंचे चले जाते हैं। उन कार्मिक-पुद्गलों को आत्मा के साथ आबद्ध करने वाला, एकमात्र 'कषाय' होता है। निष्कर्ष यही है कि त्रिविध योग से कर्मों का आकर्षण होता है, आगमन होता है और कषाय उन कर्मपुद्गलों को आत्मा के साथ बांध देता है। कषाययुक्त सांसारिक जीव के योग द्वारा ग्रहण और आश्लेष 'बन्ध' कहलाता है। जागतिक जीव की प्रत्येक प्रवृत्ति कषायात्मक होने से कर्म-बन्ध कारक अवश्य रूप से होती है।

यह कथन यथार्थ है कि कर्मबन्ध में योग और कषाय इन दोनों का हाथ रहा है। प्रत्येक वैभाविक प्रवृत्ति चाहे वह मानसिक हो, वाचिक हो अथवा कायिक कर्मबन्ध का मूल द्वार है। संसार-अवस्था में अवस्थित जीव की कोई भी प्रवृत्ति ऐसी नहीं है, जो बन्धन के द्वार नहीं खोलती हो। बन्धन के द्वार पर दस्तक देने वाली त्रिविध प्रवृत्ति को 'योग' कहा जाता है। त्रिविध योग के द्वारा 'कर्म' आकर्षित होते हैं। आते हैं

और उसके अनन्तर कषाय भाव की स्निग्धता के कारण वे कर्म-पुद्गल आत्मा से चिपक जाते हैं। एक भावपूर्ण रूपक के माध्यम से कर्मबन्ध की प्रक्रिया में योग कषाय का स्वरूप सुस्पष्ट हो जाता है। जिस प्रकार दीपक अपनी उष्मा से वर्तिका के द्वारा तेल को आकर्षित कर उसे अपने देह अर्थात् लौ के रूप में परिणत कर देता है, वैसे ही यह आत्मरूपी दीपक अपने राग-द्वेष भाव अथवा कषाय भाव रूपी उष्मा अर्थात् प्रज्वलित अग्नि के कारण क्रियाओं अर्थात् प्रवृत्ति रूप वर्तिका के द्वारा कर्म-परमाणु रूपी तेल को आकर्षित कर उसे अपने कर्म शरीर रूपी लौ में बदल देता है, परिवर्तित कर देता है। यही महत्त्वपूर्ण तथ्य हम प्रवृत्ति एवं कषाय के विषय में स्पष्टतः कह सकते हैं। जानना-देखना तथा आत्मा के ज्ञान दर्शन अव्याबाध और शक्ति रूप गुणों तथा आत्म भावों में रमण करना स्वाभाविक प्रवृत्ति है, ये निरवद्य योग हैं। परन्तु जहाँ प्रवृत्ति स्वाभाविक नहीं है, वैभाविक है, काया, वचन और मन से प्रेरित होकर होने वाली क्रिया है, वहाँ वह कर्मबन्धकारिणी अवश्य होगी। क्योंकि उस प्रवृत्ति के साथ पहले से ही कुछ बाहर से आता है। वह विजातीय भाव अर्थात् विभाव होता है। उसके आने पर निश्चित ही कर्मबन्ध होता है। अतएव यह सिद्ध है कि सांसारिक प्राणी की प्रवृत्ति चाहे शरीर की हो, मन की हो अथवा वचन की हो उससे बन्धन अवश्यमेव होगा। प्रवृत्ति कहें, चाहें योग कहें, वह बाहर से कुछ कार्मिक-पुद्गलों को खींच कर अवश्य लाता है और वे पुद्गल आकार जीव के साथ जुड़ जाते हैं। प्रवृत्ति अथवा योग का कार्य इतना ही है। उसके अनन्तर अन्तरंग में चेतना की परिणति रूपी भित्ति पर कषाय की स्निग्धता है। ऐसी स्थिति में वह बहिर्जगत् से आने वाले कर्म योग्य पुद्गलों को पकड़ लेगी। चेतना की परिणति रूपी वह भित्ति अर्थात् दीवार से बाहर से आये हुए पुद्गलों को बान्ध देती है, चिपका कर रखती है। निष्कर्ष यह है कि प्रवृत्ति का एकमात्र कार्य है- बाहर से कुछ लाना, आकर्षित करना तथा कषाय का कार्य

है- उसे संश्लिष्ट करके रखना। इसलिये योग एवं कषाय ये दोनों कर्म बन्ध होने में कारण है।

इसी सन्दर्भ में विचार कीजिये। एक सूखी दीवार है, उस पर जल अथवा तेल की स्निग्धता नहीं है, उस पर फैंकी हुई अथवा उड़कर आती हुई धूल संश्लिष्ट नहीं होगी, चिपकेगी नहीं। वह उससे टकरा कर थोड़ी ही देर में झड़ जाएगी अथवा बिखर जाएगी। परन्तु यदि धूल गीली है, तब उस दीवार पर अल्पकाल तक टिकेगी, तदनन्तर वह स्वयं ही गिर जाएगी। यदि वह दीवार तेल आदि से स्निग्ध है, चिकनी है, तब वह धूल को पकड़ लेगी, चिपका देगी। इसी प्रकार चेतना की दीवार सूखी है। उस पर कषाय की स्निग्धता नहीं है तो कर्म रज आकर संस्पर्श करेगी और तत्काल ही वह कर्म पुद्गल रूपी रज झड़ जाएगी। क्योंकि उसके टिकने का कोई कारण शेष नहीं है। यदि कषाय रूपी स्निग्धता अर्थात् चिकनाहट चेतना की दीवार पर होगी तो वहाँ कर्मरज अवश्यमेव चिपकेगी, संश्लिष्ट होगी, वह चिपका कर रखेगी। यही कर्मबन्ध का रहस्य है।

योग और कषाय को प्रधानता देते हुए कहा गया है कि जिस प्रकार किसी पात्र में अनेक प्रकार के रस वाले अनेक प्रकार के बीज, फल, फूल, प्रभृति मदिरा के रूप में परिणमित हो जाते हैं। उसी प्रकार आत्मा में स्थित पुद्गलों का योग और कषाय के कारण कर्म रूप परिणमन होता है, यही 'बन्ध' कहलाता है। वास्तव में प्रवृत्ति के साथ जो पुद्गल खिंचा हुआ आता है और चिपकता है। वह द्रव्य कर्म बन्ध है तथा राग-द्वेष आदि अथवा कषाय का परिणाम अर्थात् अध्यवसाय भाव कर्म बन्ध है। द्रव्य बन्ध वास्तव में बन्ध नहीं है। यदि भाव बन्ध न हो तो द्रव्य बन्ध कुछ नहीं कर सकता। दूसरे शब्दों में यदि कषाय अथवा राग-द्वेष रूप परिणाम न हों तो योग द्वारा लाए हुए कार्मिक- पुद्गल आत्म-प्रदेशों को परिस्पर्श करेंगे, किन्तु ठहरेंगे नहीं, चले जाएंगे, स्वतः झड़ जायेंगे। अतएव योग का काम कर्म-परमाणुओं को आत्मा तक लाने का है और आत्मा के

साथ परिबन्ध कराने का काम कषाय अथवा राग-द्वेष का है। योग और कषाय ये दोनों मिलकर ही आत्म-प्रदेशों के साथ कर्म को बांधते हैं। अकेला योग नहीं। जिनके राग-द्वेष अथवा कषाय विनष्ट हो गए हैं वे योगों द्वारा प्रवृत्ति करते हैं। कार्मिक पुद्गल भी आते हैं। किन्तु वे कर्म पुद्गल रुकते नहीं हैं और बन्धते नहीं हैं। वे आते हैं और एक दो समय रहकर चले जाते हैं। क्योंकि उनके स्थिति रूप से टिकने और अनुभाग रूप से बन्धने का कोई भी कारण अवशेष नहीं रहता है। कर्मों के आने-जाने का यह क्रम तब तक चलता रहता है। जब तक आत्मा अष्टविध कर्म-पुद्गल से मुक्त नहीं हो जाता है।

सारपूर्ण भाषा में यही कहा जा सकता है कि योग की चपलता के द्वारा कर्मों का आकर्षण होता है जबकि कषाय के द्वारा उन्हें बान्ध कर रखा जाता है। यथार्थ अर्थ में कर्म-बन्ध में योग और कषाय इन दोनों की प्रधानता संनिहित है।

संदर्भ:-

1. (क) समवायांग सूत्र, समवाय-4, सूत्र 20
(ख) कर्म ग्रन्थ, पंचम भाग, गाथा 21
(ग) तत्त्वार्थ सूत्र, अध्याय 8, सूत्र 4
2. (क) सर्वार्थसिद्धि, 8.3.379 पर उद्धृत
(ख) राजवार्तिक, 8.3.9.10.567.16-18
(ग) बृहद्नयचक्र, गाथा 155
(घ) द्रव्य संग्रह मूल, गाथा 33
(ङ) पंच संग्रह (संस्कृत) अधिकार 4, श्लोक 965
3. षड्दर्शन समुच्चय वृत्ति, 47
4. समवायांग सूत्र, समवाय 2
5. मूलाचार, 12.183
6. तत्त्वार्थ सूत्र, अध्याय 8, सूत्र 2
7. (क) तत्त्वार्थ वार्तिक, 8.2.9
(ख) धवला, पुस्तक 13.5-5, सूत्र 82

जैनागमों में कषाय : स्वरूप एवं समीक्षा

प्रो. सागरमल जैन

जैन साधना कषायों के विजय की साधना है। आचार्य हरिभद्र ने तो बहुत ही स्पष्ट शब्दों में कहा था कि 'कषायों से मुक्ति ही वास्तविक अर्थ में मुक्ति है (कषायमुक्तिः किल मुक्तिरेव)। कषाय जैन दर्शन का पारिभाषिक शब्द है। यद्यपि बौद्ध परम्परा में 'धम्मपद' (223) में और हिन्दू परम्परा में छान्दोग्य-उपनिषद् (7.26.2) तथा महाभारत में शान्तिपर्व (244.3) में कषाय शब्द का प्रयोग अशुभ चित्तवृत्तियों के अर्थ में हुआ है; फिर भी इन दोनों परम्परा में कषाय शब्द का प्रयोग विरल ही देखा जाता है। जबकि जैन परम्परा में इस शब्द का प्रयोग प्रचुरता से देखा जाता है। जैन आचार्यों द्वारा इसकी व्युत्पत्तिपरक परिभाषाएं अनेक दृष्टिकोणों से की गई हैं। सामान्यतया वे मनोवृत्तियां या मानसिक आवेग जो हमारी आत्मा को कलुषित करते हैं, हमारे आत्मीय सदुणों को कृश करते हैं, जिसे आत्मा बन्धन में आती है और उसके संसार परिभ्रमण अर्थात् जन्म-मरण में वृद्धि होती है, उन्हें कषाय कहते हैं। दशवैकालिकसूत्र में कहा गया है कि "अनिग्रहित क्रोध और मान तथा वृद्धिगत माया तथा लोभ-ये चारों कषायें पुनर्जन्म रूपी वृक्ष का सिंचन करती हैं, दुःख के कारण हैं, अतः समाधि का साधक उन्हें त्याग दें"। उत्तराध्ययनसूत्र में राग और द्वेष को कर्म का बीज कहा गया है। राग-द्वेष का कारण ही कषायों का जन्म होता है। स्थानांगसूत्र में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि पाप कर्म की उत्पत्ति के दो स्थान हैं-राग और द्वेष। राग से लोभ का और लोभ से कपट अर्थात् माया का जन्म होता है। दूसरी ओर द्वेष से क्रोध का और क्रोध से अहंकार का जन्म होता है। इस प्रकार कषायों की उत्पत्ति के मूल में राग-द्वेष की वृत्ति ही काम करती है। यह भी सुनिश्चित है कि

राग-द्वेष के मूल में भी राग ही प्रमुख तत्त्व है। राग की उपस्थिति में ही द्वेष का जन्म होता है। अतः संक्षेप में कहें तो सम्पूर्ण कषायों के मूल में राग या आसक्ति का तत्त्व ही प्रमुख है। वही कषायों का पिता है। राग-द्वेष से क्रोध, मान, माया और लोभ-इन चार कषायों का क्या सम्बन्ध है। इसकी विस्तृत चर्चा विशेषावश्यकभाष्य में विभिन्न नयों या अपेक्षाओं के आधार पर की गई है। संग्रह नय की अपेक्षा से क्रोध और मान द्वेष रूप हैं, जबकि माया और लोभ राग रूप हैं। क्योंकि प्रथम दो में दूसरे की अहित भावना है और अन्तिम दो में अपनी स्वार्थ-साधना का लक्ष्य है। व्यवहारनय की दृष्टि से क्रोध, मान और माया-तीनों द्वेष रूप हैं, क्योंकि माया भी दूसरे के विघात का विचार ही है। केवल लोभ अकेला रागात्मक है, क्योंकि उसमें ममत्वभाव है। किन्तु ऋजुसूत्रनय की दृष्टि से केवल क्रोध ही द्वेषरूप है, शेष कषाय-त्रिक को न तो एकान्त रूप से राग-प्रेरित कहा जा सकता है, न द्वेष प्रेरित। राग-प्रेरित होने पर वे राग रूप हैं और द्वेष प्रेरित होने पर द्वेष रूप होती हैं।¹ फिर भी यह तो सत्य ही है कि ये चारों कषाय मूलतः व्यक्ति की राग-द्वेषात्मक वृत्तियों की ही बाह्य अभिव्यक्तियां हैं। वस्तुतः व्यक्ति में निहित वासना के तत्त्व अपनी विधेयात्मक अवस्था में राग और निषेधात्मक अवस्था में द्वेष बन जाती हैं और ये राग-द्वेष के तत्त्व ही अपनी आवेगात्मक अभिव्यक्ति में क्रोध, मान, माया और लोभ अर्थात् कषाय बन जाते हैं। इस प्रकार कषाय राग-द्वेष की बाह्य अभिव्यक्ति है और राग-द्वेष कषायों के अन्तरंग बीज हैं। राग-द्वेष के अभाव में कषायों की सत्ता नहीं है। कषायें राग-द्वेष रूपी युगल से ही जन्म लेती हैं, उन्हीं से सम्पोषित होती हैं और इनके मरने पर मर जाती हैं।

कषाय और मिथ्यात्व— कषायों की उपर्युक्त चर्चा के प्रसंग में हमने यह देखा कि कषायों का जन्म राग-द्वेष की वृत्तियों से होता है। पुनः यदि हम यह विचार करें कि कषायों को जन्म देने वाली ये राग-द्वेष की वृत्तियाँ किसके आधार पर जन्म लेती हैं और सम्पोषित होती हैं, तो इस सम्बन्ध में उत्तराध्ययनसूत्र का स्पष्ट निर्देश है कि राग-द्वेष और कषायों का मूलभूत कारण मोह है। इसे अज्ञान या अविवेक दशा भी कहा जा सकता है। किन्तु इससे आगे बढ़कर जब यह पूछा जाए कि यह मोह, अज्ञान या अविवेक क्यों उत्पन्न होता है या किसके द्वारा उत्पन्न होता है, तो हमें कहना पड़ता है कि इसका मूल कारण मिथ्यात्व ही है।

वस्तुतः जैन दर्शन में यह एक प्रमुख दार्शनिक समस्या है कि यदि कषायों का कारण मोह या मिथ्यात्व है, तो मोह या मिथ्यात्व का कारण क्या है? सम्प्रति इन प्रश्नों को लेकर जैन चिन्तकों में एक विवाद छिड़ा हुआ है, मिथ्यात्व और कषाय में कौन प्रमुख है और कौन गौण है? यह प्रश्न आज निश्चयनय पर अधिक बल देने वाले कानजी स्वामी के समर्थक पंडितों एवं व्यवहारनय की उपेक्षा नहीं करने वाले पूज्य आचार्य विद्यासागरजी के समर्थकों के बीच विवाद का विषय बना हुआ है। एक ओर पू. कानजी स्वामी के समर्थक विद्वानों का कहना है कि बन्धन का मूलभूत कारण मिथ्यात्व है और कषाय अकिंचित्कर है, क्योंकि कषायों का जन्म भी मिथ्यात्व से होता है। दूसरी ओर आचार्य विद्यासागरजी के समर्थक विद्वानों का कहना है कि कषाय ही बन्धन का प्रमुख कारण है, मिथ्यात्व अकिंचित्कर है। क्योंकि मिथ्यात्व का जन्म और सत्ता दोनों ही अनन्तानुबन्धी कषायों की उपस्थिति में ही संभव है। अनन्तानुबन्धी कषायों के अभाव में मिथ्यात्व की सत्ता नहीं है। इस प्रकार हम देखते हैं कि दोनों ही पक्ष अपने-अपने आग्रहों पर खड़े हुए हैं। वस्तुतः मिथ्यात्व और कषाय ये दोनों ही परस्पर आश्रित हैं और यह भी सत्य है कि तीव्रतम कषायों की उपस्थिति में ही मिथ्यात्व की सत्ता

सम्भव होती है। वस्तुतः मिथ्यात्व और कषाय दोनों ही परोपजीवी हैं, मिथ्यात्व के अभाव में कषाय नहीं होती है और कषाय के अभाव में मिथ्यात्व भी नहीं होता है। वस्तुतः चिन्तन की अपेक्षा से ही कषाय और मिथ्यात्व को अलग-अलग किया जा सकता है। सत्ता में तो वे एक-दूसरे के अनुस्यूत होकर ही रहते हैं। व्यक्ति में कषायों के आवेग तभी उत्पन्न होते हैं, जब वह मोहग्रस्त या अज्ञान से घिरा होता है, किन्तु जैसे ही वह अज्ञान या मिथ्यात्व का घेरा तोड़ता है, उसके कषाय समाप्त हो जाते हैं। वस्तुतः मिथ्यात्व के बिना कषाय-भाव नहीं होते हैं और कषाय के बिना मिथ्यात्व भी नहीं होता है। एक ही सत्ता पर दूसरे की सत्ता आधारित है, इनमें से कोई भी न तो अकिंचित्कर है और न दूसरे से निरपेक्ष ही। उत्तराध्ययनसूत्र में इसी समस्या का समाधान किंचित् भिन्न शब्दों में किया गया है। जिस प्रकार अण्डा और मुर्गी में कौन प्रथम, इस समस्या का समाधान नहीं किया जा सकता, उसी प्रकार मिथ्यात्व और कषाय में भी कौन प्रथम या महत्त्वपूर्ण है और कौन गौण या कम महत्त्वपूर्ण है, इसका निर्णय नहीं किया जा सकता है। जिस प्रकार अण्डे के बिना मुर्गी और मुर्गी के बिना अण्डा सम्भव नहीं हैं, उसी प्रकार मिथ्यात्व के बिना कषाय और कषाय के बिना मिथ्यात्व सम्भव नहीं है। इनमें से किसी की भी पूर्व कोटि निर्धारित नहीं की जा सकती है, क्योंकि दोनों परोपजीवी या परस्पराश्रित हैं।

कषाय और कर्म—बन्ध

जैन दर्शन निरीश्वरवादी दर्शन है, अतः उसमें कर्म-सिद्धान्त को ही सर्वोपरिता दी गई है। व्यक्ति का संसार में परिभ्रमण ईश्वर के अधीन न होकर कर्मव्यवस्था के अधीन माना गया है, फलतः जैन दार्शनिकों ने कर्म के बन्धन और विपाक की तलस्पर्शी गंभीर विवेचना की है। इसी क्रम में कर्म-बन्ध क्यों और कैसे होता है? इसकी चर्चा करते हुए उन्होंने कर्म-बन्ध के निम्न पांच कारणों का उल्लेख किया है:—(1) मिथ्यात्व, (2) अविरति (असंयम), (3) प्रमाद, (4) कषाय और (5) योग।

ज्ञातव्य है कि यहां 'योग' से तात्पर्य मन, वचन एवं शरीर की गतिविधियां हैं। यदि इन पांच कारणों का विश्लेषण करें तो हम यह पाते हैं कि मिथ्यात्व, अविरति और प्रमाद मूलतः कषाय के कारण ही होते हैं। कषायों की अनन्तानुबन्धी चौकड़ी मिथ्यात्व का कारण है क्योंकि कषायों की इस अनन्तानुबन्धी चौकड़ी की उपस्थिति में ही मिथ्यात्व सम्भव होता है। जैसे ही कषायों की यह अनन्तानुबन्धी चौकड़ी समाप्त होती है, मिथ्यात्व भी समाप्त हो जाता है और सम्यग्दर्शन प्रकट हो जाता है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि मिथ्यात्व का कारण कषाय है। इसी प्रकार अविरति अर्थात् असंयम का कारण भी अनन्तानुबन्धी अथवा अप्रत्याख्यानी कषाय ही होते हैं। कषाय की अप्रत्याख्यानी चौकड़ी के समाप्त होने पर विरति या संयम का प्रकटन होता है। जब तक अप्रत्याख्यानी कषाय का उदय है, तब तक संयम या विरति संभव नहीं है। इसी प्रकार अविरति का कारण भी कषाय ही है। जब हम बन्ध के तीसरे हेतु प्रमाद पर विचार करते हैं, तो भी हमें स्पष्ट लगता है कि प्रमाद की सत्ता भी कषाय के कारण ही है। जब तक प्रत्याख्यानी कषायों की चौकड़ी सत्ता में है तब तक प्रमाद की भी सत्ता है। गुणस्थान सिद्धान्त में भी स्पष्ट रूप से यह बताया गया है कि प्रत्याख्यानी कषाय-चतुष्क के उदय में रहते हुए अप्रमत्त-संयत्त गुणस्थान की उपलब्धि सम्भव नहीं होती है। मात्र इतना ही नहीं, प्रबुद्ध जैनाचार्यों ने कषायों को प्रमाद का ही एक प्रकार माना है। इस प्रकार हम देखते हैं कि मिथ्यात्व, अविरति और प्रमाद-तीनों का हेतु कषाय ही है। अनन्तानुबन्धी कषाय चतुष्क के क्षय के साथ ही मिथ्यात्व का क्षय होता है। अप्रत्याख्यानी कषाय-चतुष्क के क्षय से असंयम या अविरति का क्षय होता है। प्रत्याख्यानी कषाय-चतुष्क के क्षय या क्षयोपशम से प्रमाद समाप्त होता है अतः मिथ्यात्व, अविरत और प्रमाद के मूल में कषाय ही रहे हुए हैं। कषायों के अभाव में इनकी स्वतन्त्र सत्ता नहीं रहती है, अतः बन्धन के प्रथम चार कारणों में कषाय ही प्रमुख कारण है, शेष मिथ्यात्व,

अविरति और प्रमाद तो उसके आनुषंगिक ही है, कषाय की सत्ता में ही उनकी सत्ता है। निष्कर्ष यह है कि बन्धन के दो ही कारण हैं-कषाय और योग। इन दोनों कारणों में भी योग बन्धन का निमित्त कारण है। कषायों के अभाव में उसमें बन्धन का सामर्थ्य नहीं है। जैन दर्शन की मान्यता है कि कषाय के अभाव में मात्र योग के परिणामस्वरूप जो ईर्यापथिक आस्रव और बन्ध होता है वह क्षणिक ही है। उसमें प्रथम समय में बन्ध होता है, और दूसरे समय में वह निर्जरित हो जाता है। इस प्रकार वस्तुतः बन्ध वास्तविक बन्ध नहीं है। जैसे पानी में खींची गई लकीर खींचने के साथ ही समाप्त हो जाती है, उसी प्रकार ईर्यापथिक बन्ध अपने बन्धन के साथ ही समाप्त हो जाता है। इस समस्त चर्चा का फलित यह है कि कषाय ही बन्धन के प्रमुख कारण हैं, योग तो अकिंचित्कर है। जिस प्रकार घी के अभाव में लड्डू बंधता नहीं है, उसी प्रकार कषाय के अभाव में कर्म भी बंधते नहीं हैं।

पुनः जैन कर्म-सिद्धान्त में बन्धन के चार प्रकार माने गये हैं- (1) प्रकृति बन्ध, (2) प्रदेश बन्ध, (3) स्थिति बन्ध और (4) अनुभाग बन्ध। यदि हम बन्धन के उपरोक्त दो कारण-कषाय और योग के संदर्भ में बन्धन के इन चार प्रकारों की चर्चा करें, तो हम पाते हैं कि योग प्रकृति-बन्ध और प्रदेश-बन्ध के कारण है; जबकि कषाय स्थितिबन्ध और अनुभागबन्ध के कारण हैं। योग अर्थात् हमारी मानसिक, वाचिक और कायिक क्रियाओं के द्वारा कर्मों की प्रकृति अर्थात् उनका स्वरूप और उनके प्रदेश अर्थात् मात्रा निर्धारित होती है। किन्तु यह ठीक वैसा ही है जैसा लड्डू बनाने के लिये वस्तु विशेष का एक निर्धारित मात्रा में लाया गया आटा हो। उससे लड्डू तो तभी बनेगा जब उसमें घी और शक्कर का सम्मिश्रण होगा। इसी प्रकार कर्म-बन्ध की प्रक्रिया में भी स्थिति और अनुभाग अर्थात् रस का निर्धारण कषायों के माध्यम से ही होता है। कषाय रूपी घी और शक्कर ही उस आटे को लड्डू के रूप में परिणत करते हैं। कर्म-बन्ध में स्थिति अर्थात् काल मर्यादा और अनुभाग अर्थात्

उनकी विपाकानुभूति (रस) का निर्धारण तो कषाय के द्वारा ही होता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि कर्म-बन्ध और विपाक (कर्म-फल) में मुख्य भूमिका कषाय की ही है। कषायों की तरतमता ही व्यक्ति के बन्धन के स्वरूप का निर्धारक तत्त्व है। संक्षेप में कहें, तो कषाय ही बन्धन के कारण हैं, हमारे सांसारिक अस्तित्व के आधार हैं और कषायों का क्षय या अभाव ही मुक्ति है।

कषाय के भेद

आवेगों की अवस्थाएं भी तीव्रता की दृष्टि से समान नहीं होती हैं, अतः तीव्र आवेगों को कषाय और मंद आवेगों के प्रेरकों को नो-कषाय (उप-कषाय) कहा गया है। कषायें चार हैं-1. क्रोध, 2. मान, 3. माया और 4. लोभ। आवेगात्मक अभिव्यक्तियों की तीव्रता के आधार पर इसमें से प्रत्येक को चार-चार भागों में बांटा गया है-1. तीव्रतम, 2. तीव्रतर, 3. तीव्र; और 4. मंद। आध्यात्मिक दृष्टि से तीव्रतम क्रोध आदि व्यक्ति के सम्यक् दृष्टिकोण या विवेक में विकार ला देते हैं। तीव्रतर क्रोध आदि आत्म-नियंत्रण की शक्ति को छिन्न-भिन्न कर डालते हैं। तीव्र क्रोध आदि आत्म-नियंत्रण की शक्ति के उच्चतम विकास में बाधक होते हैं। मंद क्रोध आदि व्यक्ति को पूर्ण वीतराग नहीं होने देते।² चारों कषायों की तीव्रता के आधार पर चार-चार भेद हैं। अतः कषायों की संख्या 16 हो जाती है। निम्न नो उप-आवेग, उप-कषाय या कषाय-प्रेरक मानये गये हैं- 1. हास्य 2. रति, 3. अरति, 4. शोक, 5. भय, 6. घृणा, 7. स्त्रीवेद (पुरुष-सम्पर्क की वासना), 8. पुरुषवद (स्त्री-सम्पर्क की वासना), और 9. नपुंसकवेद (दोनों के सम्पर्क की वासना)। इस प्रकार कुल 25 कषाय हैं।³

क्रोध

यह एक मानसिक किन्तु उत्तेजक आवेग है। उत्तेजित होते ही व्यक्ति भावाविष्ट हो जाता है। उसकी विचार-क्षमता और तर्क-शक्ति लगभग शिथिल हो जाती है। भावात्मक स्थिति में बढ़े हुए आवेग की वृत्ति युयुत्सा को जन्म देती है। युयुत्सा से अमर्ष और अमर्ष से

आक्रमण का भाव उत्पन्न होता है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार क्रोध और भय में यही मुख्य अन्तर है कि क्रोध के आवेग में आक्रमण का और भय के आवेग में आत्म-रक्षा का प्रयत्न होता है।

जैन-दर्शन में सामान्यतया क्रोध के दो रूप मान्य हैं-1. द्रव्य-क्रोध और 2. भाव-क्रोध।⁴ द्रव्य-क्रोध को आधुनिक मनोवैज्ञानिक दृष्टि से क्रोध का आंगिक पक्ष कहा जा सकता है, जिसके कारण क्रोध में होने वाले शारीरिक परिवर्तन होते हैं। भावक्रोध क्रोध की मानसिक अवस्था है। क्रोध का अनुभूत्यात्मक पक्ष भाव-क्रोध है, जबकि क्रोध का अभिव्यक्त्यात्मक या शरीरात्मक पक्ष द्रव्य-क्रोध है। क्रोध के विभिन्न रूप हैं। भगवतीसूत्र में इसके दस समानार्थक नाम वर्णित हैं- 1. क्रोध-आवेग की उत्तेजनात्मक अवस्था, 2. कोप-क्रोध से उत्पन्न स्वभाव की चंचलता, 3. दोष-स्वयं पर या दूसरे पर दोष थोपना, 4. रोष-क्रोध का परिस्फुट रूप, 5. संज्वलन-जलन या ईर्ष्या की भावना, 6. अक्षमा-अपराध क्षमा न करना, 7. कलह-अनुचित भाषण करना, 8. चाण्डिक्य-उग्ररूप करना, 9. मंडन-हाथापाई करने पर उतारू होना, 10. विवाद-आक्षेपात्मक भाषण करना।

क्रोध के प्रकार-क्रोध के आवेग की तीव्रता एवं मन्दता के आधार पर चार भेद किए गए हैं, जो इस भांति हैं-

1. अनन्तानुबंधी क्रोध (तीव्रतम क्रोध)- पत्थर में पड़ी दरार के समान क्रोध, जो किसी के प्रति एक बार उत्पन्न होने पर जीवनपर्यन्त बना रहे, कभी समाप्त न हो।
2. अप्रत्याख्यानी क्रोध (तीव्रतर क्रोध)- सूखते हुए जलाशय की भूमि में पड़ी दरार, जैसे आगामी वर्षा होते ही मिट जाती है, वैसे ही अप्रत्याख्यानी क्रोध एक वर्ष से अधिक स्थाई नहीं रहता और किसी के समझाने से शान्त हो जाता है।
3. प्रत्याख्यानी क्रोध (तीव्र क्रोध)- बालू की रेखा

जैसे हवा के झोकों से जल्दी ही मिट जाती हैं, वैसे ही प्रत्याख्यानी क्रोध चार मास से अधिक स्थायी नहीं होता।

4. संज्वलन क्रोध (अल्पक्रोध)– शीघ्र ही मिट जाने वाली पानी में खींची गयी रेखा के समान इस क्रोध में स्थायित्व नहीं होता है।

बौद्ध दर्शन में भी क्रोध को लेकर व्यक्तियों के तीन प्रकार माने गये हैं-1. वे व्यक्ति जिनका क्रोध पत्थर पर खींची रेखा के समान चिरस्थायी होता है, 2. वे व्यक्ति जिनका क्रोध पृथ्वी पर खींची हुई रेखा के समान अल्प-स्थायी होता है, 3. वे जिनका क्रोध पानी पर खींची रेखा के समान अस्थायी होता है। दोनों परम्पराओं में प्रस्तुत दृष्टान्त-साम्य विशेष महत्त्वपूर्ण है।⁵

मान (अहंकार)

अहंकार करना मान है। अहंकार जाति, कुल, बल, ऐश्वर्य, साधना, ज्ञान आदि किसी भी विशेषता का हो सकता है। मनुष्य में स्वाभिमान की मूल प्रवृत्ति होती है, परन्तु जब स्वाभिमान की वृत्ति दम्भ या प्रदर्शन का रूप ले लेती है, तब मनुष्य अपने गुणों एवं योग्यताओं का बढ़े-चढ़े रूप में प्रदर्शन करता है और इस प्रकार उसके अन्तःकरण में मानवृत्ति का प्रादुर्भाव हो जाता है। अभिमानी मनुष्य अपनी अहंवृत्ति का पोषण करता रहता है। उसे अपने से बढ़कर या अपनी बराबरी का गुणी व्यक्ति कोई दिखता ही नहीं।

जैन परम्परा में प्रकारान्तर से मान के आठ भेद मान्य हैं-1. जाति मद, 2. कुल मद, 3. बल (शक्ति), मद, 4. ऐश्वर्य मद, 5. तप मद, 6. ज्ञान मद (सूत्रों का ज्ञान), 7. सौन्दर्य मद और 8. अधिकार (प्रभुता)। मान को मद भी कहा गया है।

मान निम्न बारह रूपों में प्रकट होता है⁶-1. मान- अपने किसी गुण पर अहंवृत्ति, 2. मद-अहंभाव में तन्मयता, 3. दर्प- उत्तेजना पूर्ण अहंभाव, 4. स्तम्भ-अविनम्रता, 5. गर्व- अहंकार, 6. अत्युक्रोश- अपने को दूसरे से श्रेष्ठ कहना, 7.

परपरिवाद- परनिन्दा, 8. उत्कर्ष- अपना ऐश्वर्य प्रकट करना, 9. अपकर्ष- दूसरों को तुच्छ समझना, 10. उन्नतनाम- गुणी के सामने भी न झुकना, 11. उन्नत- दूसरों को तुच्छ समझना; और 12. पुर्नाम- यथोचित रूप से न झुकना।

अहंभाव की तीव्रता और मन्दता के अनुसार मान के भी चार भेद हैं-

1. अनंतानुबन्धी मान- पत्थर के खम्बे के समान हो झुकता नहीं, अर्थात् जिसमें विनय गुण नाममात्र का भी नहीं है।
2. अप्रत्याख्यानी मान- हड्डी के समान कठिनता से झुकने वाला अर्थात् जो विशेष परिस्थितियों में बाह्य दबाव के कारण विनम्र हो जाता है।
3. प्रत्याख्यानी मान- लकड़ी के समान प्रयत्न से झुक जाने वाला अर्थात् जिसके अन्तर में विनम्रता तो होती है, लेकिन जिसका प्रकटन विशेष स्थिति में ही होता है।
4. संज्वलन मान- बेंत के समान अत्यन्त सरलता से झुक जाने वाला अर्थात् जो आत्मगौरव को रखते हुए भी विनम्र बना रहता है।

माया

कपटाचार माया कषाय है। भगवती सूत्र के अनुसार इसके पन्द्रह नाम हैं।⁷ 1. माया- कपटाचार, 2. उपाधि- ठगने के उद्देश्य से व्यक्ति के पास जाना, 3. निकृति- ठगने से अभिप्राय से अधिक सम्मान देना, 4. वलय-वक्रता पूर्ण वचन, 5. गहन- ठगने के विचार से अत्यन्त गूढ़ भाषण करना, 6. नूम- ठगने के हेतु निकृष्ट कार्य करना, 7. कल्क- दूसरों को हिंसा के लिए उभारना, 8. करूप- निन्दित व्यवहार करना, 9. निहता- ठगाई के लिये कार्य मन्द गति से करना, 10. किल्बिषिक- भांडों के समान कुचेष्टा करना, 11. आदरगता- अनिच्छित कार्य भी अपनाना, 12. गूहनता- अपनी करतूत को छिपाने का प्रयत्न करना,

13. वंचकता- ठगी; और 14. प्रति-कुंचनता- किसी के सरल रूप से कहे गये वचनों का खण्डन करना, 15. सातियोग- उत्तम वस्तु में हीन वस्तु की मिलावट करना। ये सब माया की ही विभिन्न अवस्थाएं हैं।

माया के चार प्रकार- 1. अनंतानुबन्धी माया (तीव्रतम कपटाचार)-बास की जड़ के समान कुटिल, 2. अप्रत्याख्यानी माया (तीव्रतर कपटाचार)-भैंस के सींग के समान कुटिल, 3. प्रत्याख्यानी माया (तीव्र कपटाचार)-गौमूत्र की धारा के समान कुटिल, 4. संज्वलन माया (अल्प-कपटाचार)-बांस के छिलके के समान कुटिल।

लोभ

मोहनीय-कर्म के उदय से चित्त में उत्पन्न होने वाली तृष्णा या लालसा लोभ कहलाती है। लोभ की सोलह अवस्थाएं हैं⁸- 1. लोभ- संग्रह करने की वृत्ति, 2. इच्छा- अभिलाषा, 3. मूर्च्छा- तीव्र संग्रह-वृत्ति 4. कांक्षा- प्राप्त करने की आशा, 5. गुद्धि- आसक्ति 6. तृष्णा- जोड़ने की इच्छा, वितरण की विरोधी वृत्ति, 7. मिथ्या- विषयों का ध्यान, 8. अभिध्या- निश्चय से डिग जाना या चंचलता, 9. आशंसना- इष्ट प्राप्ति की इच्छा करना, 10. प्रार्थना- अर्थ आदि की याचना, 11. लोलपनता- चाटुकारिता, 12. कामाशा- काम की इच्छा, 13. भोगाशा-भोग्य पदार्थों की इच्छा, 14. जीविताशा-जीवन की कामना, 15. मरणाशा- मरने की कामना⁹ और 16. नन्दिराग- प्राप्त सम्पत्ति में अनुराग।

लोभ के चार भेद- 1. अनंतानुबन्धी लोभ- मजीठिया रंग के समान जो छूटे नहीं, अर्थात् अत्याधिक लोभ। 2. अप्रत्याख्यानी लोभ- गाड़ी के पहिये के आंगन के समान मुश्किल से छूटने वाला लोभ। 3. प्रत्याख्यानी लोभ- कीचड़ के समान प्रयत्न करने पर छूट जाने वाला लोभ। 4. संज्वलन लोभ- हल्दी के समान शीघ्रता से दूर हो जाने वाला लोभ।

नोकषाय- नोकषाय शब्द दो शब्दों के योग से बना है नो+कषाय। जैन-दार्शनिकों ने 'नो' शब्द को साहचर्य के अर्थ में ग्रहण किया है।¹⁰ इस प्रकार क्रोध, मान, माया और लोभ-इन प्रधान कषायों के सहचारी भावों अथवा उनकी सहयोगी मनोवृत्तियां जैन परिभाषा में नोकषाय कही जाती हैं।¹¹ जहां पाश्चात्य मनोविज्ञान में काम-वासना को प्रमुख मूलवृत्ति तथा भय को प्रमुख आवेग माना गया है, वहां जैन दर्शन में उन्हें सहचारी कषाय या उप-आवेग कहा गया है। इसका कारण यही हो सकता है कि जहां पाश्चात्य विचारकों ने उन पर मात्र मनोवैज्ञानिक दृष्टि से विचार किया है, वहां जैन विचारणा में जो मानसिक तथ्य नैतिक दृष्टि से अधिक अशुभ थे, उन्हें कषाय कहा गया है और उनके सहचारी अथवा कारक मनोभाव को नोकषाय कहा गया है। यद्यपि मनोवैज्ञानिक दृष्टि से विचार करने पर नोकषाय वे प्राथमिक स्थितियां हैं, जिनसे कषायें उत्पन्न होती हैं, तथापि आवेगों की तीव्रता की दृष्टि से नोकषाय कम तीव्र होते हैं, और कषायें अधिक तीव्र होती हैं। इन्हें कषाय का कारण भी कहा जा सकता है। जैन ग्रन्थों में इनकी संख्या 9 (नौ) मानी गई है-

1. हास्य- सुख या प्रसन्नता की अभिव्यक्ति हास्य है। जैन-विचारणा के अनुसार हास्य का कारण पूर्व-कर्म या वासना-संस्कार है। यह मान कषाय का कारण है।
2. शोक- इष्टवियोग और अनिष्टयोग से सामान्य व्यक्ति में जो मनोभाव जागृत होते हैं, वे शोक कहे जाते हैं।¹² शोक चित्तवृत्ति की विकलता का द्योतक है¹³ और इस प्रकार मानसिक समत्व को भंग करने वाला है। कभी-कभी यह क्रोध कषाय में रूपान्तरित हो जाता है।
3. रति (रुचि)- अभीष्ट पदार्थों पर प्रीतिभाव अथवा इन्द्रिय-विषयों में चित्त की अभिरतता ही रति है। इसके कारण ही आसक्ति एवं लोभ की भावनाएं प्रबल होती हैं।

4. **अरति**— इन्द्रिय विषयों में अरुचि ही अरति है। अरुचि का भाव ही विकसित होकर घृणा और द्वेष बनता है। राग और द्वेष तथा रुचि और अरुचि में प्रमुख अन्तर यही है कि राग और द्वेष मनस् की सक्रिय अवस्थाएं हैं, जबकि रुचि और अरुचि निष्क्रिय अवस्थाएं हैं। रति और अरति पूर्व कर्म-संस्कारजनित स्वाभाविक रुचि और अरुचि का भाव है।
5. **घृणा**— घृणा या जुगुप्सा अरुचि का ही विकसित रूप है। अरुचि और घृणा में केवल मात्रात्मक अन्तर ही है। अरुचि की अपेक्षा घृणा में विशेषता यह है कि अरुचि में पदार्थ-विशेष के भोग की अरुचि होती है, लेकिन उसकी उपस्थिति सह्य होती है, जबकि घृणा में उसका भोग और उसकी उपस्थिति दोनों ही असह्य होती है। अरुचि का विकसित रूप घृणा और घृणा का विकसित रूप द्वेष है।
6. **भय**— किसी वास्तविक या काल्पनिक तथ्य से आत्मरक्षा के निमित्त बच निकलने की प्रवृत्ति ही भय है। भय और घृणा में प्रमुख अन्तर यह है कि घृणा के मूल में द्वेष-भाव रहता है, जबकि भय में आत्म-रक्षण का भाव प्रबल होता है। घृणा क्रोध और द्वेष का एक रूप है, जबकि भय लोभ या राग की ही एक अवस्था है। जैनागमों में भय सात प्रकार का माना गया है, जैसे—(1) **इहलोक भय**— यहां लोक शब्द संसार के अर्थ में न होकर जाति के अर्थ में ही गृहीत है। स्वजाति के प्राणियों से अर्थात् मनुष्यों के लिए मनुष्यों से उत्पन्न होने वाला भय, (2) **परलोक भय**— अन्य जाति के प्राणियों से होने वाला भय, जैसे मनुष्यों के लिए पशुओं का भय, (3) **आदान भय**— धन की रक्षा के निमित्त चोर-डाकू आदि ब्राह्मण कारणों से उत्पन्न भय, (4) **अकस्मात् भय**— बाह्य निमित्त के अभाव में स्वकीय कल्पना से निर्मित भय या अकारण भय। भय का यह रूप मानसिक ही होता है, जिसे मनोविज्ञान में असामान्य भय कहते हैं। (5) **आजीविका**— आजीविका या धनोपार्जन के साधनों

की समाप्ति (विच्छेद) का भय। कुछ ग्रन्थों में इसके स्थान पर वेदना-भय का उल्लेख है। रोग या पीड़ा का भय वेदना भय है। (6) **मरण भय**— मृत्यु का भय; जैन और बौद्ध विचारणा में मरण-धर्मता का स्मरण तो नैतिक दृष्टि से आवश्यक है, लेकिन मरण भय (मरणाशा एवं जीविताशा) को नैतिक दृष्टि से अनुचित माना गया है। (7) **अश्लोक (अपयश) भय**— मान-प्रतिष्ठा को ठेस पहुंचने का भय।¹⁴

7. **स्त्रीवेद**— स्त्रीत्व संबंधी काम-वासना अर्थात् पुरुष से संभोग की इच्छा। जैन-विचारणा में लिंग और वेद में अन्तर किया गया है। लिंग आंगिक संरचना का प्रतीक है, जबकि वेद तत्सम्बन्धी वासनाओं की अवस्था है। यह आवश्यक नहीं है कि स्त्री-लिंग होने पर स्त्रीवेद हो ही। जैन-विचारणा के अनुसार लिंग (आंगिक रचना) का कारण नाम-कर्म है, जबकि वेद (वासना) का कारण चारित्रमोहनीय-कर्म है।

8. **पुरुषवेद**— पुरुषत्व सम्बन्धी काम-वासना अर्थात् स्त्री-संभोग की इच्छा।

9. **नपुंसकवेद**— प्राणी में स्त्रीत्व सम्बन्धी और पुरुषत्व सम्बन्धी दोनों वासनाओं का होना नपुंसकवेद कहा जाता है। दोनों के संभोग की इच्छा ही नपुंसकवेद है।

काम-वासना की तीव्रता की दृष्टि से जैन-विचारकों के अनुसार पुरुष की काम-वासना शीघ्र ही प्रदीप्त हो जाती है और शीघ्र ही शान्त हो जाती है। स्त्री की काम-वासना देरी से प्रदीप्त होती है, लेकिन एक बार प्रदीप्त हो जाने पर काफी समय तक शान्त नहीं होती। नपुंसक की काम-वासना शीघ्र प्रदीप्त हो जाती है, लेकिन शान्त देरी से होती है।¹⁵ इस प्रकार भय, शोक, घृणा, हास्य, रति, अरति और काम-विकार-ये उप-आवेग हैं। ये भी व्यक्ति के जीवन को बहुत प्रभावित करते हैं। क्रोध आदि की शक्ति तीव्र होती है, इसलिए वे आवेग हैं। ये व्यक्ति के जीवन को बहुत प्रभावित करते हैं। क्रोध आदि की शक्ति तीव्र होती है, इसलिए वे आवेग हैं। ये व्यक्ति की शारीरिक और मानसिक स्थिति को प्रभावित करने के

अतिरिक्त उसके आन्तरिक गुणों-सम्यक् दृष्टिकोण, आत्म-नियंत्रण आदि को भी प्रभावित करते हैं। भय आदि उप-आवेग व्यक्ति के आन्तरिक गुणों को उतना प्रत्यक्षतः प्रभावित नहीं करते, जितना शारीरिक और मानसिक स्थिति को करते हैं। उनकी शक्ति अपेक्षाकृत क्षीण होती है, इसलिए वे उप-आवेग कहलाते हैं।¹⁶

कषाय-जय नैतिक एवं आध्यात्मिक प्रगति का आधार है। जैन आचार-दर्शन के अनुसार उक्त 16 आवेगों (कषाय) और 9 उप-आवेगों (नो कषाय) का सीधा सम्बन्ध व्यक्ति के चरित्र से है। नैतिक जीवन के लिए इन वासनाओं एवं आवेगों से ऊपर उठना आवश्यक है।

जब तक व्यक्ति इनसे ऊपर नहीं उठता है, वह नैतिक प्रगति नहीं कर सकता। गुणस्थान आरोहण में यह तथ्य स्पष्ट रूप से वर्णित है कि नैतिक विकास की किस अवस्था में कितनी कषायों का क्षय हो जाता है और कितनी शेष रहती हैं। नैतिकता की सर्वोच्च भूमिका समस्त कषायों के समाप्त होने पर ही प्राप्त होती है।

जैन-सूत्रों में इन चार प्रमुख कषायों को 'चंडाल चौकड़ी' कहा गया है। इनमें अनन्तानुबन्धी आदि जो विभाग है, उनको सदैव ध्यान में रखना चाहिए और हमेशा यह प्रयत्न करना चाहिए कि कषायों में तीव्रता न आये, क्योंकि अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ के होने पर साधक अनन्तकाल तक संसार परिभ्रमण करता है और सम्यग्दृष्टि नहीं बन पाता है। यह जन्म-मरण के रोग की असाध्यावस्था है। अप्रत्याख्यानी कषाय के होने पर साधक, श्रावक या गृहस्थ साधक के पद से गिर जाता है। यह साधक के आंशिक चरित्र का नाश कर देती है। यह विकारों की दुःसाध्यावस्था है। इसी प्रकार प्रत्याख्यानी कषाय की अवस्था में साधुत्व प्राप्त नहीं होता। इसे विकारों की प्रयत्न-साध्यावस्था कहा जा सकता है। साधक को अपने जीवन में उपर्युक्त तीनों प्रकार की कषायों को स्थान नहीं देना चाहिए, क्योंकि इससे उसकी साधना या चरित्र धर्म का नाश हो जाता है।

इतना ही नहीं, साधक को अपने अन्दर संज्वलन कषाय को भी स्थान नहीं देना चाहिए, क्योंकि जब तक चित्त में सूक्ष्मतम क्रोध, मान, माया और लोभ रहते हैं, साधक अपने लक्ष्य-निर्वाण की प्राप्ति नहीं कर सकता। संक्षेप में, अनन्तानुबन्धी चौकड़ी या कषायों की तीव्रतम अवस्था यथार्थ दृष्टिकोण की उपलब्धि में बाधक है। अप्रत्याख्यानी चौकड़ी या कषायों की तीव्रतर अवस्था आत्म-नियंत्रण में बाधक है। प्रत्याख्यानी चौकड़ी या कषायों की तीव्र अवस्था श्रमण जीवन में घातक है। इसी प्रकार संज्वलन चौकड़ी या अल्प-कषाय पूर्ण निष्काम या वीतराग जीवन की उपलब्धि में बाधक है। इसलिए साधक को सूक्ष्मतम कषायों को भी दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए, क्योंकि इनके होने पर उसकी साधना में पूर्णता नहीं आ सकती। दशवैकालिकसूत्र में कहा गया है कि आत्म-हित चाहने वाला साधक पाप की वृद्धि करने वाले क्रोध, मान, माया और लोभ-इन चार दोषों को पूर्णतया छोड़ दे।¹⁷

नैतिक जीवन की साधना करने वाला इनको क्यों छोड़ दें? इस तर्क के उत्तर में दशवैकालिक सूत्र में इनकी सामाजिक एवं वैयक्तिक सदुणों का घात करने वाली प्रकृति का भी विवेचन किया गया है-क्रोध प्रीति का, मान विनय (नम्रता) का, माया मित्रता का और लोभ सभी सदुणों का नाश कर देता है।¹⁸ आचार्य हेमचंद्र कहते हैं कि मान विनय, श्रुत, शील-सदाचार एवं त्रिवर्ग का घातक है। वह विवेकरूपी नेत्रों को नष्ट करके मनुष्य को अन्धा बना देता है। क्रोध जब उत्पन्न होता है तो प्रथम आग की तरह उसी को जलाता है, जिसमें वह उत्पन्न होता है। माया, अविद्या और असत्य की जनक है और शीलरूपी वृक्ष को नष्ट करने में कुल्हाड़े के समान तथा अद्योगति की कारण है। लोभ समस्त दोषों की उत्पत्ति का कारण है, समस्त सदुणों को निगल जाने वाला राक्षस है, सारे दुःखों का मूल कारण और धर्म तथा काम-पुरुषार्थ का बाधक है।¹⁹ यहां पर विशेष द्रष्टव्य यह भी है कि कषायों में जहां क्रोध-मानादि को एक या अधिक सदुणों

का विनाशक कहा गया है, वहां लोभ को सर्व सदुणों का विनाशक कहा गया है। लोभ सभी कषायों में निकृष्टतम इसलिए है कि वह रागात्मक है और राग या आसक्ति ही समस्त असत् वृत्तियों की जनक है। आचार्य महाप्रज्ञ सामाजिक जीवन पर होने वाले कषायों के परिणामों की चर्चा करते हुए लिखते हैं कि 'हमारे मतानुसार (सामाजिक) सम्बन्ध-शुद्धि की कसौटी है-ऋजुता, मृदुता, शान्ति और त्याग से समन्वित मनोवृत्ति। हर व्यक्ति में चार प्रकार की वृत्तियां (कषाय) होती हैं-1. संग्रह, 2. आवेश, 3. गर्व (बड़ा मानना) और 4. माया (छिपाना)। चार वृत्तियां और होती हैं। वे उक्त चार प्रवृत्तियों की प्रतिपक्षी हैं-1. त्याग या विसर्जन 2. शान्ति, 3. समानता या मृदुता, 4. ऋजुता या स्पष्टता। ये दोनों प्रकार की प्रवृत्तियां वैयक्तिक हैं, इसलिए इन्हें अनैतिक और नैतिक नहीं कहा जा सकता। इन्हें आध्यात्मिक (वैयक्तिक) दोष और गुण कहा जा सकता है। इन वृत्तियों के जो परिणाम समाज में संक्रान्त होते हैं, उन्हें अनैतिक और नैतिक कहा जा सकता है”

कषाय की वृत्तियों के परिणाम-

1. संग्रह (लोभ) की मनोवृत्ति के परिणाम-शोषण, अप्रामाणिकता, निरपेक्ष-व्यवहार, क्रूर-व्यवहार, विश्वासघात।
2. आवेश (क्रोध) की मनोवृत्ति के परिणाम-गाली गलौज, युद्ध आक्रमण, प्रहार, हत्या।
3. गर्व (छिपाने) की मनोवृत्ति के परिणाम- घृणा, विश्वास, अमैत्रीपूर्ण व्यवहार।
4. माया (छिपाने) की मनोवृत्ति के परिणाम- अविश्वास अमैत्रीपूर्ण व्यवहार।

कषाय जय के परिणाम-

1. त्याग (विसर्जन) की मनोवृत्ति के परिणाम- प्रामाणिकता, सापेक्ष व्यवहार, अशोषण।
2. शान्ति की मनोवृत्ति के परिणाम- वाक्-संयम, अनाक्रमण, समझौता, समन्वय।
3. समानता की मनोवृत्ति के परिणाम- सापेक्ष-

व्यवहार, प्रेम, मृदु व्यवहार।

4. ऋजुता की मनोवृत्ति के परिणाम- मैत्रीपूर्ण व्यवहार, विश्वास।²⁰

अतः आवश्यक है कि सामाजिक जीवन की शुद्धि के लिए प्रथम प्रकार की वृत्तियों का त्याग कर जीवन में दूसरे प्रकार की प्रतिपक्षी वृत्तियों को स्थान दिया जाये। इस प्रकार वैयक्तिक और सामाजिक दोनों ही जीवन की दृष्टियों से कषाय-जय आवश्यक है। उत्तराध्ययनसूत्र में कहा है, क्रोध से आत्मा अधोगति को कहा जाता है और मान से, माया से अच्छी गति (नैतिक विकास) का प्रतिरोध हो जाता है, लोभ से इस जन्म और अगले जन्म दोनों में ही भय प्राप्त होता है।²¹ जो व्यक्ति यश, पूजा या प्रतिष्ठा की कामना करता है, मान और सम्मान की अपेक्षा करता है, वह व्यक्ति अपने मान की पूर्ति के लिए अनेक प्रकार के पाप-कर्म करता है और कपटाचार का प्रश्रय लेता है।²² दुष्पूर्य लोभ की पूर्ति में लगा हुआ व्यक्ति सदैव ही दुःख उठाया करता है, अतः इन जन्म-मरण रूपी वृक्ष का सिंचन करने वाली कषायों का परित्याग कर देना चाहिए।

कषाय-जय कैसे ? - प्रश्न यह है कि मानसिक आवेगों (कषायों) पर विजय कैसे प्राप्त की जाये? पहली बात यह कि तीव्र कषायोदय में तो विवेक-बुद्धि प्रसुप्त ही हो जाती है, अतः विवेक-बुद्धि से कषायों का निग्रह सम्भव नहीं रह जाता। दूसरे इच्छापूर्वक भी उनका विरोध सम्भव नहीं, क्योंकि इच्छा तो स्वतः उनसे ही शासित होने लगती है। पाश्चात्य दार्शनिक स्पीनोजा के अनुसार आवेगों का नियंत्रण संकल्पों से भी संभव नहीं, क्योंकि संकल्प तो आवेगात्मक स्वभाव के आधार पर ही बनते हैं और उसके ही एक अंग होते हैं।²³ तीसरे, आवेगों का निरोध भी मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से अहितकर माना गया है और उनकी किसी न किसी रूप में अभिव्यक्ति आवश्यक मानी गयी है। तीव्र आवेगों के निरोध के लिए तो एक ही मार्ग है कि उन्हें उनके विरोधी आवेगों के द्वारा शिथिल किया जाये। स्पीनोजा की मान्यता यही है कि

कोई भी आवेग अपने विरोधी और अधिक शक्तिशाली आवेग के द्वारा ही नियंत्रित या समाप्त किया जा सकता है।²⁴ जैन एवं अन्य भारतीय चिन्तकों ने इस सम्बन्ध में यही दृष्टिकोण अपनाया है। दशवैकालिकसूत्र में कहा गया है कि शान्ति से क्रोध को, मृदुता से मान को, सरलता से माया को और सन्तोष से लोभ को जीतना चाहिए।²⁵ आचार्य कुन्दकुन्द तथा आचार्य हेमचंद्र भी यही कहते हैं।²⁶ धम्मपद में कहा है कि अक्रोध से क्रोध को, साधुता से असाधुता को जीते तथा कृपणता को दान से और मिथ्या भाषण को सत्य से पराजित करें।²⁷ महाभारत में भी लगभग इन्हीं शब्दों से इन वृत्तियों के ऊपर विजय प्राप्त करने का निर्देश है।²⁸ महाभारत और धम्मपद का यह शब्द-साम्य और दशवैकालिक एवं धम्मपद का यह विचार-साम्य बड़ा महत्वपूर्ण है।

वस्तुतः कषाय ही आत्म-विकास में बाधक है। कषायों का नष्ट हो जाना ही भव-भ्रमण का अंत है। एक जैनाचार्य का कथन है-‘कषायमुक्तिः किल मुक्तिरेव’-कषायों से मुक्त होना ही वास्तविक मुक्ति है। आचार्य कुन्दकुन्द कहते हैं कि साधक को हमेशा यही विचार करना चाहिए कि मैं न तो क्रोध हूँ, न मान, न माया, न लोभ ही हूँ अर्थात् ये मेरी आत्मा के गुण नहीं हैं। अतएव मैं न तो इनको करता हूँ, न करवाता हूँ और न करने वालों का अनुमोदन (समर्थन) करता हूँ।²⁹

इस प्रकार कषायों को विकृति समझकर साधक शुद्ध आत्म-स्वरूप का चिन्तन करते हुए इनसे दूर होकर शीघ्र निर्वाण प्राप्त कर लेता है, क्योंकि इन चारों दोषों का त्याग कर देने वाला पाप नहीं करता है। सूत्रकृतांग में कहा गया है कि क्रोध, मान, माया और लोभ-इन चार महादोषों को छोड़ देने वाला महर्षि न तो पाप करता है, न करवाता है।³⁰ कषाय-जय से जीवनमुक्ति को प्राप्त कर वह निष्काम जीवन जीता है।

बौद्ध दर्शन और कषाय-जय- धम्मपद में कषाय शब्द का प्रयोग दो अर्थों में हुआ है। एक तो उनका जैन-

परम्परा के समान दूषित चित्तवृत्ति के अर्थ में प्रयोग हुआ है और दूसरे संन्यस्त जीवन के प्रतीक गेरूप वस्त्रों के अर्थ में। तथागत कहते हैं-‘जो व्यक्ति (रागद्वेषादि) कषायों को छोड़े बिना काषाय वस्त्रों (गेरूप कपड़ों) को अर्थात् संन्यास धारण करना है वह संयम के यथार्थ स्वरूप से पतित व्यक्ति काषाय-वस्त्रों (संन्यास मार्ग) का अधिकारी नहीं है। लेकिन जिसने कषायों (दूषित चित्तवृत्तियों) को वमित कर दिया (तज दिया) है, वह संयम के यथार्थ स्वरूप से युक्त व्यक्ति काषाय-वस्त्रों (संन्यास मार्ग) का अधिकारी है।³¹ बौद्ध-विचार में कषाय शब्द के अन्तर्गत कौन-कौन दूषित वृत्तियाँ आती हैं, इसका स्पष्ट उल्लेख हमें नहीं मिलता। क्रोध, मान, माया, लोभ को बौद्ध-विचारणा में दूषित चित्त-वृत्ति के रूप में ही माना गया है और नैतिक आदर्श की उपलब्धि के लिए उनके परित्याग का निर्देश है। बुद्ध कहते हैं कि क्रोध को छोड़ दो और अभिमान का त्याग कर दो; समस्त संयोजनों को तोड़ दो जो पुरुष नाम तथा रूप में आसक्त नहीं होता, लोभ नहीं करता, जो अकिंचन है, उस पर क्लेशों का आक्रमण नहीं होता। जो उठते हुए क्रोध को उसी तरह निग्रहित कर लेता है, जैसे सारथी घोड़े को; वही सच्चा सारथी है (नैतिक जीवन का सच्चा साधक है), शेष सब तो मात्र लगाम पकड़ने वाले हैं। भिक्षुओं! लोभ, द्वेष और मोह पापचित्त वाले मनुष्य को अपने भीतर ही उत्पन्न होकर नष्ट कर देते हैं जैसे केले के पेड़ को उसी का फल (केला)।³² मायावी मर कर नरक में उत्पन्न हो दुर्गति को प्राप्त होता है।³³ सुत्तनिपात में कहा गया है कि जो मनुष्य जाति, धन और गोत्र का अभिमान करता है और अपने बंधुओं का अपमान करता है, वह उसके पराभाव का कारण है।³⁴ जो क्रोध करता है, वैरी है तथा जो मायावी है उसे वृषल (नीच) जानो।³⁵ इस प्रकार बौद्ध दर्शन इन अशुभ-चित्त वृत्तियों का निषेध कर साधना को उनसे ऊपर उठने का संदेश देता है।

गीता और कषाय-निरोध-यद्यपि गीता में कषायों का ऐसा चतुर्विध वर्गीकरण तो नहीं मिलता, तथापि

कषायों के रूप में जिन अशुभ मनोवृत्तियों का चित्रण जैनागमों में है, उन सभी अशुभ मनोवृत्तियों का उल्लेख गीता में भी है। हिन्दू आचार-दर्शन में कषाय शब्द का अशुभ मनोवृत्तियों के अर्थ में प्रयोग विरल ही हुआ है। छादोग्य-उपनिषद् में कषाय शब्द राग-द्वेष के अर्थ में व्यवहृत हुआ है।³⁶ महाभारत के शान्तिपर्व में भी कषाय शब्द का प्रयोग अशुभ मनोवृत्तियों के अर्थ में हुआ है। वहां कहा गया है कि मनुष्य-जीवन की तीन सीढ़ियों अर्थात् ब्रह्मचर्य, गृहस्थ एवं वानप्रस्थ-आश्रम में कषायों को विजित कर फिर संन्यास का अनुसरण करें।³⁷ गीता में कषाय शब्द का प्रयोग नहीं है। फिर भी गीता में कषाय-वृत्तियों का विवेचन है। गीता कहती है कि 'दम्भ, दर्प, मान, क्रोध आदि आसुरी सम्पदा है।'³⁸ अहंकार, बल, दर्प (मान), काम (लोभ) और क्रोध के आश्रित होकर मनुष्य अपने और दूसरों के शरीर में स्थित परमात्मा (आत्मा) से द्वेष करने वाले होते हैं³⁹ अर्थात् मान, क्रोध, लोभ आदि विकारों के वशीभूत होकर आत्मा के यथार्थ स्वरूप को नहीं जान पाते हैं। यह काम, क्रोध और लोभ आत्मा का नाश करने वाले (आत्मा को विकारी बनाकर उसक स्व-लक्षणों को आवरित करने वाले) नरक के द्वार हैं। अतः इन तीनों का त्याग कर देना चाहिए। जो इन नरक के द्वारों से मुक्त होकर अपने कल्याण-मार्ग का आचरण करता है, वह परमगति को प्राप्त करता है।⁴⁰

इस प्रकार क्रोध, मान और लोभ-इन तीन कषायों का विवेचन हमें गीता में मिल जाता है। गीता में माया शब्द का प्रयोग तो हुआ है, लेकिन जिस निम्न-स्तरीय कपट-वृत्ति के अर्थ में जैन दर्शन में उसका प्रयोग किया गया है, उस अर्थ में उसका प्रयोग नहीं हुआ है। वहां तो वह दैवी माया (7/14) है, फिर भी वह नैतिक विकास में बाधक अवश्य मानी गयी है। गीता में कृष्ण कहते हैं कि माया के द्वारा जिनके ज्ञान का अपहरण हो गया है, ऐसे आसुरी स्वभाव से युक्त, दूषित कर्मों का आचरण करने वाले, मनुष्यों में नीच, मूर्ख मुझ परमात्मा

को प्राप्त नहीं होते।⁴¹

सारांश यह है कि मनोवृत्तियों के चारों रूप, जिन्हें जैन विचारणा कषाय कहती है, गीता में भी निकृष्ट माने गये हैं और नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास के लिए इनका परित्याग करना आवश्यक है। गीताकार की दृष्टि में जो मनुष्य इस शरीर के नाश होने के पहले ही काम और क्रोध से उत्पन्न आवेगों (संवेगों) को सहन करने में समर्थ है अर्थात् जो काम एवं क्रोध की भावनाओं के ऊपर उठ गया है, वही योगी है और वही सुखी है। काम-क्रोधादि (कषाय-वृत्तियों से रहित, विजित-चित्त एवं विकार रहित) आत्मा के यथार्थ स्वरूप को जानने वाला ज्ञानी पुरुष सभी ओर से ब्रह्म-निर्वाण में ही निवास करता है अर्थात् जीवनमुक्त हो जाता है।⁴²

इस प्रकार हम देखते हैं कि बौद्ध और गीता के आचार-दर्शनों में भी जैनदर्शन के समान क्रोध (आवेश), मान (अहंकार), माया (छिपाने की वृत्ति) और लोभ (संग्रह-वृत्ति) आदि आवेगों को वैयक्तिक आध्यात्मिक विकास एवं सामाजिक सम्बन्धों की शुद्धि की दृष्टि से अनुचित माना गया है। यदि व्यक्ति इन आवेगात्मक मनोवृत्तियों को अपने जीवन में स्थान देता है तो एक ओर वैयक्तिक दृष्टि से वह अपने आध्यात्मिक विकास को अवरुद्ध करता है और यथार्थ बोध से वंचित रहता है, दूसरी ओर उसकी इन वृत्तियों के परिणाम सामाजिक जीवन में संक्रान्त होकर क्रमशः संघर्ष (युद्ध), शोषण, घृणा (ऊंच-नीच का भाव) और अविश्वास को उत्पन्न करते हैं जिसके परिणामस्वरूप सामाजिक जीवन व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो जाती है। अतः वैयक्तिक-आध्यात्मिक विकास और सामंजस्यपूर्ण सामाजिक जीवन प्रणाली के लिए आवेगात्मक मनोवृत्तियों का त्याग आवश्यक है और इनके स्थान पर इनकी प्रतिपक्षी शान्ति, समानता, सरलता (विश्वसनीयता) और विसर्जन (त्याग) की मनोवृत्तियों को जीवन में स्थान देना चाहिए ताकि वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन का विकास हो सके।

व्यक्ति जैसे-जैसे इन आवेगात्मक मनोवृत्तियों से ऊपर उठता जाता है, वैसे-वैसे उसका व्यक्तित्व परिपक्व बनता जाता है और जब इन आवेगात्मक मनोभावों से पूर्णतया ऊपर उठ जाता है, तब वीतराग, अर्हत् या जीवनमुक्त अवस्था को प्राप्त कर लेता है, जो कि नैतिक जीवन का साध्य है। आधुनिक मनोविज्ञान की दृष्टि से इसे परिपक्व व्यक्ति (MATURED PERSONALITY) की अवस्था कहा जा सकता है।

कषाय एवं हमारा व्यक्तित्व- हमारे व्यक्तित्व का सीधा सम्बन्ध हमारे कषाय सम्बन्धी आवेगों से है। इन आवेगों की जितनी अधिक तीव्रता होगी, व्यक्तित्व में उतनी ही अधिक अस्थिरता होगी। व्यक्ति जितना कषायों या आवेगों से ऊपर उठेगा, उसके व्यक्तित्व में स्थिरता एवं परिपक्वता आती जायेगी। इसी प्रकार व्यक्ति में वासनात्मक आवेगों (कषायों) की जितनी अधिकता होगी, नैतिक दृष्टि से उसका व्यक्तित्व उतना ही निम्न स्तरीय होगा। आवेगों (मनोवृत्तियों) की तीव्रता और उनकी अशुभता दोनों ही व्यक्तित्व को प्रभावित करती हैं। वस्तुतः आवेगों में जितनी अधिक तीव्रता होगी, उतनी व्यक्तित्व में अस्थिरता होगी और व्यक्तित्व में जितनी अधिक अस्थिरता होगी उतनी ही अनैतिकता होगी। आवेगात्मक अस्थिरता अनैतिकता की जननी है। इस प्रकार आवेगात्मकता, नैतिकता और व्यक्तित्व तीनों ही एक-दूसरे से जुड़े हैं। यहां यह स्मरण रखना चाहिए कि व्यक्ति के सन्दर्भ में न केवल आवेगों की तीव्रता पर विचार करना चाहिए वरन् उनकी प्रशस्तता और अप्रशस्तता पर भी विचार करना आवश्यक है। प्राचीन काल से ही व्यक्ति के आवेगों तथा मनोभावों के शुभत्व एवं अशुभत्व का सम्बन्ध हमारे व्यक्तित्व से जोड़ा गया है। आचार दर्शन में व्यक्तित्व के वर्गीकरण या श्रेणी-विभाजन का आधार व्यक्ति की प्रशस्त और अप्रशस्त मनोवृत्तियाँ ही हैं।

संदर्भ:-

1. विशेषावश्यकभाष्य, 2668-2671
2. तुम अनन्तशक्ति के स्रोत हो, पृ. 47

3. अभिधान राजेन्द्र कोश, खण्ड 3, पृ.395
4. भगवती सूत्र, 12.5.2
5. अंगुत्तरनिकाय, 3.130
6. भगवती सूत्र, 12.43
7. भगवती सूत्र, 12.24
8. भगवती सूत्र, 15.5.5
9. तुलना कीजिए- जीवनवृत्ति और मृत्युवृत्ति (फ्रायड)
10. अभिधानराजेन्द्र कोश, खण्ड 4, पृ. 2161
11. अभिधानराजेन्द्र कोश, खण्ड 4, पृ. 2161
12. अभिधानराजेन्द्र कोश, खण्ड 7, पृ. 1157
13. अभिधानराजेन्द्र कोश, खण्ड 6, पृ. 467
14. श्रमण आवश्यक सूत्र- भयसूत्र
15. जैन साइकोलॉजी, पृ. 131-134
16. तुम अनन्त शक्ति के स्रोत हो, पृ. 47
17. दशवैकालिक, 8.37
18. वही, 8.38
19. योगशास्त्र, 4.10, 18
20. नैतिकता का गुरुत्वाकर्षण, पृ. 2
21. उत्तराध्ययन, 9.54
22. दशवैकालिक, 5.2.35
23. स्पीनोजा इन दी लाईट ऑफ वेदान्त, पृ. 266
24. स्पीनोजा नीति, 4.7
25. दशवैकालिक, पृ. 8.39
26. (अ) नियमसार, 115 (ब) योगशास्त्र, 4.23
27. धम्मपद, 223
28. महाभारत, उद्योग पर्व-उद्धृत धम्मपद भूमिका
29. नियमसार, 81
30. सूत्रकृतांग, 1.6.26
31. धम्मपद, 9-10
32. संयुत्तनिकाय, 3.3.3
33. संयुत्तनिकाय, 40.13.1
34. सुत्तनिपात, 7.1
35. सुत्तनिपात, 6.14
36. छान्दोग्य उपनिषद्, 7.26.2
37. महाभारत शांतिपर्व, 244.3
38. गीता, 16.4
39. गीता, 16.4
40. गीता, 16.21-22
41. गीता, 7.15
42. गीता, 5.23

-निदेशक, प्राच्य विद्यापीठ, शाजापुर (म.प्र.)

शरीर एवं मित्र जीवाणु

श्री पी. शिखरमल सुराणा

1. हमारी चमड़ी में हमेशा पुरानी कोशिकाएँ मरती रहती हैं और नई कोशिकाएँ बनती रहती हैं। अगर इन मरी हुई कोशिकाओं को जीवाणु अपना भोजन बनाएं तो इनका हमारे शरीर पर ही सड़ने का खतरा बना रहता है। यही नहीं, इनको खाने के लालच में रोगाणु भी आ सकते हैं। मित्र रोगाणु उन्हें घर बनाने से रोकते हैं।
 2. जीवाणु हमारी चमड़ी के सफाई कर्मचारी ही नहीं, पहरेदार भी हैं। अगर ये हमें सफाई और पहरेदारी का बिल भेजने लगें तो शायद ही हमें इनकी असली कीमत पता लगे, या तब, जब ये हड़ताल कर दें। लेकिन जीवाणु अपना काम सतत करते रहते हैं। चाहे हम उन्हें जानें या न जानें।
 3. एक शोध से पता चला कि हमारी चमड़ी पर ही रहने वाला एक वायरस मुहांसों के बैक्टीरिया को पनपने नहीं देता है। स्पष्ट है कि कई सूक्ष्म मित्र हमारी पहरेदारी करते हैं और हमें इनका बोध तक नहीं है। विज्ञान और शोध की दुनिया में मित्र जीवाणुओं के प्रति राग और रुचि हाल ही में आई है।
 4. धरती पर जीवन का सबसे व्यापक प्रकार सूक्ष्म जीवाणु हैं। चाहे वनस्पति हों या प्राणी, जीवाणुओं के बिना किसी का जीवन नहीं चल सकता। पौधे जमीन से अपना खाना मिट्टी में मौजूद जीवाणुओं के बिना नहीं निकाल सकते। मरे हुए पौधे और पशु के शरीर जीवाणुओं के बिना वापस खाद नहीं बन सकते।
 5. जीवन-लीला की सबसे पुरानी, बुनियादी इकाई जीवाणु ही हैं। यह कहना गलत नहीं होगा कि
- असल में यह दुनिया सूक्ष्म जीवों की ही है, जिसमें हम हाल ही में आए हैं, दो-चार दिनों के मेहमानों की तरह। हमारे (शरीर के) विलुप्त होने के बाद भी यह दुनिया उन्हीं की होगी।
 6. समुद्र तल ही नहीं, समुद्र तल के कई सौ फुट नीचे तक ऐसी जीवाणु प्रजातियाँ मिलीं जो बिना ऑक्सीजन के जीती हैं।
 7. पृथ्वी की 72 फीसदी सतह पर समुद्र है। उसके तल और तल के नीचे कितने जीवाणु रहते हैं, यह अकल्पनीय है। अनुमान है कि हमारे ग्रह पर कुल जीवों में से एक-तिहाई समुद्र की गहराई के नीचे रहते हैं।
 8. अगर ब्रह्मा की तरह हरे-नीले बैक्टीरिया एक नई दुनिया बना सकते हैं, तो महेश की तरह जीवाणु उसे तहस-नहस भी कर सकते हैं। परन्तु अधिकतर समय तो वे विष्णु और लक्ष्मी के रूप में दुनिया को चलाते हैं, उनका संरक्षण करते हैं।
 9. जीवाणुओं की महत्ता का इससे बड़ा कोई प्रमाण नहीं हो सकता है कि उनका महत्त्व हमारे माता-पिता से मिले वंशानुगत तत्त्व यानी डी.एन.ए. जितना माना जाने लगा है।
 10. हमारे शरीर के चार खास ठिकाने जीवाणुओं का अड्डा होते हैं। ये हैं- चमड़ी, जननेन्द्रिय, नाक और पूरा श्वास तंत्र, और मुँह से होते हुए पाचन तंत्र। इनकी सबसे घनी बस्ती हमारी आंत में होती है, जहाँ करोड़ों जीवाणु हमारे भोजन से जरा-सा हिस्सा लेकर अपना भरण-पोषण करते हैं।

(सोपान जोशी कृत 'जल, थल, मल' पुस्तक से साभार)

-राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न
हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर (राज.)

क्रोध, मान, माया एवं लोभ के पर्यायार्थक शब्दों का विवेचन

डॉ. दिलीप धींग

संसार और संसार की समस्याओं का मूल है कर्म और कर्म का मूल है - कषाय।¹ प्रेम, सरलता, निश्चलता और निरासक्ति जैसे सद्गुण कषायों के द्वारा हरण कर लिये जाते हैं। कषाय मानव को विपन्न बनाकर पतन के गर्त में गिरा देते हैं और लम्बे समय तक उसे वहीं रखते हैं। दशवैकालिक सूत्र (8/37) में कहा गया है -

कोहं माणं च मायं च लोभं च पाववद्भुगं।

वमे चत्तारि दोसे उ इच्छंतो हियमप्पणो।

क्रोध, मान, माया व लोभ - ये चारों कषाय जीवन में पाप और सन्ताप बढ़ाते हैं। अपना भला चाहने वालों को इनका त्याग कर देना चाहिये। क्योंकि क्रोध प्रीति का नाश करता है, मान विनय को नष्ट करता है, कपट मित्रता का नाश करता है और लोभ इन सबका नाश कर देता है।² आचार्य शिवार्य ने तो यहाँ तक कहा कि वात, पित्त आदि विकारों से मानव इतना उन्मत्त (विक्षिप्त) नहीं होता जितना वह कषायों से होता है।³ आचार्य भद्रबाहु कहते हैं - ऋण को थोड़ा, घाव को छोटा, आग को तनिक और कषायों को अल्प नहीं मानना चाहिये, क्योंकि ये थोड़े ही बहुत हो जाते हैं।⁴ जैन परम्परा के आचार पक्ष में कषाय-त्याग का अत्यधिक महत्त्व रहा। कषाय-त्याग को मुख्य मानने से समाज में धार्मिक अन्धविश्वासों व कर्मकाण्डों पर चोट हुई। आचार्य हरिभद्र ने कहा - किसी पंथ या वाद में मानव का कल्याण नहीं है, कल्याण तो कषायों को छोड़ने में है।⁵ यह कथन साम्प्रदायिक, सामाजिक व मानवीय एकता की राह प्रशस्त करने के साथ ही धर्म के आडम्बर-मुक्त स्वरूप का प्रतिपादन करता है। किसी भी प्रकार की साधना, उपासना या जप-तप की आराधना हो, सबका मुख्य लक्ष्य है- कषायों को क्षीण

करना। प्रत्येक कषाय और उनके पर्यायार्थक शब्दों के बारे में संक्षिप्त चर्चा यहाँ की जा रही है।

क्रोध :

क्रोध प्रथम कषाय है और यह धर्म के प्रथम चरण क्षमा को भारी नुकसान पहुँचाता है। उत्तराध्ययन सूत्र में क्रोध को भयंकर अग्नि कहा गया है।⁶ क्रोध की आग में सहिष्णुता, दया, सत्य, शील, संतोष, तप, संयम, ज्ञान आदि सद्गुण जलकर भस्म हो जाते हैं।⁷ प्राचीन प्राकृत ग्रन्थ ऋषिभाषित में कहा गया है-

कोहेण अप्यं डहती परं च,

अत्थं च धम्मं च तहेव कामं।

तिव्वं य वेरं पि करंति कोधा,

अधमं गतिं वा वि उर्विति कोहा।⁸

क्रोध स्वयं को जलाता है, दूसरों को जलाता है। यह धर्म, अर्थ और काम को जलाता है। तीव्र वैर कराने वाला क्रोध जीवन के पतन का कारण है। आचारांग में कहा गया है कि क्रोध आयु को नष्ट करता है।⁹ व्यक्ति स्वयं क्रोध नहीं करे, यह एक पक्ष है। साथ ही यह भी आवश्यक है कि वह दूसरों के क्रोध का निमित्त भी न बने। भगवती आराधना में क्रोध की हानियाँ बताते हुए कहा गया है कि क्रोधग्रस्त मानव का वर्ण नीला पड़ जाता है, वह हतप्रभ हो जाता है तथा उसका सौन्दर्य नष्ट हो जाता है। व्यग्रता और बेचैनी से उसे शीतकाल में भी प्यास लगने लग जाती है। वह पिशाच-ग्रस्त मनुष्य की तरह काँपने लगता है। क्रोध दुश्मन का उपकार करता है तथा परिवारजनों, मित्रों व अपनों के लिए समस्या का प्रत्यक्ष कारण बनता है।¹⁰ भगवती सूत्र¹¹ में क्रोध के दस पर्यायार्थक शब्द, नाम,

रूप या भेद बताये गये हैं -

1. **क्रोध (कोह)** - गुस्सा करना, आग बबूला हो जाना आदि आवेश की सामान्य प्रवृत्तियाँ क्रोध है। प्रायः सभी प्रकार की आवेशजन्य प्रवृत्तियों और अभिव्यक्तियों के लिए 'क्रोध' शब्द का प्रयोग किया जाता है।
2. **कोप (कोव)** - क्रोध उत्पन्न होने के उपरान्त अपने स्वभाव से विचलित हो जाना कोप है। आचार्य अभयदेव के अनुसार क्रोध के उदय को अधिक अभिव्यक्त नहीं करना कोप है।¹² बोलचाल में इसे कुपित होना या नाराज होना भी कहा जाता है।
3. **रोष (रोस)** - रुष्ट होना या रूठ जाना, रूठे हुए रहना, नाराजगी जताना, आवेशपूर्ण स्थिति में रहना और आँखें दिखाना रोष है। 'क्रोध की परम्परा'¹³ को भी रोष कहा गया है।
4. **दोष/द्वेष (दोस)** - प्राकृत शब्द 'दोस' के यहाँ तीन अर्थ अभीष्ट हैं - द्वेष, दोष और द्रोह।¹⁴ स्व-पर से द्वेष या अप्रीति रखना। स्वयं पर अथवा दूसरों पर दोषारोपण करना। स्वयं पर दोषारोपण या क्रोध करते हुए व्यक्ति आत्महत्या कर लेता है। कभी-कभी दूसरों पर आरोप लगाते हुए भी व्यक्ति आत्महत्या कर लेता है। इससे कौटुम्बिक और सामाजिक गौरव नष्ट होता है।
5. **अक्षमा (अखमा)** - किसी के द्वारा किये हुए अपराध या भूल को सहन नहीं करना अक्षमा है। दूसरों की गलती या भूल को माफ नहीं करना अक्षमा है। अक्षमा से प्रतिशोध की भावना पनपती है। अक्षमा से वैर की परम्परा कायम रहती है।
6. **संज्वलन (संजलण)** - बार-बार क्रोध की आग में जलना संज्वलन है। ईर्ष्या करना और मत्सरभाव रखना भी संज्वलन है। इससे व्यक्ति और परिवार की खुशियाँ खत्म हो जाती हैं।
7. **कलह** - वैर बढ़ाने वाला व्यवहार और वचन-

प्रयोग करना कलह या क्लेश है। अनुचित, अप्रिय, मर्मभेदी, कर्कश भाषा-प्रयोग, वाक्-युद्ध आदि के माध्यम से तनावपूर्ण स्थिति निर्मित करना कलह है।

8. **चाण्डिक्य (चांडिक्य)** - क्रोध का बीभत्स रूप चाण्डिक्य है। अति क्रोध की अवस्था में सिर पीटना, बाल नोंचना आदि चाण्डिक्य है। रौद्र रूप धारण करना चाण्डिक्य है।
9. **भण्डन (भंडण)** - किसी पर हाथ उठाना, हाथापाई करना, लात लगाना, काया से अनुचित व्यवहार करना, लाठी, पत्थर या हथियार से प्रहार करना आदि भण्डन हैं।
10. **विवाद** - जैसे आग को प्रज्वलित रखने के लिए ईंधन डाला जाता है, वैसे ही झगड़े को कायम रखने के लिए अण्ट-शण्ट बोलना, गाली-गलौज करना, कुतर्क करना, अनावश्यक बहस करना आदि विवाद के रूप हैं। विवाद से संवाद और सौहार्द नष्ट हो जाता है।

कसायपाहुड में भी क्रोध के दस रूपों का वर्णन है, जिसमें चाण्डिक्य एवं मंडन के स्थान पर 'वृद्धि' (क्रोध बढ़ाना) एवं 'झंझा' (तीव्र संक्लेश) शब्द उपलब्ध होते हैं।¹⁵ क्रोध के इन दस रूपों के सन्दर्भ में कह सकते हैं कि क्रोध नहीं करने वाला -

1. अपनी अपरिमित प्राण ऊर्जा बचा लेता है। तन-मन से स्वस्थ रहता है।
2. सहिष्णु, धैर्यवान, विवेकवान तथा विचारपूर्वक कार्य करने वाला होता है।
3. सबका प्रिय तथा सबके आदर का पात्र बन जाता है।
4. अच्छी निर्णय क्षमता वाला और दूरदर्शी होता है।
5. पारिवारिक विग्रह और क्लेश से बचा रहता है।

क्रोध नहीं करने वाला व्यक्ति स्वयं विकास करता है; साथ ही अपने परिवार, व्यवसाय, संघ, समाज और इनसे जुड़े व्यक्तियों के विकास का कारण बनता है।

मान :

अमीरी जब मान पर आरूढ़ हो जाती है, तो पूंजीवाद, साम्राज्यवाद, वर्गवाद आदि के दुष्परिणाम समाज को भोगने पड़ते हैं। अभिमान के वश हो व्यक्ति अपने आर्थिक और गैर-आर्थिक वैभव का अनुचित प्रदर्शन करता है तथा जाने-अनजाने में दूसरों का तिरस्कार करता है। ऐसा प्रदर्शन हमारी सामाजिक संरचना को विद्रूप बनाने में निमित्त बनता है। मद में चूर व्यक्ति अपने वैभव-प्रदर्शन से उत्पन्न होने वाले वैयक्तिक व सामाजिक दुष्प्रभावों की कोई चिन्ता नहीं करता है। भगवान महावीर अहंकार को अज्ञान का द्योतक मानते हैं।¹⁶ वे व्यक्ति के जातीय और कौटुम्बिक अहंकार को अनुचित ठहराते हुए कहते हैं - न तस्स जाती व कुलं व ताणं, नण्णत्थ विज्जाचरणं सुचिण्णं।¹⁷ कुल और जाति के अहंकार से कुछ भी हासिल नहीं होता है। विद्या (ज्ञान) और सदाचरण मनुष्य की श्रेष्ठता के प्रतीक हैं तथा ये दुर्गति से रक्षा करने में समर्थ हैं। जो निरभिमानी है, वह ज्ञान, यश व सम्पत्ति प्राप्त करता है और अपना प्रत्येक कार्य सिद्ध करता है।¹⁸ भगवती सूत्र¹⁹ में मान के बारह पर्यायार्थक शब्द, नाम, रूप या भेद बताये गये हैं -

1. मान (माण)- अभिमान करना। स्वयं को अच्छा, ऊँचा और श्रेष्ठ समझना और दूसरों को बुरा, नीचा और हीन समझना मान है।
2. मद- आठ प्रकार के मद बताये गये हैं - जाति, लाभ, कुल, ऐश्वर्य, बल, रूप, तप और ज्ञान।²⁰ इन आठ मर्दों में अन्य प्रकार के मद भी सम्मिलित किये जा सकते हैं, जैसे - पद, अमीरी, सत्ता, शिक्षा, उच्चाचार, कीर्ति आदि। अपनी ऐसी अतिरिक्तताओं के अहंकार में जाने-अनजाने डूबे रहना मद है। प्राकृत में मद के लिए 'मय' शब्द भी प्रयुक्त होता है। मय का एक अर्थ होता है- नशा और मत्तता।²¹ वस्तुतः मान एक नशा ही है, जो व्यक्ति को मत्त (प्रमत्त) बनाता है।

3. दर्प (दप्प)- घमण्ड में चूर होकर किसी के साथ अवमाननापूर्ण अनुचित व्यवहार करना दर्प है।
4. स्तम्भ (थंभ)- स्तम्भ यानी खंभा। अभिमान-वश खंभे की तरह टस से मस नहीं होना स्तम्भ है। जिद्दीपना, हठीलापन, अकड़पन, कठोरता आदि स्तम्भ के रूप हैं।
5. गर्व (गव्व)- देश, कुल, जाति आदि का अहंकार करना गर्व है। गर्व में सामूहिक, सामुदायिक या वर्गीय मान की अभिव्यक्ति होती है।
6. अत्युत्क्रोश/आत्मोत्कर्ष (अतुक्कोस)- खुद की प्रशंसा में डींगें हाँकना। आत्मप्रशंसा करना और दूसरों को नीचा दिखाना। स्वयं को दूसरों से उत्कृष्ट मानना या बताना।
7. परपरिवाद (परपरिवाए)- परनिन्दा करना। प्राकृत शब्द 'परपरिवाए' का एक अर्थ परपरिपात भी किया जाता है।²² जिसका आशय है, लोगों की दृष्टि में दूसरों को गिराना अथवा मानवश किसी के उच्चगुणों से उसे च्युत कर देना।
8. उत्कर्ष (उक्कास)- अभिमानपूर्वक अपनी समृद्धि, क्षमता, विद्वत्ता आदि का प्रदर्शन करना। बेहद खर्चीले विवाह समारोह तथा अन्य आयोजन इसी के रूप हैं।
9. अपकर्ष (अवक्कास)- दूसरों को तुच्छ बताना तथा किसी को उसकी योग्यता से कम आँकना।²³
10. उन्नत (उन्नए)- नम्रता की जगह नम्रता नहीं दिखाना। गुणों तथा गुणियों का अनादर करना। सत्ता-सम्पत्ति वालों का आदर करना। मूलपाठ में प्रयुक्त 'उन्नए' शब्द का दूसरा अर्थ 'उन्नय' भी होता है।²⁴ उन्नय का आशय है, अभिमानवश न्याय-नीति के विरुद्ध आचरण करना।
11. उन्नाय (उन्नाम)- वन्दनीय को वन्दन नहीं

करना। सम्माननीय को यथेष्ट सम्मान नहीं देना। अपने को नमस्कार करने वाले के प्रति मानवश उपेक्षा बरतना।

12. दुर्नाम (दुन्नाम)— विनय के योग्य व्यक्ति का विधिपूर्वक विनय नहीं करते हुए आधा-अधूरा झुकना या अनुचित तरीके से नमस्कार करना दुर्नाम है।

मान के इन एक दर्जन नामों से यह पता चलता है कि व्यक्ति अपने जीवन में जाने-अनजाने में किस प्रकार तरह-तरह से मान-कषाय का पोषण करता रहता है। जो अहंकारी और घमण्डी होता है, वह योग्य व्यक्तियों की योग्यता, सलाह, स्नेह, सेवा व सच्चे आदर से वंचित रहता है।

माया :

माया के चार अर्थ हैं - छल, भ्रम, संसार और धन। आध्यात्मिक दृष्टि से संसार और धन भी भ्रम है। मानव इस संसार के मायाजाल में अटक जाता है, भटक जाता है। अन्ततः वह अपने आपको ठगा-सा महसूस करता है। इस प्रकार कहीं परवंचना है तो कहीं आत्मवंचना। क्रोध आदि दूसरे कषाय बाहर से भी दृष्टिगत हो सकते हैं, लेकिन माया का एकाएक अनुमान लगाना संभव नहीं होता है। इसीलिए माया को मानव-मन में छुपा शल्य (काँटा) कहा गया है। विश्वास और मैत्री के सम्बन्ध मायाचार से टूट जाते हैं। भगवती आराधना में कहा गया है कि सच्चाण सहस्साणि वि, माया एक्का वि नासेदि²⁵ एक कपट हजारों सत्त्यों को नष्ट कर डालता है। मौजूदा बाजारवाद में मायाचार पसरा हुआ है। अण्डे को शाकाहारी कहना अब्बल दर्जे का मायाचार, झूठ और भाषिक छल है। व्यवसाय-जगत में अनेक मिथ्या और कपटपूर्ण विज्ञापन मानव के स्वास्थ्य और बजट को चौपट कर देते हैं। अनेक विज्ञापनों ने समाज में वस्तुओं के उपभोग की एक अनावश्यक होड़ाहोड़ी पैदा कर दी है। मायाचार झूठ का सहारा लेता है। ऐसे माया-मृषावाद से समाज में लोभ-लालच की

दुष्प्रवृत्तियाँ बढ़ती हैं।²⁶ एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को मायाजाल में फँसा कर दूसरे से अनुचित लाभ प्राप्त करना चाहता है, उसे ठगना चाहता है। इस प्रकार माया बहुत ही चालाकी से दूसरे कषायों को उकसाती और पोषित करती है। भगवती सूत्र²⁷ में माया के पन्द्रह पर्यायार्थक, एकार्थक शब्द, नाम, रूप या भेद बताये गये हैं—

1. **माया**— छल, कपट, धोखा, ठगाई, चालबाजियाँ और चालाकियाँ।
2. **उपधि (उवही)**— ठगने के लिए किसी के पास जाने का गलत इरादा रखना उपधि है। 'उवही' के अन्य अर्थ हैं - उपाधि और उपकरण।²⁸ माया को पुष्ट करने के तामझाम संयोजित करना उवही है।
3. **निकृति (नियडी)**— पूर्वकृत माया को छिपाने के लिए नई माया करना। विश्वासघात करना।
4. **वल्य**— ठगने के लिए बात को घुमा-फिराकर कहना। तथ्यों को तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत करना। गोल-मोल वचन-प्रयोग करना। भाषागत कपट करना।
5. **गहन (गहण)**— छलने के लिए गूढ़ भाषा का प्रयोग करना। भ्रामक या रहस्यमय आचरण करना।
6. **नूम (णूम)**— 'णूम' प्राकृत का देश्य शब्द है। इसका आशय है— ढकना, छिपाना, प्रच्छन्न स्थान, अंधकार।²⁹ किसी के साथ छल करने के लिए वस्तुओं या तथ्यों को ढकना-छिपाना। कपटपूर्वक किसी को अंधकार में रखना अर्थात् बताने योग्य बात नहीं बताना। साजिश या षड्यंत्र रचना।
7. **कल्क (कक्क)**— छलपूर्वक हिंसा करना अथवा दूसरों को हिंसा के लिए दुष्प्रेरित करना। पापकारी या हिंसक कार्य करते हुए छल करना।
8. **कुरूपा (कुरूए)**— अभद्र व्यवहार के साथ मायाचार करना। किसी को मायाजाल में फँसाकर

ठगाई करना।

9. **जिह्मता (जिह्म)**— किसी को ठगने के लिए मन्थर या टेढ़ी गति से कार्य करना, विलम्ब से कार्य करना।
10. **किल्बिष (किब्बिस)**— 'किब्बिस' का आशय है - अधमता, अधम प्राणी या मलिन चित्त का व्यक्ति। मायाचार के लिए निम्न स्तर के कार्य या हरकतें करना, कुचेष्टा करना किल्बिष माया है।
11. **आदरणता (आधरणता)**— किसी को ठगने के लिए उसका आदर करना। ऐसा आचरण या वेष अपनाना, जिससे किसी को आसानी से ठगा जा सके।
12. **गूहनता (गूहनया)**— किसी के साथ मायाचार करने के लिए अपनी असलियत, खोटी आदतें, पाप या करतूतें छिपाना।
13. **वंचकता (वंचणया)**— सामान्य जीवन-व्यवहार में बात-बात में छलपूर्ण आचरण करना। दूसरों को धोखा देना और खुद को भी धोखा देना।
14. **प्रतिकुंचनता (पलिउंचणया)**— किसी के सहज-सरल वचन या व्यवहार का कपट से गलत अर्थ लगाना।
15. **सातियोग (सातिजोग)**— अच्छी वस्तु में खराब वस्तु मिलाना। मिलावट करना। व्यवसाय जगत में मिलावटखोरी कपट है, मायाचार है।

माया के इन नामों से स्पष्ट होता है कि माया बहुत ठगिनी और बहुरूपिणी होती है। मायाचारी वचनबद्ध और सच्चा नहीं होता है, इसलिए विश्वसनीय नहीं होता है। वह स्वयं द्वारा किये वादों से छल, झूठ आदि का सहारा लेकर तरकीब से मुकर जाता है। वह माया के सहारे दूसरे कषायों और दोषों को पोषित करता है।

लोभ :

लाभ अर्थशास्त्र का प्रेरक तत्त्व है; लोभ दुष्प्रेरक तत्त्व है। लाभ में साधन-शुद्धि का विवेक रखा

जाता है। लोभ साधन-शुद्धि की फिक्र नहीं करने देता है। अर्थ-नीति को अनीति में बदलने में लोभ की मुख्य भूमिका है। लोभ की वजह से दुनिया भर में आर्थिक घोटाले, भ्रष्टाचार, झगड़े-टण्टे, हिंसा, युद्ध आदि होते हैं। लोभ और तृष्णा के वशीभूत इंसान ने पर्यावरण और संस्कृति को अपूरणीय नुकसान पहुँचाया है। संसार की स्थायी भलाई और विश्व-शान्ति के लिए मानव में निर्लोभता की चेतना को जागृत करना बेहद जरूरी है। लाभ से लोभ बढ़ता है।³⁰ स्वर्ण-रजत और कीमती वस्तुओं के ढेर भी लोभी की तृष्णा को शान्त करने में असमर्थ हैं।³¹ भगवान महावीर लोभ पर अंकुश के लिए सन्तोष की पावन प्रेरणा देते हैं³² सन्तोष और साधन-शुद्धि के लिए वे गृहस्थ के लिए इच्छा-परिमाण और दिशा-परिमाण व्रतों का विधान करते हैं।³³ लोभ के विभिन्न रूपों को लक्ष्य करते हुए भगवती सूत्र³⁴ में लोभ के सोलह पर्यायार्थक, समानार्थक शब्द, नाम, रूप या भेद बताये गये हैं -

1. **लोभ**— मोहनीय कर्म के उदय से चित्त में उदय होने वाली संग्रहवृत्ति। वस्तुओं के प्रति ममत्व और लालच।
2. **इच्छा**— चल-अचल, सचित्त-अचित्त वस्तुओं और भोग-सामग्रियों को प्राप्त करने की अभिलाषा।
3. **मूर्च्छा (मुच्छा)**— प्राप्त वस्तु के प्रति तीव्र राग और उसके रक्षण की निरन्तर चिन्ता।
4. **कांक्षा (कंखा)**— अप्राप्त वस्तु को प्राप्त करने की सघन आकांक्षा।
5. **गृद्धि (गेही)**— प्राप्त-अप्राप्त वस्तुओं और सामग्रियों के प्रति गहरी आसक्ति।
6. **तृष्णा (तण्हा)**— प्राप्त पदार्थ का व्यय या वियोग नहीं हो, ऐसी इच्छा। अतृप्त लालसा। अधिक प्राप्त करने की इच्छा।
7. **भिध्या (भिज्झा)**— एकाग्रतापूर्वक वस्तुओं के संग्रह में लगे रहना। अपनी लोभपूर्ति के लिए दूसरे

का शोषण करना।

8. **अभिध्या (अभिज्ज्ञा)**— लोभजनित चित्त की व्यग्रता और चंचलता।
9. **आशंसना (आसासणता)**— पुत्र, शिष्य, प्रिय या परिजन के लिए योग्यता के विपरीत पदार्थ या पद की लालसा रखना, उसके लिए गलत अनुशंसा करना अथवा इस हेतु वरदान या आशीर्वाद की चाहत रखना।
10. **प्रार्थना (पत्थणता)**— लोभवश अनावश्यक और अनुचित याचना करना।
11. **लालपनता (लालप्पणता)**— अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए अनावश्यक अनुनय-विनय करना।
12. **कामाशा (कामासा)**— मनोहर रूप, शब्द, सौन्दर्य आदि की कामना करना।
13. **भोगाशा (भोगासा)**— सांसारिक और शारीरिक सुखों को भोगने की कामना करना।
14. **जीविताशा (जीवियासा)**— परिग्रह के संरक्षण और संवर्धन के लिए जीने की लालसा। इसका लक्षणार्थ है—मरणशय्या पर भी लोभ नहीं त्यागना।
15. **मरणाशा (मरणासा)**— व्यवसाय में हानि होने या लोभ-लालच की पूर्ति नहीं होने पर मरने की इच्छा करना।
16. **नन्दिराग**— वस्तुओं की प्रचुरता और समृद्धि का हर्षातिरेक करना। अपनी अमीरी पर अत्यन्त राग, मान और आसक्ति रखना। गरीब और गरीबी का तिरस्कार करना।

लोभ के इन नामों में लोभ के अनेक ऐसे रूप भी उजागर होते हैं, जिन्हें प्रायः लोभ नहीं माना जाता है, लेकिन गहराई से विचार करने पर वे लोभ की ही विविध परिणतियाँ होती हैं। केवल भौतिक वस्तुओं की लालसा ही लोभ नहीं है, तरह-तरह की सांसारिक तृष्णाएँ भी लोभ-कषाय है। अपरिग्रह-व्रत के समुचित पालन और न्यासिता (ट्रस्टीशिप) की अवधारणा को साकार करने

के लिए लोभ-कषाय का त्याग आवश्यक है।

कषायों का पारस्परिक सम्बन्ध :

चारों कषायों (क्रोध, मान, माया एवं लोभ) के 53 नामों के विविध अर्थ, अभिप्राय और आशय जानने से जीवन और जगत में कषायों की व्यापकता का पता चलता है। इन पर्यायार्थक शब्दों के ज्ञान से हर कषाय को सूक्ष्म रूप में जानने-समझने की दृष्टि विकसित होती है। इन पर्यायार्थक शब्दों से यह भी पता चलता है कि एक कषाय दूसरे कषाय या कषायों का सहायक और पोषक बनता है। वस्तुतः सभी कषाय एक-दूसरे के पोषक और सहयोगी होते हैं। सदुणों और दुर्गुणों का कुल या परिवार होता है। कषायों का भी अपना परिवार है। एक कषाय पनपेगा तो दूसरे कषाय भी पनपेंगे। कोई यदि किसी एक कषाय को भी भलीभाँति देखकर छोड़ना चाहेगा तो अन्य कषाय भी छूटने लगेंगे। आचारांग सूत्र³⁵ में इसी बात को अभिव्यक्त किया गया है कि जो क्रोधदर्शी होता है, वह मानदर्शी होता है। जो मानदर्शी होता है, वह मायादर्शी होता है। जो मायादर्शी होता है, वह लोभदर्शी होता है। इस प्रकार जो चारों कषायों और उनके परिणामों को उनके समग्र अर्थों में देख सकता है, वह क्रम से संसार के दुःख को देख सकता है और उससे मुक्त होने की साधना कर सकता है।

कषायमुक्ति व सम्पन्नता :

चारों ही कषाय अनेक प्रकट और अप्रकट रूपों में व्यक्ति और समाज को घेरे हुए रहते हैं। कषाय विपन्नता, विषमता और विपत्तियों को न्यौता देते हैं, जबकि अकषाय से सम्पन्नता, समता और सम्पत्ति में अभिवृद्धि होती है। कषायों को परास्त करने के लिए क्षमा, मृदुता (विनय), ऋजुता (सरलता) और सन्तोष जैसे सदुणों को धारण करना चाहिये।³⁶ ये सदुण जीवन को रचनात्मक, सकारात्मक, साधनाशील और सत्पुरुषार्थी बनाते हैं। प्रत्येक व्यक्ति सम्पन्नता की दिशा में आगे बढ़ना चाहता है। वह सम्पन्नता महज धन-साधन तक ही सीमित नहीं होनी चाहिये। जीवन के

सभी क्षेत्रों में व्यक्तित्व, कृतित्व और साधना का विमल आलोक प्रस्फुटित होना चाहिये। ऐसे सरल, सहज, सजग, सफल, सार्थक और आलोकमय बहु आयामी जीवन के लिए कषायों का परित्याग परम आवश्यक है। तनाव-मुक्ति का सशक्त आधार भी कषाय-मुक्ति है। कषाय-मुक्त व्यक्ति व्यवस्थित और प्रबंधन में कुशल होता है। कषाय-मुक्त जीवन में प्रेम, सुख, शान्ति, ऋद्धि, सिद्धि, समृद्धि और खुशियों के रंग-बिरंगे फूल खिल उठते हैं। कषाय-मुक्ति से जीवन और जगत् का सर्वमंगल जुड़ा हुआ है। कषाय-मुक्ति से ही मुक्ति का परम लक्ष्य पाया जा सकता है।

सन्दर्भ

1. संसारस्स उ मूलं कम्मं, तस्स वि हुंति य कसाया।
- दशवैकालिक निर्युक्ति, 189
2. कोहो पीइं पणासेइ माणो विणयनासणो।
माया मित्ताणि नासेइ लोहो सव्वविणासणो।
-दशवैकालिक सूत्र, 8.38
3. होदि कसाउम्मत्तो, उम्मत्तो तध ण पित्तउम्मत्तो।
- भगवती आराधना, 1331
4. अणथोवं वणथोवं, अग्गीथोवं कसायथोवं च।
न हु भे वीससियव्वं, थोवं पि हु तं बहु होइ।
-आवश्यक निर्युक्ति, 120
5. नासाम्बरत्त्वे, न सिताम्बरत्त्वे,
न तर्कवादे न च तत्त्ववादे।
न पक्षसेवाश्रयणेन मुक्तिः,
कषायमुक्तिः किल मुक्तिरेव।
-संबोध समवर्तिका, गाथा 2
6. संपज्जलिया घोरा अग्गी चिड्ढइ
- उत्तराध्ययन सूत्र, 23.50
7. क्रुद्धो सच्चं सीलं विणयं हणेज्ज
- प्रश्नव्याकरण सूत्र, 2.2
8. इसिभासियाइं, 36.13
9. आचारांग सूत्र, 4.3.136
10. रोसाइद्धो णीलो हदप्पभो अरदि अग्गिसंसत्तो।
सीदे वि णिवाइज्जदि वेवदि य गहोवसिद्धो वा।
-भगवती आराधना 1360, कोधो सत्तुगुणकरो, भ.
आ.-1365

11. कोहे कोवे रोसे दोसे अखमा संजलणे कलहे चंडिक्के भंडणे विवादे -व्याख्याप्रज्ञप्ति, बारहवाँ शतक, 'अतिपात' नामक पाँचवाँ उद्देशक, सूत्र 3
12. भगवती सूत्र, अभयदेववृत्ति, शतक 12, उद्देशक 5, सूत्र 2
13. देखें, युवाचार्य मधुकरमुनि के संयोजन में पं. शोभाचंद्र भारिल्ल द्वारा संपादित व्याख्याप्रज्ञप्ति, तृतीय खण्ड, पृ. 172
14. पाइअ-सद्द-महण्णवो, पृष्ठ 482
15. कसायपाहुड चूर्णि, अध्ययन 9, गाथा 86 का अनुवाद। डॉ. सागरमल जैन के संपादन में साध्वी डॉ. प्रमुदिताश्री द्वारा लिखित 'जैन दर्शन में व्यवहार के प्रेरक तत्व', भाग-7, पृष्ठ 25 पर उद्धृत।
16. बालजणे पगम्भती - सूत्रकृतांग 1.2.21. अन्नं जणं खिसति बालपण्णे - सूत्रकृतांग 1.13.14
17. सूत्रकृतांग, प्रथम श्रुतस्कंध, तेरहवाँ अध्ययन, ग्यारहवीं गाथा।
18. सयणस्स जणस्स पिओ, णरो अमाणी सदा हवदि लोए। णाणं जसं च अत्थं, लभदि सकज्जं च साहेदि।- भगवती आराधना 1379
19. माणे मदे दप्पे थंभे गव्वे अत्तुक्कोसे परपरिवाए उक्कासे अवक्कासे उन्नए उन्नामे दुन्नामे।- व्याख्याप्रज्ञप्ति, बारहवाँ शतक, 'अतिपात' नामक पाँचवाँ उद्देशक, सूत्र 4
20. योगशास्त्र 4.13
21. पाइअ-सद्द-महण्णवो, पृष्ठ 672
22. द्रष्टव्य, युवाचार्य मधुकरमुनि द्वारा सम्पादित व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र, पृष्ठ 173
23. बिन्दु 8-9 में उत्कर्ष और अपकर्ष का अर्थ सामान्य नहीं होकर 'मान-कषाय' से जुड़ा है।
24. द्रष्टव्य, युवाचार्य मधुकरमुनि द्वारा सम्पादित व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र, पृष्ठ 173
25. भगवती आराधना, 1384
26. मायामोसं वड्ढई लोभदोसा।-उत्तराध्ययन सूत्र 32.30
27. माया उवही नियडी वलये गहणे णूमे कक्के कुरूए जिम्हे किब्बिसे आयरणता गूहणया वंचणया पलिउंचणया सातिजोगे।
- व्याख्याप्रज्ञप्ति, बारहवाँ शतक, 'अतिपात' नामक पाँचवाँ उद्देशक, सूत्र 5

28. देखें, स्थानांग सूत्र, स्थान 3, उपधि सूत्र, 94 एवं पाइअ-सद्-महण्णवो, पृष्ठ 181. आचारांग सूत्र (1.3.4.131) में 'उवधी' शब्द प्रयोग हुआ है। वहाँ कहा गया है कि जो सर्वद्रष्टा होते हैं, उनके उपधि नहीं होती है।
29. पाइअ-सद्-महण्णवो, पृष्ठ 420
30. जहा लाहो तहा लोहो, लाहा लोहो पवड्डई।
- उत्तराध्ययन सूत्र, 8.17
31. उत्तराध्ययन सूत्र, 9.48-49
32. लोभविजएणं संतोसं जणयइ।
-उत्तराध्ययन सूत्र, 29.70
33. आवश्यक सूत्र पाँचवां और छठा व्रत
34. लोभे इच्छा मुच्छा कंखा गेही तण्हा भिज्जा अभिज्जा आसासणता पत्थणता लालप्पणता कामासा भोगासा जीवियासा मरणासा नंदिरागे -व्याख्याप्रज्ञप्ति, बारहवां शतक, 'अतिपात' नामक पाँचवां उद्देशक, सूत्र 6
35. आचारांग सूत्र, प्रथम श्रुतस्कंध, तृतीय अध्ययन, चतुर्थ उद्देशक, सूत्र 130
36. दशवैकालिक सूत्र, 8.39 एवं नियमसार, गाथा 115
निदेशक : अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र
Sugan House, 18, Ramanuja Iyer Street,
Sowcarpet, Chennai - 600001 (T.N.)

परिवार अंक पर अभिमत

श्री अभयकुमार जैन (श्रीश्रीमाल)

जिनवाणी, मई माह का 'परिवार अंक' प्राप्त हुआ। मुखपृष्ठ पर अंकित परिवार के स्तम्भ स्नेहशीलता, सहनशीलता, मायारहितता एवं विवेक-शीलता बताए गए। वास्तव में इन्हीं पर परिवार टिका हुआ है और होना भी चाहिए। पृष्ठ 10 पर पूज्य गुरुदेव द्वारा बताये गये परिवार की समरसता : प्रत्येक बिन्दु (शीर्षक) में सामाजिकता के साथ धार्मिकता का संदेश है। प्रो. वीरसागरजी का "दाम्पत्य जीवन का मंगल सूत्र" बहुत अच्छा लगा। पति-पत्नी विचार करे- ऐसे लेखों को पढ़े, चिन्तन-मनन करे तो दाम्पत्य जीवन सुखी-मंगलमय हो सकता है। इस प्रकार के लेख निश्चित रूप से जीवन की गति बदलकर प्रगति की राह बना देते हैं। लेखक महोदय को साधुवाद। अंत में डॉ. श्वेता जी जैन का 'बच्चों के लालन-पालन में जैन दृष्टि' बहुत ही अच्छा लगा। लेख में जिन बातों का विवेचन किया- संतुलन बनाए रखना, छोटी-छोटी बातों को ध्यान में रखना, बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए जरूरी है। वर्तमान समस्याएँ तथा उनका जो समाधान प्रस्तुत किया है वह निःसंदेह विचारणीय व मननीय तथा पालन करने योग्य है। यह पूरा अंक ही बहुत अच्छा लगा। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इस प्रकार के अंक प्रकाशित करना समाज व राष्ट्र की सच्ची सेवा है।

विचार-मुक्ता

महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा.

1. इच्छा पैदा करना सरल है, शान्त करना अत्यन्त कठिन है।
2. इच्छा कम होगी तो शान्ति बढ़ेगी।
3. धर्म क्रिया करना सरल है, पाप छोड़ना कठिन है।
4. ईर्ष्या की आग जीवन के बाग को जला देती है।
5. प्रशंसा और संपत्ति हमेशा कम लगती है।
6. प्रशंसा के पीछे भागना सबसे बड़ी कमजोरी है।
7. शरीर की गुलामी के कारण सत्य को देखते हुए भी आँख मूँद ली जाती है।
8. प्रेरणा हेतु कहे गये कठोर वचन भी सुभाषित हैं।
9. पाप का बंधन भीतर की वृत्ति के साथ है।
10. मन में टेढ़ापन, वचन में कड़वापन, काया में उतावलापन हितकारी नहीं होता।

-संकलन : कस्तूरचन्द बाफणा, जलगाँव (महा.)

कषाय का स्वरूप

श्री सम्पतराज चौधरी

सुकवि श्री सम्पतराजजी चौधरी, दिल्ली द्वारा यह कृति 'दोहा छन्द' में निबद्ध की गई है।-सम्पादक

मंगलाचरण

कषाय तरु के बीज को, जिसने दिया जलाय।
ऐसे अरिहन्तदेव को, वंदन शीश नमाय॥1॥

कषाय का स्वरूप

आत्म-गुणों को कृश करे, अरु संसार बढ़ाय।
ऐसे मन के भाव को, ज्ञानी कहे कषाय॥2॥
कर्म-खेत में बो रहे, राग-द्वेष के बीज।
क्रोध-मान-माया उगे, उपजे लोभ अजीज॥3॥
कषाय भाव ही सींचते, पुनर्जन्म की पौधा।
जीव अनादि से फिरे, शाश्वत सुख अवरोध॥4॥
इसीलिए प्रभु ने कहा, जग का मूल कषाय।
वश में सारे जीव हैं, लगते सब निरुपाय॥5॥
मिथ्यामोह में जो रहे, उसमें पले कषाय।
पलते जहाँ कषाय हों, मिथ्यामोह न जाय॥6॥
इक-दूजे पर जी रहे, भव-भव करे बिगाड़।
सुख जो चाहो आपना, उनका मूल उखाड़॥7॥
क्रोध-मान दोनों यहाँ, द्वेष रूप हैं जान।
अहित भाव 'पर' के बसे, दुर्गति का सोपान॥8॥
माया-लोभ को जानलो, राग-भाव की खान।
मोह-भाव छूटे नहीं, मिले न जग से त्राण॥9॥
क्रोध-मान-माया अरु, लोभ रूप हैं चार।
देकर के दृष्टान्त को, किया कथन व्यवहार॥10॥
सबकी अवस्था चार हैं, प्रथम शिला का लेख।
फिर पृथ्वी और धूल में, अरु जल में ज्यूं रेख॥11॥
प्रथम घात दर्शन करे, दूजी देश चारित्र।
तीजी सकल चारित्र फिर, यथाख्यात चारित्र॥12॥
कषाय कारण बन्ध का, स्थिति और अनुभाग।
जन्म-मरण नहीं बन्द हो, बिना किये परित्याग॥13॥

कषाय के अंग

1. क्रोध

आग जलाये दृश्य को, क्रोध विलक्षण आग।
अन्तर अरु बाहिर जले, इसका हो परित्याग॥14॥
अन्धकार तो दृश्य का, करता है उपघात।
अजब अंधेरा क्रोध है, सूझ-बूझ बुझ जात॥15॥
हानि करना अन्य की, क्रोधी का अभिप्राय।
तप्त लोह जब हाथ ले, निज का हाथ जलाय॥16॥
आवे जब भी क्रोध तो, खोवे अपना होश।
सद्बुद्धि जावे तभी, अन्त रहे अफसोस॥17॥
तप का तरुवर देत है, मुक्तिफल उपहार।
क्रोध ताप से जल उठे, बिन फल हो बेकार॥18॥
क्रोध तपस्या का कहा, एक अजीरन रोग।
आत्म-साधना भ्रष्ट हो, कर इसका उपयोग॥19॥
विष बेली को सींचता, भव-भव में है क्रोध।
विषफल खाने से कभी, मिले नहीं संबोध॥20॥

2. मान

जाति-कुल-ऐश्वर्य-बल, इसका करते मान।
नीच-गोत्र का बन्ध हो, परभव में अपमान॥21॥
आत्म-प्रशंसा से भरा, जो करता निज गान।
मिथ्या-मद में चूर हो, खोवे जग सम्मान॥22॥
'ज्ञान-ध्यान में मैं बड़ा, मानी की ये सोच।
सत् जन के अपमान में, करे नहीं संकोच॥23॥
ज्ञान-तप चारित्र का, जो करता है मान।
तीनों उसके नष्ट हों, हो न कभी कल्याण॥24॥
सन्मति को डसता सदा, अहंकार का साँप।
विषज मान से ग्रस्त हो, फिर करता संताप॥25॥
श्रेष्ठता के दम्भ में, ऊँचे पद आसीन।
तत्त्वज्ञान पावे नहीं, विनय-गुणों से हीन॥26॥

अभिमानि सुनता नहीं, गुरुजन की कोई बात।
बिना सुने करता रहे, निज का ही आघात।।27।।
मानी को मिलता नहीं, मित्र-स्वजन का साथ।
मिथ्या अपनी शान में, रहता सदा अनाथ।।28।।
मान कषाय क्लुषित करे, अर्जित यश-सम्मान।
इस भव पर भव में मिले, जन-जन से अपमान।।29।।
मद्यपान के बाद ज्युं, सुध न रहने पाया।
मान सुरा का रूप है, उनमें अन्तर नांय।।30।।

3. माया

धर्म कभी टिकता नहीं, कपट हिये के मांय।
यश-वैभव भी ना टिके, कुछ भी करे उपाय।।31।।
कथनी-करनी वचन में, नहीं साम्य का भास।
कपटी उस जन का कोई, करे नहीं विश्वास।।32।।
कमलपत्र सम मुख करे, चन्दन सम हो बोल।
करने में उलटा करे, ये कपटी की खोल।।33।।
द्विजिह्वी ज्युं होत है, मायावी इन्सान।
करता मुख पर गान है, पीछे चुगली खान।।34।।
मायाचारी का नहीं, करते कोई विश्वास।
सेवा-पूजा भी करे, करले कोई प्रयास।।35।।
माया से मैली करे, उपदेशक मतिमान।
लघुता उसको प्राप्त हो, हो न कभी उत्थान।।36।।
बाहिर परिग्रह त्याग दे, फिर पावे श्रुतज्ञान।
कपटवृत्ति तजते नहीं, दुर्गति हो आसान।।37।।

4. लोभ

लोभ पाप का मूल है, सब गुण करता नाश।
पराभूत जो लोभ से, तृप्त न होती प्यास।।38।।

धन के अर्जन के लिए, सब कुछ करे उपाय।
फिर भी लोभी को नहीं, होती सुख की आय।।39।।
लोभीजन करते नहीं, धन का सद् उपयोग।
अन्त समय चलता चले, बिना किये उपभोग।।40।।
लोभ कहा मन का गरल, करे बुद्धि का नाश।
आतम-हित के काज की जगे न कोई प्यास।।41।।
लोभ लाभ से है बढ़े, तृष्णा का नहीं अन्त।
नष्ट करे सद्गुण सभी, कहते श्री भगवन्त।।42।।

कषाय त्याग की प्रेरणा

क्रोध प्रीति का क्षय करे, मान विनय को दूर।
माया मैत्री को हरे, लोभ बढ़ा नासूर।।43।।
मृदु बन जीतो मान को, क्षमा-शांति से क्रोध।
ऋजुता से माया हरो, मन तुष्टि से लोभ।।44।।
कषाय भावना क्षय हुई, तप की क्या दरकार।
कषाय भाव छूटे नहीं, करे न तप निस्तार।।45।।
कषाय भावों से हुई, भव की वृद्धि जान।
नरकादि के दुःख मिले, मुक्ति में व्यवधान।।46।।
सम्यग्दर्शन ना मिले, मिले नहीं सद्ज्ञान।
नष्ट करे चारित्र को, कषाय भाव शैतान।।47।।
इच्छाओं से मुक्त हो, करो तत्त्व श्रद्धान।
कषाय भाव सारे तजो, जो चाहो कल्याण।।48।।
कषाय मुक्ति से मिले, मुक्ति रमा का साथ।
शाश्वत सुख में लीन हो, पूर्ण हुए परमार्थ।।49।।
श्रद्धा से गुरु देशना, मन में ले जो उतार।
जिन पथ में आगे बढ़े, पहुँचे भव के पार।।50।।

-14, वरदान अपार्टमेंट्स,

64, इन्द्रप्रस्थ एक्सटेंशन, दिल्ली-110092

जिनवाणी पर अभिमत

डॉ. समीरमल मारू

जिनवाणी के मई 2017 के अंक में डॉ. नरेन्द्रजी भानावत का आलेख “बालकों के लिए अधिकार, बड़ों के कर्तव्य” पढ़ा। इसमें पिता के गुणों का राष्ट्रीयता और सम्मानमर्यादा के साथ ही बच्चों के प्रति माँ और परिवार का दायित्व के सम्बन्ध में विशेष विचारणीय पहलू की व्याख्या बड़ी सुन्दर लगी। साथ ही भौतिकता की चकाचौंध और अधिक दौड़ की उलझन भी कलात्मक रूप से प्रस्तुत की गई। “ऐसा अपना घर हो” श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. की रचना भी सार्थक लगी। सभी महत्त्वपूर्ण विषयों पर जो लेख लिखे, बहुत ही पसन्द आए तथा उपयोगी लगे। -बी-151, बसन्त निवास, यशोधर्म नगर, रोड़ नं. 4, जनता कॉलोनी, मन्दासौर (म.प्र.)

कषाय-मुक्ति का सोपान : ध्यान

श्रीमती अभिलाषा हीरावत

सभी दृश्य जीवों में मनुष्य ही सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। मनुष्य को ही प्रकृति ने ऐसी शक्ति दी है कि वह स्वमुखी होकर अपने भीतर की सच्चाइयों को साक्षीभाव से देख सकता है, समता में स्थापित होकर नए कर्म संस्कार बनाने बंद कर सकता है और पुराने कर्मों का क्षय कर मुक्त हो सकता है। अन्य कोई प्राणी ऐसा करने में असमर्थ है, अतः मनुष्य अपनी इस अद्भुत शक्ति को पहचाने और अन्तर्मन की गहराइयों के संगृहीत विकारों को दूर कर ले, इसी में उसके जीवन की सार्थकता है।

संसार में मनचाही अनचाही होती ही रहती है। जीवन में हर्ष विषाद, सुख-दुःख के अवसर आते ही रहते हैं, इन स्थितियों में मानसिक सन्तुलन और समता बनाए रखने में जीवन की सफलता है।

ध्यान-साधना जीवन के संघर्षों से पलायन न करके बल्कि जीवन के अभिमुख होकर समस्याओं का सामना करना सिखाती है। 'दशाश्रुतस्कन्ध' की 5 वीं दशा (चित्त समाधि) की पहली गाथा-

“ओयं चित्तं समादाय ज्ञाणं समुप्पज्जइ।

धम्मं ठिओ अविमणो निव्वाणभिगच्छइ।।”

अर्थात् राग-द्वेष रहित निर्मल चित्त को धारण करने पर एकाग्रता रूप ध्यान उत्पन्न होता है और शंका रहित धर्म में स्थित होकर निर्वाण को प्राप्त करता है।

ध्यान साधना एक ऐसी विधि है जिससे साधक का मन, काया पर होने वाली संवेदनाओं को साक्षीभाव से, तटस्थ भाव से अनुभव करता है। यह सत्य दर्शन की अर्थात् वर्तमान क्षण के यथार्थ को जानने की कला है, अन्तर्मन की यात्रा है। मन में कोई विकार जागे तो फलस्वरूप शरीर में उत्पन्न संवेदनाओं के प्रति राग या द्वेष न जगाकर समता भाव पुष्ट करना होता है।

इस साधना विधि के मुख्य दो पक्ष हैं- पहला सजगता, यानी चित्त की ऐसी एकाग्रता कि वह गहराई तक सच्चाई जान ले, शरीर और मन में जो हो रहा है उसे जान ले। दूसरा समता यानी जानकर जरा भी विचलित न हो अर्थात् हर अवस्था में हो रही अनुभूतियों को द्रष्टाभाव से देखे, ज्ञाता भाव से जाने, हर परिस्थिति में अपना संतुलन बनाए रखे, यह समझते हुए कि जो अनुभूति हो रही है वह स्थायी नहीं है, स्थिर नहीं है, शाश्वत नहीं है। इतना ही नहीं सूक्ष्म स्तर पर देखते हैं कि प्रतिक्षण परिवर्तन हो रहा है। तन, मन में कहीं कुछ ऐसा नहीं है जो स्थिर है, अचल है। जरा सा प्रकम्पन भी है तो इस बात का द्योतक है कि उसमें कोई परिवर्तन हो रहा है, कहीं कोई स्थायित्व नहीं है सारा इन्द्रिय जगत् अनित्य है, नश्वर है, भंगुर है।

वीर स्तुति की चौथी गाथा में कहा गया है- 'से णिच्चणित्तेहि समिक्ख पत्ते' अर्थात् नित्य और अनित्य को देखकर समीक्षा कर....।

जब तक जीवित हैं संस्कारों की धारा चलेगी ही, इन्द्रियाँ भी अपना काम करेंगी ही, स्पर्श भी होगा ही, संवेदना भी होगी ही। जब-जब संवेदना होगी पुराने स्वभाव के कारण, सुखद होगी तो राग की, दुःखद होगी तो द्वेष की तृष्णा जागेगी। बस यहीं रोक लगानी है.....।

जब-जब वेदना जागेगी, प्रज्ञा से समीक्षा करें। हर वेदना प्रज्ञा ही जगाए अनित्य है, नश्वर है। इस पर राग द्वेष मत कर।

मुक्ति मार्ग के अवलम्बी साधकों को विकारों की अभिव्यक्ति से सदैव सतर्क रहना चाहिए, इसे जीतने का उपाय बड़ा सरल है और वह यह कि प्रतिक्षण सचेत सजग रहे। जब भी क्रोध, अहंकार, ईर्ष्या, कामवासना, राग आदि कोई भी विकार जागे तो मात्र क्षण भर जीव

सचेत होकर केवल इस तथ्य को जान ले कि मुझमें यह विकार उठ रहा है, बस इतना देखना, जानना मात्र होने से ही विकास छुई-मुई के पत्तों की तरह दुबक जाता है, जैसे था ही नहीं। पर लोग देखते कब हैं? जैसे ही कोई विकार उठता है उस विकार के अधीन हो जाते हैं और उस समय जागरूकता का नामोनिशान भी नहीं होता। सिर्फ वही विकार सिर पर सवार रहता है और सिर विकार रूपी पानी के नीचे डूबा रहता है। बहुत समय बीतने के बाद होश आता है तब पछताता है। जागरूक रहने का हथियार तभी कारगर होता है जबकि दुश्मन धावा बोलकर सिर पर चढ़ रहा हो। जागरूक रहकर यथावत् सत्य को देखने का अभ्यास ही ध्यान साधना है। गीता में इसी को स्थितप्रज्ञता कहा है। बौद्धदर्शन में इसे विपश्यना साधना के नाम से जाना जाता है। वीतराग ध्यान-साधना में भी यही पद्धति निहित है।

कोई भी व्यक्ति दुःखी, व्याकुल होता है तो अपने दुःख का कारण बाहर देखता है, बाहर का व्यक्ति वस्तु स्थिति घटना आदि को इसका कारण मानता है। किन्तु यदि ध्यान साधक है तो कारण भीतर देखता है और पाता है कि मैंने अपने मन की निर्मलता खो दी, मन में विकार जगाया इसलिए व्याकुल हुआ। वह यह भी समझता है कि ऐसा इसलिए हुआ कि बाहर कोई बात अनचाही हो गई या मनचाही नहीं हुई, इसलिए मन मैला कर लिया। सजग साधक को यह समझते देर नहीं लगती कि मनचाही के प्रति राग, तृष्णा, आसक्ति बहुत अधिक है। मनचाही के प्रति आसक्ति इसलिए है कि मैं के प्रति, अहं के प्रति बहुत गहरा राग, आसक्ति है। यह अहंभाव ही है जिसके प्रति जागी हुई आसक्ति इतनी व्याकुलता पैदा करती है। ध्यान साधना के साधक को संवेदनाओं के आधार पर प्रत्यक्ष साक्षात्कार करते-करते अन्तर्मन तक सच्चाई समझ में आने लगती है।

अन्तर्मन की गहराइयों में जो कुछ एकत्र कर रखा है उसे बाहर निकालने की साधना है ध्यान। तीव्र इच्छा यानी तृष्णा अपने आपमें व्याकुलता है। तृष्णा अर्थात् जो अपने पास है उससे तृप्ति नहीं है और जो पास

में नहीं है उसे पाने के लिए व्याकुल है। साधना करते-करते स्वयं ही अनुभव होता है कि तृष्णा कैसे जगती है। शरीर में जो पीड़ा जगती है वह इतनी दुखदाई नहीं है लेकिन उसे दूर करने की तृष्णा कई गुना दुःखदायी है। जीवन भर यही तो करते आए हैं जो अप्रिय है उसे दूर धकेलना चाहते हैं, जो प्रिय है उसे अपनी ओर समेटना चाहते हैं। तृष्णा का दुःख इस धकेलने, समेटने का ही दुःख है। उत्तराध्ययन सूत्र के अध्ययन 9.15 में कहा गया है- 'पियं न विज्जइ किंचि, अप्पियं पि न विज्जइ।' अर्थात् साधक के लिए कुछ भी न प्रिय होता है न अप्रिय होता है।

जन्म-जन्मान्तरों से मन पर संस्कारों, विकारों की जो परतें पड़ी हैं और जो नए-नए विकार बनाते रहने का जो स्वभाव बन गया है, उससे छुटकारा पाने के लिए ध्यान साधना का निरन्तर अभ्यास नितान्त आवश्यक है।

उत्तराध्ययन सूत्र के ही अध्ययन 4.10 में जिनवाणी कहती है-

'खिप्पं ण सक्केइ विवेगमेउं,
तम्हा समुट्ठाय पहाय कामे।
समिच्च लोयं समया-महेसी,
आयाणुरक्खी व चरेऽप्पमत्तो।।'

अर्थात् कोई भी व्यक्ति आत्मविवेक झटपट नहीं प्राप्त कर सकता, इसके लिए काम सुख का त्याग करके शरीर रूपी लोक का समभाव से, सम्यक् रूप से अवलोकन करे। आत्मगुण के साधक को प्रमाद रहित, सजगतापूर्वक विचरण (आत्म निरीक्षण) करने के लिए कहा गया है।

ध्यान साधना के अभ्यास से साधक का बाहरी चित्त (Conscious Mind) जो पहले सदा बाहरी आलम्बनों में उलझा रहता था वह अब साथ-साथ भीतर की ओर भी झाँकने लगता है और शरीर पर होने वाली संवेदनाओं के प्रति सजग रहने लगता है। अन्तःचित्त (Un-conscious Mind) जो इन शारीरिक

संवेदनाओं के प्रति सजग तो रहता था, पर उनके प्रति सतत अंध प्रतिक्रिया करने का स्वभाव बनाए बैठा था और बाहरी चित्त पर स्थापित, बुद्धि की, कोई बात चाहे वो कितनी भी अच्छी क्यों न हो, उसे सुनने को तैयार नहीं था, वह अब साधना द्वारा बुद्धि के अलावा प्रज्ञा की भी बात सुनने लगता है। सारा शरीर प्रपंच एवं सारा चित्त प्रपंच कितना नश्वर कितना भंगुर है, इसे अनुभूति जन्म प्रज्ञा से जानता हुआ, उसके प्रति राग और द्वेष की प्रतिक्रिया न कर समता में स्थित रहने लगता है। इस तरह ध्यान साधना के अभ्यास से साधक ऊपरी चित्त के विकारों को ही नहीं धो लेता बल्कि अन्तर्मन की गहराइयों तक, ना जाने कब से संचित, संगृहीत सुषुप्त (Sleeping) विकार हैं उन्हें भी उन्मूलित कर लेता है। सम्पूर्ण मानस को प्रज्ञा के बल पर विकार मुक्त कर लेता है और यह सब होता है, शरीर पर होने वाली सतत सुखद, दुःखद अथवा असुखद, अदुःखद संवेदनाओं को तटस्थ भाव से देखते-देखते।

ध्यान साधना का जो काम है वह सीधा सरल सा है। मन की एकाग्रता के लिए साँस को देखना शुरू किया, साँस को देखते-देखते साँस के स्पर्श को जाना, फिर संवेदना सामने आने लगी, संवेदनाओं को देखने लगे, फिर शरीर की भीतरी व सूक्ष्म अवस्थाओं की अनभूति होने लगी। यह निरन्तर अभ्यास से ही सम्भव है। अनुभूतियों की गहराइयों में जाने के लिए निरन्तरता अत्यन्त आवश्यक है।

ध्यान साधना में मन के विकारों को निकालने के लिए मन को देखते हैं। जैसे ही मन में या चित्त धारा में कोई विकार हुआ वैसे ही शरीर में कोई जैव रासायनिक (Bio Chemical) प्रतिक्रिया होने लगती है, शरीर की धमनियों में कोई स्राव बहने लगता है जिससे शरीर में विशेष प्रकार की संवेदना होने लगती है। जैसे- क्रोध आया तो गर्मी शुरु हो जाएगी, धड़कन बढ़ जाएगी, तनाव होगा आदि। ऐसे ही मन में जो भी विकार जागेगा वह शरीर पर कोई न कोई संवेदना प्रकट करेगा। ध्यान साधना में साधक उस संवेदना को तटस्थ भाव से देखना

सीखता है। साधक देखता है कि इस आस्रव में जो संवेदना हुई वह मन के विकार को बल प्रदान करती है, हर विकार चित्त की समता को नष्ट करता है और चित्त को व्याकुल बनाता है। इस दुष्चक्र को तोड़ने के लिए ध्यान साधना हमारे शरीर पर होने वाली संवेदनाओं के अनित्य स्वभाव को समता से देखना सिखाती है। जहाँ पहले इन संवेदनाओं ने जीव को आसक्त बना दिया था उनके प्रति भोक्ताभाव प्रबल हो गया था, वहीं अब इन अनित्य संवेदनाओं को तटस्थभाव से देखने का अभ्यास शुरु हो जाता है।

पहले जिन संवेदनाओं के प्रति जागने वाले विकारों की गहरी प्रतिक्रिया मन पर पत्थर की लकीर बनाया करती थी, वही अब बालू रेत की लकीर सी बनने लगती है और समय पाकर पानी की लकीर बनाकर रह जाती है।

इस प्रकार, साधक उन आस्रवों की आसक्तियों से पूर्णतया मुक्त हो जाता है, विकार नहीं जगते तो आस्रव नहीं जगते, आस्रव नहीं जगते तो मोह मूढ़ता का नशा नहीं जगता। निर्विकार हो जाता है तो अनास्रव हो जाता है, जीवन्मुक्त हो जाता है सर्व दुःख मुक्त हो जाता है। मुख्य बात यह है कि विकार जगते ही उसे साक्षी भाव से देखकर उसकी शक्ति क्षीण कर दी जाए ताकि वह लम्बे समय तक चलकर गहराई में ना उतर सके।

ध्यान साधना किसी विशेष प्रकार की संवेदना के अनुभव के उद्देश्य से नहीं करते हैं, अपितु चित्त को सभी कर्मसंस्कारों से मुक्त बनाने के लिए करते हैं। यदि हम किसी संवेदना के साथ प्रतिक्रिया करते हैं तो अपना दुःख ही बढ़ाते हैं यदि समता में रहते हैं तो कुछ कर्म संस्कारों की निर्जरा हो जाती है। प्रत्येक संवेदना अनित्य स्वभावी होती है देर सवेर समाप्त हो ही जाती है। बिना किसी प्रतिक्रिया के हम राग-द्वेष का, मोह, अज्ञान का उन्मूलन करते हैं। कोई भी संवेदना अच्छी बुरी नहीं है। यदि हम समता में हैं तो हर संवेदना अच्छी है और हम समता खोते हैं तो हर संवेदना बुरी है। दशवैकालिक सूत्र

में 8.59 में कहा गया है- “अणिच्चं तेसिं विण्णाय, परिणामं पुग्गलाण उ’। अर्थात् पुद्गलों (संवेदनाओं) के बदलते हुए परिणमन को जानकर मनोज्ञ विषय (प्रिय संवेदनाओं) में राग नहीं करें। इसके आगे की गाथा 8.60 में कहा है- ‘पोग्गलाणं परिणामं तेसिं णच्चा जहा तथा’। अर्थात् पुद्गलों/ संवेदनाओं को जैसी है वैसी जानकर तृष्णा (कामना) रहित होकर राग-द्वेष न करे।

इसी प्रकार उत्तराध्ययन सूत्र 4.11-12 में राग-द्वेष के त्याग का निर्देश दिया गया है-

मुहुं मुहुं मोहगुणे जयंतं,
अणेग रूवा समणं चरंतं।
फासा फुसंति असमंजसं च,
ण तेसु भिक्खू मणसा पउस्से॥

अर्थात् साधक को साधना करते हुए अनेक प्रकार की प्रतिकूल संवेदनाओं का स्पर्श होता है, साधक उन अमनोज्ञ प्रतिकूल स्पर्श पर द्वेष न करे।

‘मंदा य फासा बहुलोहणिज्जा, तहप्पगारेषु मणं ण कुज्जा।’ इस गाथा में साधक को अनुकूल स्पर्शों के प्रति राग नहीं करना, कहा गया है। इस साधना के द्वारा न जाने कौनसे संचित कर्म उभर कर सतह पर आए और उसकी उदीरणा हो। जिस प्रकार का कर्म संस्कार होगा, उदीरणा होने पर उसी प्रकार की संवेदना होगी, वह सुखद, दुःखद, सूक्ष्म, स्थूल कैसी भी हो सकती है। कौनसा संस्कार उभर कर आया, उससे नहीं मापा जा सकता कि प्रगति हो रही है या नहीं। संवेदनाओं को प्रिय या अप्रिय माना तो प्रगति नहीं हो रही है।

कभी-कभी संवेदना के प्रति सजगता तो बढ़ जाती है परन्तु समता को महत्त्व नहीं देने से बड़ी हानि होती है, इसलिए सावधान रहना चाहिए कि हम जितने संवेदनशील हो उतनी ही समता भी पुष्ट हो। किसी भी विकार से व्याकुल व्यक्ति, यदि निरन्तर अभ्यास करता चला जाएगा तो पाएगा कि उसके विकार कम हो रहे हैं। यदि ऐसा नहीं है तो कहीं-न-कहीं साधक ध्यान करने की विधि में त्रुटि कर रहा है।

सतत अभ्यास द्वारा अपने को देखने की कला जितनी पुष्ट होती है उतनी ही स्वभाव का अंग बनती है और धीरे-धीरे ऐसी स्थिति आती है कि विकार जागते ही नहीं अथवा जागते हैं तो बहुत दीर्घ समय तक नहीं चल पाते हैं।

वीतराग ध्यान शिविर में दिए जाने वाले प्रशिक्षण के मुख्य तीन सोपान हैं-

1. ऐसे शारीरिक एवं वाचिक कर्मों से विरत रहो, जिनसे औरों की सुख शांति भंग होती हो। हमारे शारीरिक एवं वाचिक कर्म यदि ऐसे होंगे जिनसे विकारों का संवर्धन हो, तो हम विकार-मुक्ति का अभ्यास नहीं कर सकते। इसलिए शील की आचार संहिता इस अभ्यास का पहला महत्त्वपूर्ण सोपान है। पाँच अणुव्रत पालन (जीव हत्या, असत्य भाषण, चोरी, काम सम्बन्धी मिथ्याचार, परिग्रह से विरत) सप्त कुव्यसन त्याग, सदाचार का आचरण करना ये सभी शीलपालन निष्ठापूर्वक करने का आधार है। शील पालन के कारण मन कुछ हद तक शांत हो जाता है और आगे का काम करना संभव होता है।
2. अगला सोपान है इस चंचल मन को एक आलम्बन (साँस) पर लगा कर वश में करना। जितना हो सके उतना समय लगाकर मन को साँस पर टिकाने का अभ्यास करना होता है। यह साँस की कसरत नहीं है साँस का नियमन नहीं है। बल्कि नैसर्गिक साँस को देखना होता है। जैसा है वैसा, जैसा भीतर आ रहा हो, जैसा बाहर जा रहा हो। इस तरह मन और भी शांत हो जाता है और तीव्र विकारों से मन अभिभूत नहीं होता। साथ ही साथ मन एकाग्र हो जाता है, तीक्ष्ण हो जाता है, प्रज्ञा के काम के लायक हो जाता है।
3. शील एवं मन को वश में करने के यह दो सोपान अपने आप में आवश्यक हैं और लाभदायक भी हैं। लेकिन अगर हम तीसरा कदम नहीं उठायेंगे तो विकारों का दमन मात्र होकर रह जाएगा।

यह तीसरा कदम, तीसरा सोपान है, अपने बारे में सच्चाई को जान कर विकारों का निर्मूलन द्वारा मन की

शुद्धता। यही ध्यान साधना है- संवेदना के रूप में प्रकट होने वाले सतत परिवर्तनशील मन एवं शरीर के परस्पर सम्बन्ध को सुव्यवस्थित विधि से एवं समता के साथ देखते हुए अपने बारे में सच्चाई का अनुभव करना। अनित्यबोध की जागृति होना। आत्म निरीक्षण द्वारा आत्मशुद्धि ही ध्यान साधना है। जागरूक रहकर, तटस्थ भाव से, अनित्य स्वभावी संवेदनाओं, द्रष्टाभाव से देखना।

ध्यान साधना को बुद्धि विलास का विषय बनाने से कोई लाभ नहीं होता। पढ़ने-सुनने या चर्चा, परिचर्चा से बौद्धिक स्तर पर विषय समझ लिया जा सकता है। इससे कुछ प्रेरणा भी मिल सकती है, परन्तु वास्तविक लाभ अभ्यास करने में ही है। साधना को सैद्धान्तिक स्तर पर जान लेना पर्याप्त नहीं है। सतत अभ्यास की आवश्यकता है, जिसकी जितनी निरन्तरता रहेगी, उतनी गहराइयों में उतरता चला जाएगा। लेकिन

पुरानी आदत के अनुसार हम किसी भी काम में आवश्यक निरन्तरता देना ही नहीं चाहते। कोई काम कुछ देर कर लिया फिर छोड़ दिया। यदि साधना में भी यह बात होने लगी तो मन ऊपर सतह तक ही रह जाएगा। गहराइयों तक पहुँच ही नहीं पाएगा।

महापुरुष रास्ता बता सकते हैं, रास्ता स्वयं चलकर ही पार करना होगा सिर्फ एक या एक से अधिक शिविरों में सम्मिलित हो जाना ही सब कुछ नहीं है, यह तो जीवन भर का अभ्यास है। साधक को जीवन जीते रहना होगा, सतत सजग सचेत सतत प्रयत्नरत। अतः अदम्य उत्साह के साथ ध्यान साधना के मंगल पथ पर आगे बढ़ते चलें। हर फिसलन अगले कदम के लिए नई दृढ़ता और हर ठोकर लक्ष्य तक पहुँचने के लिए नई उमंग, नया उत्साह पैदा करने वाली हो। रुकें नहीं, चलते जाएँ, यही मंगल विधान है।-मुम्बई (मह.)

जिनवाणी का अतीत, वर्तमान और भविष्य

डॉ. लक्ष्मीचन्द जैन

1. हमारे राष्ट्र कवि स्व. श्री मैथिलीशरणजी गुप्त ने कहा है कि हमें अतीत के आधार पर वर्तमान को ध्यान में रखते हुए अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाना है।
2. जिनवाणी की हीरक यात्रा में बताया गया कि उसे सदैव अच्छे साहित्यिक सम्पादक मिले हैं। आचार्य शिरोमणि श्री हस्तीमलजी म.सा. की आगमिक प्रज्ञा का लाभ तो मिला ही है। वर्तमानाचार्य श्री हीरामुनिजी म.सा.,

उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. की साधना का भी वरदान प्राप्त है।

3. जिनवाणी भारत के भविष्य को सुधारने में लगी है। इसके लेख सदैव सम्प्रदायवाद से ऊपर उठे हुए रहे हैं। विशेषांकों की यात्रा भी सदैव सबके लिए पठनीय रही है। जिनवाणी का मैं भी साठ साल से पाठक हूँ।

-प्राचार्य, आदर्श विद्यालय, छोटी कसरवावद,
जिला-खरगोन (मध्यप्रदेश)

जिनवाणी पर अभिमत

श्री रमेश कुमार जैन

‘बाल जिनवाणी’ के समावेश से बच्चों की जिनवाणी पढ़ने में उत्सुकता बढ़ी है, जो कि संस्कार निर्माण हेतु आवश्यक एवं सराहनीय प्रयास है। जिनवाणी के जून 2017 के अंक में आपने श्री श्री रविशंकर, स्वामी रामसुखदासजी महाराज, श्री जे.डी. कृष्णामूर्ति आदि जैनेतर मनीषियों को स्थान देकर सहिष्णुता, व्यापकता एवं अनेकांतवाद का बहुत बड़ा संदेश दिया है। इससे जैन धर्म के सिद्धान्तों की सर्वत्र समाहितता पुष्ट होती है। डॉ. धर्मचन्द जैन का ‘आत्मस्वरूप का बोध’ जैन दर्शन का मर्म बताता है। -सेवानिवृत्त आई.ए.एस., जयपुर (राज.)

राग-द्वेष

डॉ. धर्मचन्द जैन

इष्ट वस्तु, व्यक्ति एवं परिस्थिति के प्रति आकर्षण का भाव राग है तथा अनिष्ट वस्तु, व्यक्ति एवं परिस्थिति के प्रति विकर्षण का भाव द्वेष है। ये राग-द्वेष हमारे पूर्व संस्कारों के अनुसार उद्बुद्ध होते हैं। जो व्यक्ति, वस्तु, परिस्थिति आदि हमें सुख के साधन प्रतीत होते हैं, अनुकूल लगते हैं, उनके प्रति राग भाव उत्पन्न होता है। इसके विपरीत जो वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति हमें दुःख एवं प्रतिकूलता के हेतु प्रतीत होते हैं उनके प्रति द्वेष भाव उत्पन्न होता है। हमारे द्वारा इष्ट वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति आदि का जब भी सम्पर्क होता है तो पूर्व संस्कारों (कर्म) के अनुसार राग-द्वेष के भाव प्रकट होते रहते हैं। राग-द्वेष भावों का प्रकट होना हम संसारी जीवों के अभ्यास में है। हम कब राग ग्रस्त एवं द्वेष-ग्रस्त हो जाते हैं प्रायः इसका हमें पता भी नहीं चलता है। जिस प्रकार हम निरन्तर श्वास लेने एवं उसे छोड़ने की क्रिया करते रहते हैं, किन्तु उससे अनभिज्ञ बने रहते हैं उसी प्रकार हम हमारे चित्त में उत्पन्न राग-द्वेष के भावों से अनभिज्ञ बने रहते हैं।

उत्तराध्ययन सूत्र में शब्द, रूप, गन्ध, रस, स्पर्श तथा भाव के मनोज्ञ होने पर उन्हें राग का हेतु तथा अमनोज्ञ होने पर द्वेष का हेतु कहा गया है - “**रागस्स हेउं समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु**” - उत्तराध्ययन 32.36

अर्थात् मन को अच्छा लगने वाला शब्दादि विषय राग का हेतु कहा गया है एवं मन को अप्रीतिकर लगने वाला शब्दादि विषय द्वेष का हेतु कहा गया है।

श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुरिन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, स्पर्शनेन्द्रिय तथा मन अपने-अपने शब्दादि विषयों को ग्रहण करते हैं। विषयों को ग्रहण करने मात्र से राग नहीं होता, इनके प्रति जब चित्त एवं चेतना का

आकर्षण होता है तथा उसमें प्रियता व अनुकूलता का अवभास होता है तब राग भाव प्रकट होता है। जब इन विषयों के प्रतिकूल एवं अप्रिय होने पर चित्त एवं चेतना का इनसे विकर्षण होता है तब द्वेष भाव उत्पन्न होता है। ये राग-द्वेष व्यक्ति को विषयों से बाँधते हैं इसलिए कर्मबंध के प्रमुख रूप से दो ही हेतु कहे गये हैं- ‘**रागो य दोसो वि य कम्मबीयं**’-उत्तराध्ययन 32.7

कर्म-बन्ध हमारी चेतना पर अंकित संस्कार है, जो राग-द्वेष अथवा कषाय के कारण अंकित होता है। यदि राग-द्वेष अथवा कषाय न हो तो कर्म-बंध नहीं हो सकता। राग-द्वेष के सद्भाव में जब विषयों के प्रति पुनः आकर्षण-विकर्षण होते हैं तो राग-द्वेष के संस्कार सुदृढ़ होते जाते हैं। राग-द्वेष की प्रवृत्ति को हम बुरा भी नहीं मानते हैं, क्योंकि इनके अभाव में हमें जीवन का स्वरूप ही प्रतीत नहीं होता है। राग-द्वेष दुःख के कारण बनते हैं, यही इनकी बुराई है। जिसके प्रति राग होता है, उसका संयोग वियोग में बदल जाये तो मनुष्य दुःख का अनुभव करता है। इसी प्रकार अनिष्ट वस्तु का संयोग न चाहने पर भी हो ही जाता है। अतः द्वेष दुःख का कारण बनता है। राग व्यक्ति को पराधीन भी बनाता है। जिसके प्रति राग होता है, व्यक्ति उससे सुख भोगने के लिए पराधीन हो जाता है। पराधीनता को सुख नहीं कहा जा सकता। राग व्यक्ति को सत्य से दूर भी ले जाता है क्योंकि तब व्यक्ति अपने प्रति निष्पक्ष एवं तटस्थ नहीं रह पाता। वह सुख की खोज बाहर करने लगता है, जो मिथ्यात्व का सूचक है। मनोज्ञ तथा इष्ट वस्तुओं में सुख मानना तथा अमनोज्ञ या अनिष्ट वस्तुओं में दुःख मानना एक प्रकार का मिथ्यात्व है। जब तक मिथ्यात्व रहता है तब तक व्यक्ति बाह्य वस्तु, व्यक्ति एवं परिस्थितियों को ही दुःख और सुख का स्रोत समझता रहता है। इसलिए

राग-द्वेष के चक्र की ओर न तो उसका ध्यान जाता है और न ही उनसे छूटने की भावना उत्पन्न होती है।

सुख एवं दुःख की उत्पत्ति मनुष्य की चेतना व चित्त में होती है। वस्तु में न सुख है और न दुःख। एक वस्तु किसी के लिए सुख का कारण बनती है तो दूसरे के लिए दुःख का। पड़ोसी के मकान की छत का गिरना मकान मालिक के लिए दुःख का कारण होता है और ईर्ष्यालु पड़ोसी के लिए सुख का कारण बन जाता है। मकान की छत का गिरना मकान मालिक के लिए प्रतिकूल परिस्थिति है और ईर्ष्यालु व्यक्ति के लिए अनुकूल परिस्थिति है। मकान की छत किसी प्राकृतिक कारण से अथवा दोषपूर्ण निर्माण से भी गिर सकती है, किन्तु अपने मन को सम्भालना उसे विचलित न होने देना तथा उस आपदा का सामना करने के लिए हिम्मत रखना मनुष्य के हाथ में है। यही मनुष्य की स्वतन्त्रता है।

आज प्रतिस्पर्धा का युग है। व्यापार में, अध्ययन में, पद-प्रतिष्ठा में, जमीन-जायदाद में कोई अपने से आगे निकल जाता है तो उसके प्रति द्वेष एवं ईर्ष्या उत्पन्न हो जाते हैं दूसरी ओर जो इन क्षेत्रों में हमारे लिए सहायक बनते हैं उनके प्रति आसक्ति और राग की उत्पत्ति होती है। अब व्यक्ति का सुख-दुःख इनके न्यूनाधिक होने पर झूलता रहता है। शेयर मार्केट ने तो मानो मनुष्य की नब्ज को पल-पल में ऊँचा-नीचा कर दिया है। अपने द्वारा क्रीत शेयरों का भाव चढ़ते ही खुशी छा जाती है और भाव घटते ही मायूसी आ जाती है। जिन व्यक्तियों के पास शेयर नहीं हैं, उनको भावों के घटने-बढ़ने से न सुख होता है न दुःख।

शीघ्र एवं तीव्र राग-द्वेषात्मक प्रतिक्रिया व्यक्तित्व का दोष है। विवेकशील व्यक्ति इन प्रतिक्रियाओं को कुछ सीमा तक नियन्त्रित कर लेता है। चतुर लोग बाहर से अपनी प्रतिक्रिया को राग-द्वेषात्मक रूप में व्यक्त नहीं करते, किन्तु भीतर में उसे सबल बनाए रखते हैं। ऐसे व्यक्ति कुशल राजनीतिज्ञ, कुशल व्यवसायी आदि तो बन सकते हैं, किन्तु दुःखमुक्त नहीं हो सकते। वे धोखा देने का अवसर ढूँढते रहते हैं। वे

सच्चे विवेकी नहीं होते, किन्तु अपना कार्य सिद्ध करने के लिए कुछ सीमा तक अपने व्यवहार में परिवर्तन कर लेते हैं। किन्तु उनके मन में छद्म या कपट का भाव रहता है, वे प्रगाढ़ बन्धन में बंधे रहते हैं तथा दूसरों को धोखा देने के कारण उनसे बटुआएँ प्राप्त करते हैं। दूसरे शब्दों में वैर-विरोध का विस्तार करते हैं।

धम्मपद में कहा है कि राग के समान कोई अग्नि नहीं है तथा द्वेष के समान कोई मल नहीं है- 'नत्थि रागसमो अग्नि, नत्थि दोससमो कलि' - धम्मपद 15.6

राग अपने शरीर, नाम, पद, प्रतिष्ठा आदि के प्रति भी होता है। राग बड़ा सूक्ष्म है, इसका पकड़ में आना तभी सम्भव है जब कोई समभावपूर्वक आत्मनिरीक्षण के प्रति अप्रमत्त हो। राग और द्वेष को स्वयं के द्वारा देखा जा सकता है। ध्यान-साधना में इसका प्रयोग एवं अभ्यास किया जा सकता है। जो अपने मन या चित्त को सूक्ष्म बनाकर नियमित श्वास-निःश्वास का प्रेक्षण करने में सक्षम होता है वह उत्पन्न राग-द्वेष का भी द्रष्टा बन जाता है। जब राग-द्वेष का कोई द्रष्टा बनता है तो वे चोर की भाँति दबे पाँव भाग जाते हैं। इसलिए समभावपूर्वक द्रष्टा बनने का जितना अभ्यास बढ़ता जायेगा तथा जितनी अप्रमत्तता आती जायेगी उतनी ही राग-द्वेष की सत्ता समाप्त होती जायेगी और स्वाभाविक सुख का अनुभव होता जायेगा।

राग-द्वेष मोहनीय कर्म से सम्बद्ध हैं। ये सम्पूर्ण चारित्र मोहनीय कर्म का प्रतिनिधित्व करते हैं। षट्खण्डागम की ध्वला टीका (पुस्तक 12 पृष्ठ 283) में माया, लोभ, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद, हास्य एवं रति को राग कहा गया है तथा क्रोध, मान, अरति, शोक, जुगुप्सा एवं भय को द्वेष के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया है। इस प्रकार राग एवं द्वेष में चारित्र मोहनीय कर्म की सभी प्रकृतियाँ समाविष्ट हो जाती हैं। राग, द्वेष एवं मोह शब्द का जब प्रयोग किया जाता है तो राग-द्वेष तो चारित्र मोहनीय के द्योतक होते हैं तथा मोह शब्द दर्शनमोहनीय को इंगित करता है। दर्शन मोहनीय में

प्रमुख मिथ्यात्वमोहनीय है। जब तक जीव के मिथ्यात्व रूपी दर्शन मोहनीय विद्यमान है तब तक उसके मन में राग-द्वेष को जीतने की भावना तीव्र नहीं होती, क्योंकि वह तब तक राग-द्वेष को बुरा समझने में सक्षम नहीं होता। इसलिए राग-द्वेष पर विजय प्राप्त करना कठिन प्रतीत होता है, किन्तु कोई वीतरागवाणी को सुनकर राग-द्वेष को बुरा मानता है एवं इन्हें जीतने के लिए उद्यत होता है, तो उसे सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हो सकती है।

यहाँ एक प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि राग के अन्तर्गत माया, लोभ, स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद, हास्य एवं रति का समावेश तो उचित है और इसी प्रकार द्वेष के अन्तर्गत अरति, शोक, जुगुप्सा एवं भय का समावेश भी समीचीन प्रतीत होता है, किन्तु क्रोध एवं मान को द्वेष के अन्तर्गत लेने का क्या कारण है? क्रोध तभी आता है जब प्रतिकूलता का अनुभव होता है, प्रतिकूलता के प्रति द्वेष उत्पन्न होता है अतः क्रोध भी द्वेषात्मक परिणति है। मान भी तभी होता है जब दूसरों के प्रति द्वेष हो, द्वेष के अभाव में मान का अस्तित्व नहीं रहता, फिर सबके प्रति आत्मीयता एवं प्रेम का अनुभव होता है।

राग एवं द्वेष का स्थान जब आत्मीयता, वात्सल्य, मैत्री आदि भाव ग्रहण कर लेते हैं तो राग-द्वेष में न्यूनता होती है। राग-द्वेष संकीर्ण व्यक्तित्व के द्योतक हैं तथा आत्मीयता, उदारता, वात्सल्य, मैत्री आदि से व्यक्ति अपने लिए एवं सबके लिए उपयोगी बनने से व्यापक हो जाता है। व्यक्ति को जीवन में कोई

न कोई रस चाहिए। राग एवं द्वेष का रस जहाँ घातक है, दुःख-द्वन्द्व एवं पराधीनता का कारण है वहाँ समभावपूर्वक आत्मीयता, मैत्री आदि के भाव व्यक्ति को ऐसी सरसता प्रदान करते हैं जिससे राग-द्वेष क्षीण होने लगते हैं। राग-द्वेष नकारात्मक भाव हैं तथा आत्मीयता, प्रीति आदि सकारात्मक भाव हैं। राग-द्वेष बुरे हैं, यह आत्मनिरीक्षण से विदित होने पर इनके समापन के लिए उद्यत हुआ जा सकता है।

राग एवं द्वेष का होना हमें स्वाभाविक लगता है। छोटे शिशु में भी राग-द्वेष की उपस्थिति रहती है। टॉफी एवं खिलौनों के प्रति उसका राग एवं उन्हें छीन लेने वाले के प्रति द्वेष होता है। यद्यपि शिशु का यह राग-द्वेष क्षणिक होता है, प्रगाढ़ नहीं होता। अतः वह शीघ्र ही सामान्य व्यवहार करने लगता है। इसी प्रकार हम यदि राग एवं द्वेष की प्रगाढ़ता को क्षीण करते जायेंगे तो हमें दुःख का अनुभव कम होता जाएगा एवं हमारी विवेक सम्मत निर्णय शक्ति अभिवृद्ध होती रहेगी। वस्तुतः राग एवं द्वेष के शमन से शान्ति एवं आनन्द का अनुभव होता है, जिसे विरले साधक ही अनुभव करते हैं। क्रोध, मान, माया एवं लोभ पर विजय प्राप्त करने के लिए मनोज्ञ के प्रति राग एवं अमनोज्ञ के प्रति द्वेष भाव पर विजय प्राप्त करना आवश्यक है। यह तभी सम्भव है जब मनुष्य की दृष्टि में बदलाव हो। वह क्षणिक वैषयिक सुखों के प्रति आकर्षण की अपेक्षा कषायों एवं दोषों के निराकरण के प्रति रुचिशील हो तो राग-द्वेष पर विजय प्राप्त करना सुकर हो सकता है। (जिनवाणी, दिसम्बर 2007 से गृहीत)

मन की स्थिरता

डॉ. ओ. पी. चपलोट 'सी.ए.'

जब व्यक्ति बहिर्मुख होता है तो मन पाँच इन्द्रियों के विषयों में दौड़ने लग जाता है। मन का इन्द्रियों के विषयों में रमण करना ही मन की चंचल अवस्था है। इन्द्रिय-विषयों में मन के रत रहने पर साधक साधना से दूर हो जाता है, इसीलिए साधक का साधना से पूर्व इन्द्रिय-विषयों पर नियंत्रण आवश्यक है। यह नियंत्रण त्याग-प्रत्याख्यान एवं निरन्तर प्रयासरत रहने पर ही संभव है एवं उस समय मन पर इनका प्रभाव नहीं पड़ता है। जब मन अन्तर्मुखी बनना चाहता है तो उसे बाह्य भटकन को छोड़कर भीतर जाना होता है। अपने भीतर झांकना होता है, भीतरी जगत् बाह्य दुनिया से अधिक विचित्र व रहस्यमय है। जैसे पानी स्थिर, स्वच्छ एवं शांत रहता है तभी उसमें वस्तु का स्पष्ट प्रतिबिम्ब हो सकता है वैसे ही मन की स्थिरता, निर्मलता एवं शान्तता से ही कुछ उपलब्ध होता है। मन की चंचलता उपलब्धि में बाधक होती है।

क्रोध-विजय के व्यावहारिक उपाय

श्री सम्पतराज डोसी

मोह और मदिरा

ज्ञानियों ने मोह कर्म को मदिरा पान की उपमा दी है। जिस प्रकार मदिरा जितनी-जितनी अधिक मात्रा में पी जाती है उतनी-उतनी प्राणियों में बेहोशी, मूढ़ता तथा अपने हिताहित को सोचने की शक्ति नष्ट होती है। मदिरा पान करना या न करना यह व्यक्ति के हाथ की बात है परन्तु पीने के बाद जड़ता को प्राप्त न होना यह उसके बस की बात नहीं। मोह के भेद राग, द्वेष अथवा चार कषाय, क्रोध, मान, माया और लोभ इनका नशा भी मदिरा के नशे से कई गुना अधिक है। चारों में से किसी भी कषाय की मात्रा जब-जब ज्यों-ज्यों बढ़ती जाती है, त्यों-त्यों व्यक्ति अपने पराये का, कर्तव्य-अकर्तव्य का, भावी हिताहित का भान भूल जाता है। पिता-पुत्र, भाई-भाई तक की हत्याएँ अथवा विष भक्षण, जलकर मरना आदि-आदि भयंकर आत्महत्याएँ भी इन्हीं क्रोध, लोभ आदि के उग्र रूप के फल हैं। जैसे तो प्रायः हर परिवार में छोटे-मोटे लड़ाई-झगड़े होते हैं उनके मूल में भी इन चारों में से ही कोई न कोई कारण प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में पाया जाता है, कई परिवारों की स्थिति तो धन आदि बाह्य वैभव के होते हुए भी इन आन्तरिक झगड़ों के कारण नरक सी बनी पाई जाती है।

कषाय-विजय अति कठिन

अधिकांश व्यक्ति तो इन कषायों की बुराइयों को गहराई से समझ भी नहीं पाते और जितने समझ पाते हैं उनमें से भी कई इनको बुरी समझते हुए भी इन्हें छोड़ने में अपने आपको असमर्थ पाते हैं। यहाँ तक कि धन-कंचन का, कुटुम्ब-परिवार का या इससे भी बढ़कर अन्न-जल तक का भी त्याग अर्थात् दान, दया और तपस्या आदि कर सकने वालों को भी अगर गुस्से या लड़ाई-झगड़े के त्याग कराये जायें तो बड़ा मुश्किल

अनुभव होता है। हिन्दी के प्रसिद्ध कवि तुलसीदास ने भी कहा है-

कंचन तजबो सहज है, सहज त्रियाको नेह।

मान बड़ाई ईर्ष्या, तुलसी दुर्लभ एह।।

परन्तु यदि कषाय उत्पत्ति के व्यावहारिक कारणों को और इसके उपस्थित होने पर किस प्रकार के उपाय अपनाने से इन पर विजय प्राप्त की जा सकती है, इस बात को अच्छी तरह समझ लिया जाय और फिर कुछ अभ्यास किया जाय तो इन पर विजय प्राप्त कर लेना भी असंभव नहीं है।

क्रोध-उत्पत्ति के कारण

क्रोध-उत्पत्ति के कई कारण हो सकते हैं। यहाँ कुछ व्यावहारिक कारणों की ओर ध्यान आकर्षित किया जा रहा है, यथा-

1. पारिवारिक सदस्य या अन्य किसी दूसरे व्यक्ति से कोई वस्तु बिखर जाय, टूट जाय, खराब हो जाय या किसी अन्य प्रकार की हानि हो जाये।
2. कोई भी व्यक्ति हमारे एक, दो या तीन बार कहने पर भी बात न माने या अपनी बुराई न छोड़े।
3. कोई व्यक्ति हमारी प्रत्यक्ष या परोक्ष में सच्ची या झूठी निन्दा करे।
4. कोई व्यक्ति हम पर या हमारे स्नेहियों पर क्रोध करे अथवा किसी प्रकार से अन्याय करे।
5. निर्जीव पदार्थों के खराब हो जाने पर जैसे- पेन न चलने पर, साइकिल आदि खराब हो जाने पर अथवा ठोकर लग जाने पर, गोबर या केले के छिलके आदि पर से पैर फिसल जाने पर।
6. क्रोधियों की संगति करने से सम्पर्क में रहने से भी क्रोध की भावना बढ़ती है।

क्रोध से हानियाँ

क्रोध से कई प्रकार की हानियाँ होती हैं, इनमें से कुछ इस प्रकार हैं—

1. क्रोध से हमारा खून विषमय बन कर जलने लगता है।
2. भविष्य के हिताहित सोचने की शक्ति नष्ट हो जाती है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है—
गुस्से से तन दुर्बल बनता, लोही विषमय बन जाता।
तेज चला जाता आँखों का, ज्ञान रहित मन बन जाता।।
अकल न जाने कहाँ जाती है, ज्ञानी और गंवार की।
छोड़ो क्रोध, लोभ, भय, माया, गलियाँ नरक द्वार की।।
3. क्रोध के समय व्यक्ति में 'मैं कौन हूँ, किसके सामने और क्या बोल रहा हूँ' यह सोचने की क्षमता नहीं रहती।
4. क्रोधावेश में वह कई वस्तुओं को फेंक देता है, तोड़ देता है, जिससे आर्थिक हानि होती है।
5. क्रोधी स्वयं का सर फोड़कर, जल कर, कुएँ में गिरकर आत्महत्या तक कर लेता है।
6. क्रोधी व्यक्ति की प्रवृत्ति हिंसक बन जाती है। कई बार बदले की भावना से वह दूसरे व्यक्ति की हिंसा भी कर डालता है।
7. क्रोधी व्यक्ति से सभी घृणा करते हैं।
8. क्रोध से आपसी स्नेह खत्म हो जाता है। पिता-पुत्र, भाई-भाई में कोई सम्बन्ध नहीं रहता।
9. क्रोधी व्यक्ति का उसकी संतति पर बुरा प्रभाव पड़ता है।
10. क्रोध से अशुभ कर्मों का बंध होता है तथा भव-परम्परा बिगड़ती है।
11. क्रोध से वर्षों से किया हुआ तप-जप क्षण भर में नष्ट हो जाता है।

क्रोध-विजय के उपाय

क्रोध सदुणों का महान् शत्रु है। उसे जीतना आसान नहीं है। क्षमा-भाव से उस पर विजय पाई जा सकती है। यहाँ क्रोध को जीतने के व्यावहारिक उपायों पर विचार किया जा रहा है। कुछ प्रमुख उपाय निम्न हैं—

1. नुकसान को सहन करने की आदत डालें—

नुकसान होने पर ऐसा विचार करें कि जिससे बिगाड़ हुआ है उसने भी जानकर तो किया नहीं है और अनजान में हो गया तो अनजान में मेरे हाथ से भी तो हो सकता है। फिर दूसरी बात कि क्रोध करने पर भी बिगाड़ी हुई वस्तु वापस तो आ नहीं सकती, इस कारण भविष्य के लिये अगर मीठे शब्दों से ही समझा दिया जाय तो उल्टा ज्यादा और अच्छा असर पड़ सकता है। इस तरह हर बार ऐसा प्रसंग उपस्थित होने पर ऐसे विचार करने का अभ्यास बना लिया जाय तो क्रोध अवश्य कम पड़ सकता है।

2. अपनी ओर देखें : आत्म निरीक्षण करें—

हमारे दो-तीन बार कहने पर भी अगर कोई न माने या अपनी बुराई न छोड़े तो भी हमें इस प्रकार विचार करना चाहिये कि मेरी बुरी आदतों को अगर कोई दस-बीस बार भी छोड़ने का कह दे तो भी क्या मैं अपनी बुरी आदत छोड़ सकता हूँ? जब मेरे लिये अपनी आदत छोड़ना जैसे मुश्किल है तो फिर दूसरे से ऐसी क्यों आशा रखूँ कि ये तो मेरी बात मान ही लें। इस प्रकार सोच कर अगले व्यक्ति को उस बुरी आदत की हानियाँ बार-बार समझाने का प्रयत्न करते रहना चाहिये, पर अपनी शान्ति को भंग नहीं होने देना चाहिये।

3. निन्दक के प्रति सहानुभूति का रुख अपनायें—

अपनी बुराई को सुनने पर बजाय क्रोध करने के यह सोचना चाहिये कि जो बात मेरे लिये कही जा रही है वह बात सच्ची है या झूठी। अगर निन्दा की बात सच्ची है तब तो उस व्यक्ति को उल्टा उपकारी समझना चाहिये तथा उस बुराई को निकालने का प्रयत्न करना चाहिये। सच्ची निन्दा करने वाले पर क्रोध करना एक प्रकार से अपनी बुराई को ढकने का प्रयत्न करना है। बुराई न घटे इसके लिए नम्रतापूर्वक अपनी बुराई स्वीकार कर लेने पर निन्दक भी अपने आप शान्त हो जाएगा। यदि निन्दा की बात गलत है तो भी चिन्ता या क्रोध की आवश्यकता नहीं। 'सांच को आंच नहीं' ऐसा सोचकर निन्दक को प्रेमपूर्वक सही स्थिति से अवगत कराना चाहिये।

4. क्षमा भाव की प्रवृत्ति विकसित करें-

यदि अपनी गलती के कारण कोई हम पर क्रोध करता है तो हमें उसको अपनी गलती की सजा समझकर क्षमा भाव से सहन कर लेना चाहिये। परन्तु पारिवारिक सदस्य अगर अन्याय करें तो उसमें अपने अशुभ कर्मों का फल समझ कर शान्ति ही रखना उचित है। अन्याय करने वाला तो निमित्त मात्र होता है पर निश्चय में तो खुद के अशुभ कर्मों का ही फल होता है। जैसे गजसुकुमाल के साथ सोमिल ब्राह्मण का, महावीर के साथ ग्वाले का व्यवहार, अन्याय ही था पर दोनों ने अपने अशुभ कर्मों का ही फल समझ उन्हें क्षमा दान दिया।

निर्जीव, पदार्थों जैसे- पेन, साइकिल आदि पर तो क्रोध करना ही नहीं चाहिये। सोचना चाहिये कि ये तो जड़ हैं। इन पर गुस्सा करने से मैं अपनी ही हानि करूँगा। तोड़-फोड़ करने पर नुकसान किसका होगा? फिर क्यों निरर्थक पाप करूँ? और ठोकर लगने या पैर फिसलने में तो मूल कारण मेरी स्वयं की ही असावधानी है फिर गुस्सा किस बात का?

5. क्रोधी व्यक्तियों की संगति से बचें-

क्रोधी व्यक्तियों की संगति या सम्पर्क से बचते रहना चाहिए। और यदि साथ रहने का मौका आदि आ ही जाय तो अपने अशुभ कर्मों का फल समझ उनसे सावचेत रहना चाहिए।

6. सद्विचार को अभ्यास में लायें-

इनके अलावा प्रत्येक प्रसंग पर निम्न बातों पर विचार करके अभ्यास करते रहना चाहिए-

1. 'क्षमा वीरस्य भूषण', अर्थात् क्षमा वीरों का व समझदारों का आभूषण है। इस कारण मेरे को इसका निरन्तर अभ्यास बढ़ाते रहना चाहिये।
2. मेरी आत्मा में सहनशीलता की अनन्त शक्ति छिपी हुई है। भगवान महावीर गजसुकुमाल, स्कन्धक मुनि, अर्जुनमाली आदि महापुरुषों ने उसी शक्ति को प्रकट करके महाभयंकर कष्ट सहन करके भी क्रोध को न आने दिया तो क्या मैं अपने सम्बन्धियों

के वचन भी सहन नहीं कर सकता।

3. जिस प्रकार पान, बीड़ी, चाय, शराब आदि के व्यसन भी कठोर निश्चय के बिना नहीं छूट सकते तो फिर ये क्रोध आदि तो मेरे भवांतर के घनिष्ठ सम्बन्धी है। इनसे मुक्ति पाने के लिये मुझे बार-बार अभ्यास करते रहना चाहिये।
4. करोड़ों वर्षों के तप-जप और अरबों रूपयों के दान देने से भी क्षणभर की क्षमाभावना का फल कई गुना अधिक है। कहा भी है-
क्रोड़ पूर्व कोई तप तपे, एक सहे कोई गाल।
जे में नफी है घणो, मेटो मन की झाल।।
5. क्षमा के आचरण में सारा परिवार सुधर सकता है और मेरा घर स्वर्ग के समान बन सकता है। सुख, शान्ति व लक्ष्मी का भी निवास उसी घर में होता है जिस घर में प्रेम का वातावरण होता है।
6. हमेशा सुबह और शाम 5-10 मिनट चिन्तन करना चाहिए कि आज दिन भर में क्रोध के कितने प्रसंग आये। उनमें से कितनी बार मेरा उन पर ध्यान रहा और कितनी बार नहीं रहा। अब पुनः दृढ़तापूर्वक निश्चय करता हूँ कि किसी भी प्रसंग में क्रोध को हरगिज नहीं आने दूँगा।
7. जब कभी क्रोध आये तो सोचना चाहिये कि क्रोध का कारण क्या था और मेरे सोचने में कहाँ कसर रही कमी का पश्चात्ताप करके भविष्य में ऐसी गलती न हो इसकी सावचेती रखनी चाहिये।
8. जब मेरे पर दूसरा कोई क्रोध करे तो मेरे को कितना बुरा लगता है। इसी प्रकार मेरे गुस्से से भी अगले व्यक्ति को ऐसा ही बुरा लगता है। यह एक प्रकार से भाव हिंसा है।
इस प्रकार के विचारों का बार-बार चिन्तन-मनन करते रहने से ताकि प्रसंग उपस्थित होने पर विचारों द्वारा ही क्रोध को रोकने का अभ्यास करते रहने से कई व्यक्तियों की प्रवृत्ति में बड़ा अन्तर आया है। पाठक भी अनुभव करके अवश्य देखें।

(जिनवाणी, अक्टूबर 1974 से गृहीत)

कर्मों से प्रभावित हमारा स्वास्थ्य

डॉ. चंचलमल चोरडिया

स्वस्थ कौन ?

स्वस्थता तन, मन और आत्मोत्साह के समन्वय का नाम है। जब शरीर, मन, इन्द्रियाँ और आत्मा ताल से ताल मिला कर सन्तुलन से कार्य करते हैं, तब ही अच्छा स्वास्थ्य कहलाता है।

स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है कि मन और पाँचों इन्द्रियाँ सशक्त हों, स्मरण शक्ति अच्छी हो, क्षमताओं का ज्ञान हो, विवेक जागृत हो, लक्ष्य सही और विकासोन्मुख हो तथा जीवन में स्थायी आनन्द, शांति, प्रसन्नता बढ़ाने वाला हो, न कि तनाव, चिन्ता, निराशा, भय, अनैतिकता, हिंसा, झूठ, चोरी, व्यभिचार, तृष्णा आदि दुःख के कारणों को बढ़ाने वाला हो। प्राथमिकताएँ सही हों एवं उनके अनुरूप संयमित, नियमित, नियन्त्रित जीवनचर्या हो। आवश्यकता की क्रियान्विति और अनावश्यक की उपेक्षा का स्वविवेक हो। मन का चिन्तन और आचरण सम्यक् एवं संयमित हो। मन में बेचैनी न हो। इन्द्रियों की विषय-विकारों में आसक्ति न हो। समस्त प्रवृत्तियाँ सहज और स्वाभाविक हों, अस्वाभाविक न हों। स्वस्थ व्यक्ति आत्म-विश्वासी, दृढ़ मनोबली, सहनशील, धैर्यवान, निर्भय, साहसी और जीवन के प्रति उत्साही होता है, जिसके सभी कार्य समय पर होते हैं तथा जीवन नियमबद्ध होता है।

आत्मा में अनन्त शक्तियाँ हैं, जो उसकी शुद्धावस्था में प्रकट होती हैं। जब आत्मा पूर्ण शुद्ध हो जाती है, तो उसमें सृष्टि की समस्त प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष घटनाएँ दर्पण की भांति प्रतिबिम्बित होने लगती हैं। आत्मा परमात्मा बन जाती है। ऐसी अवस्था को वीतराग अवस्था अथवा केवल ज्ञान की स्थिति कहते हैं। जहाँ

सारा अज्ञान दूर हो जाता है, केवल ज्ञान ही शेष रहता है। रोग क्यों ?

रोग होने के अनेक कारण होते हैं। जैसे पूर्व जन्म के संचित असाता वेदनीय कर्मों का उदय, पैतृक संस्कार और वंशानुगत रोग, आकस्मिक दुर्घटनाएँ, आस-पास का बाह्य प्रदूषित वातावरण, मौसम का परिवर्तन एवं उसके प्रतिकूल आचरण, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ, सामाजिक कुरीतियों का पालन, स्वास्थ्य विरोधी सरकारी नीतियाँ, कानून, सुविधाएँ, प्रोत्साहन, स्वास्थ्य को बिगाड़ने वाले रूढ़िवादी धार्मिक अनुष्ठानों का पालन, जीवन निर्वाह हेतु स्वास्थ्य विरोधी व्यावसायिक वातावरण, आर्थिक कठिनाइयाँ, अपव्यय, बदनामी, प्राकृतिक आपदाओं का प्रकोप, असंयम, दुर्व्यसनों का सेवन, अकरणीय पाश्विक वृत्तियाँ, मिलावट एवं रासायनिक खाद और कीटनाशक दवाइयों से प्रभावित उपलब्ध आहार सामग्री, असाध्य एवं संक्रामक रोगों के प्रति प्रारम्भ में रखी गई उपेक्षावृत्ति, अनावश्यक दवाओं का सेवन तथा शारीरिक परीक्षण, इलैक्ट्रॉनिक किरणों (एक्स रे, टी.वी, सोनोग्राफी, कम्प्यूटर, सी.टी. स्केनिंग, मोबाइल फोन एवं अन्य प्रकार की आप्तिक तरंगों) का दुष्प्रभाव, प्राण ऊर्जा का दुरुपयोग या अपव्यय, आराम, निद्रा, विश्राम का अभाव, क्षमता के प्रतिकूल श्रम करना, मल-मूत्र को रोकना, अति भोजन, अति निद्रा, शरीर में रोग प्रतीकारात्मक शक्ति का क्षीण होना, गलत अथवा अधूरे उपचार तथा दवाओं का दुष्प्रभाव, वृद्धावस्था के कारण इन्द्रियों का शिथिल हो जाना। प्रमाद, आलस्य, अविवेक, अशुभ चिन्तन, आवेग, अज्ञान, असजगता, हिंसक, मायावी, अनैतिक जीवन शैली, जिससे सदैव तनावग्रस्त एवं भयभीत रहने की परिस्थितियाँ बनना आदि

रोगों के मुख्य कारण होते हैं। कुछ कारण तो हमारे नियन्त्रण में होते हैं कुछ कारण नहीं। फिर भी हमारी आत्मा में अनन्त शक्ति होने से यदि सजगता और स्वविवेक पूर्ण जीवन शैली अपनायी जावे तो रोग के जो कारण हमारे नियन्त्रण में नहीं हैं, उनके प्रभाव को कम किया जा सकता है। जीवन में सभी को सदैव सभी प्रकार की अनुकूलताएँ प्रायः नहीं मिलतीं। प्रतिकूल परिस्थितियों को स्वस्थ चिन्तन, मनन एवं सम्यक् आचरण द्वारा अपने अनुकूल बनाया जा सकता है, यही स्वास्थ्य का मूल सिद्धान्त और स्वस्थ जीवन की आधारशिला होती है। हमारा चिन्तन और आचरण जितना-जितना सम्यक् होगा, उतने-उतने हम स्वस्थ होते जायेंगे।

आभूषण की डिब्बी का महत्त्व तभी होता है, जब तक उसमें बहुमूल्य आभूषण होते हैं। बटुए (पर्स) का मूल्य उसमें रखे पैसों के आधार पर होता है। ठीक उसी प्रकार मानव शरीर का मूल्य तभी तक होता है, जब तक उसमें आत्मा होती है। जिस प्रकार आभूषण से शून्य डिब्बी और रुपयों के बिना बटुए का विशेष मूल्य नहीं होता और जो व्यक्ति आभूषणों और रुपयों से ज्यादा डिब्बी और बटुए को महत्त्व देता है, उसे बुद्धिमान नहीं समझा जाता। समझदार व्यक्ति पर्स और डिब्बी दोनों का खयाल रखता है, परन्तु सुरक्षा हेतु ज्यादा आभूषणों और रुपयों को महत्त्व देता है तथा उनकी अनुपस्थिति में डिब्बी और बटुए की उपेक्षा करते हुए भी संकोच नहीं करता।

सही सोच का अभाव

सम्यक् चिन्तन के अभाव में कभी-कभी व्यक्ति का सोच, मायावी विज्ञापनों, भीड़, तात्कालिक लाभ, बाह्य चकाचौंध से प्रभावित हो सकता है। परिणामस्वरूप व्यक्ति अपने लक्ष्य का सही निर्धारण नहीं कर पाता। ऐसी अवस्था में व्यक्ति अपनी क्षमताओं और प्राथमिकताओं से भी प्रायः परिचित नहीं होता। सही जानकारी के अभाव में या आंशिक जानकारी के कारण व्यक्ति कभी-कभी गलत को सही और सही को गलत मानने की भूल कर सकता है। उसकी

प्राथमिकताएँ स्वयं के भविष्य के लिए उपयोगी होने के बजाय हानिकारक हो सकती है। फलतः उसका भविष्य तनावग्रस्त, दुःखी अस्वस्थ अथवा संक्षिप्त में कहें तो अन्धकारमय बन जाता है।

वाणी का प्रभाव

वाणी के दुरुपयोग से भी जो अव्यवस्था और असंतुलन होता है उसका प्रारम्भिक प्रभाव मानसिक रोगों पर होता है। वाणी को सुनकर हंसना, मुस्कराना, डाँटना, चेहरे का रूप बदलना उसका द्योतक होता है। परन्तु अधिकांश चिकित्सक और रोगी तथा उनके परिजन आन्तरिक मानसिक रोगों को तो रोग मानते तक नहीं। तब उनके उपचार एवं निवारण के बारे में सोचने का तो प्रश्न ही नहीं होता। परन्तु दुर्घटना, पैतृक, जन्म जात रोगों को छोड़ अधिकांश रोगों का कारण नकारात्मक भावों से प्रारम्भ होता है और जब तक सम्यक् चिन्तन द्वारा उसे बदला नहीं जाता तब तक दीर्घकालीन स्थायी स्वास्थ्य की प्राप्ति संभव नहीं होती। रोग का कारण जब तक बना रहेगा रोग होने की संभावना बनी रहती है।

बिना कारण कार्य नहीं होता

आधुनिक वैज्ञानिकों द्वारा मान्य सर्वसम्मत वैज्ञानिक सिद्धान्त है कि बिना कारण कोई कार्य नहीं होता। प्रत्येक कार्य अथवा घटना के पीछे प्रत्यक्ष या परोक्ष कुछ न कुछ कारण अवश्य होते हैं। बिना कारण कुछ भी घटित नहीं हो सकता। हमें जो मनुष्य की योनि के साथ में संयोग-वियोग, सुख-दुःख, अनुकूलताएँ-प्रतिकूलताएँ मिलती हैं, उसके पीछे हमारे पूर्व संचित कर्मों का प्रभाव होता है। यदि अच्छे का फल अच्छा और बुरे का फल बुरा न मिले तो प्रकृति की सारी व्यवस्थाएँ ही डगमगा जाती हैं।

शरीर का चेतन-आत्मा के साथ संयोग ही जीवन है और वियोग मृत्यु है। मृत्यु के पश्चात् शरीर, मन और इन्द्रियों की भांति आत्मा का अन्त नहीं होता। जब तक दोनों साथ-साथ में होते हैं, तभी तक स्वास्थ्य

की समस्या होती है। दोनों के अलग होते ही शरीर की सारी गतिविधियाँ स्वतः समाप्त हो जाती हैं। शरीर की समस्त गतिविधियों के संचालन करने वाली चेतना (प्राण) और प्राण ऊर्जा भी दोनों से अलग होती है, जिसका निर्माण आत्मा और शरीर के सहयोग से होता है। बिना आत्मा अथवा शरीर प्राण और प्राण ऊर्जा का अस्तित्व नहीं होता। प्राण और प्राण ऊर्जा को भी प्रायः जनसाधारण एक ही समझते हैं, परन्तु दोनों अलग-अलग होते हैं। ऊर्जा जो जड़ है, जबकि प्राण में चेतना होती है। गुब्बारे में हवा भरने से उसमें प्राण नहीं आ जाते और न हवा निकालने से गुब्बारे के प्राण चले जाते हैं। ऊर्जा शरीर में बाहर से भीतर आती है या शरीर में श्वसन की प्रक्रिया से बनती है। जबकि प्राण शरीर में जन्म से विद्यमान होता है। प्राण अपने आप में शाश्वत होता है, जबकि प्राण ऊर्जा को श्वास का आलम्बन आवश्यक होता है। अतः प्राण कहें या चेतना, शरीर में आत्मा के ही अंश होते हैं तथा आत्मा शरीर में जिस शक्ति से निश्चित आयुष्य तक ठहरी हुई रहती है, उस शक्ति को प्राण ऊर्जा कहा जा सकता है।

जिसमें प्राण होता है, वही प्राणवान् होता है। जब किसी की मृत्यु हो जाती है तो, प्रायः हम यही कहते हैं कि व्यक्ति के प्राण निकल गये। यह नहीं कहते कि प्राण ऊर्जा निकल गई। प्राण की उपस्थिति में ही जीव प्राणी कहलाता है। प्राण हमारी आत्मा और स्थूल शरीर के बीच सेतु का कार्य करता है। आत्मा और शरीर का सारा संबंध प्राण के द्वारा ही होता है।

मानव जीवन में आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, भाषा और मन में ऊर्जा के स्रोत माँ के गर्भ में आते ही मिल जाते हैं। आयुष्य प्राण के रूप में आत्मा के साथ किसी योनि में सीमित अवधि में रहने की ऊर्जा प्राप्त होती है। श्वसन उस ऊर्जा के प्रवाह को संचालित और नियन्त्रित करता है। जिस प्रकार पेट्रोल समाप्त होते ही कार रुक जाती है, ठीक उसी प्रकार आयुष्य प्राण के समाप्त होते ही जीवन का अन्त हो जाता है। जब तक

आयुष्य प्राण रहता है तब तक आँख, नाक, कान, मुँह, स्पर्श आदि पाँचों इन्द्रियाँ और मन तथा वाणी भी अपनी-अपनी प्राण ऊर्जाओं के अनुसार शरीर की गतिविधियों एवं प्रवृत्तियों के संचालन में सहयोग देते हैं। जिस प्रकार बिजली से प्रकाश, गर्मी, वाहन आदि उपकरणों के माध्यम से अलग-अलग ऊर्जाएँ निर्मित होती हैं, ठीक उसी प्रकार आयुष्य बल प्राण और श्वसन प्राण के सहयोग से आँख में देखने, कान में सुनने, नाक में सुगन्ध लेने, जीभ में बोलने, मुँह में आहार करने एवं शरीर में स्पर्श ज्ञान की ऊर्जा उत्पन्न होती है। यदि हमारी कोई इन्द्रिय अथवा मन की प्राण ऊर्जा क्षीण हो जाती है तो व्यक्ति की वह इन्द्रिय अथवा मन निष्क्रिय हो जाता है। बाकी सभी इन्द्रियाँ अपना कार्य बराबर करती रहती हैं, परन्तु आयुष्य प्राण के बिना जीवन एक क्षण भी नहीं चल सकता।

कर्म बंध का कारण है कषाय

किसी भी जीव को मृत्यु के पश्चात् अन्य कौनसी गति में भेजना, कितनी इन्द्रियाँ उपलब्ध कराना, कैसा शरीर देना, इन्द्रियों की कितनी क्षमता रखना आदि का निर्णय उसके कर्मों की स्थिति के अनुसार होता है। अतः स्वास्थ्य कर्मों से प्रभावित होता है। जीव को उसका शरीर नाम कर्म के अनुसार मिलता है। नाम कर्म के अनुसार ही उसे नरक, तिर्यच, मनुष्य, देव आदि चार गतियों में से एक गति मिलती है। एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय के अनुसार इन्द्रियाँ मिलती हैं। पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पति काय एवं त्रस काय में से एक प्रकार की काया प्राप्त होती है। कान, आँख, नाक, मुँह एवं स्पर्शेन्द्रिय और मन में कोई एक अथवा उससे अधिक इन्द्रियाँ मिलती हैं। चेतना के विकासानुसार एकेन्द्रिय जीव को मात्र स्पर्श इन्द्रिय, बेइन्द्रिय जीव को स्पर्श एवं रसनेन्द्रिय, तेइन्द्रिय को स्पर्श, रसना के अलावा घ्राणेन्द्रिय मिलती है। चतुरिन्द्रिय जीव को स्पर्श, रसना, घ्राणेन्द्रिय के साथ चक्षु इन्द्रिय भी प्राप्त होती है। पंचेन्द्रिय जीवों को स्पर्श, रसना, घ्राणेन्द्रिय, चक्षु के साथ में श्रोत्रेन्द्रिय के रूप में कान भी मिलते हैं।

सभी पंचेन्द्रिय जीवों के मन नहीं होता। केवल सन्नी(जिनके मन होता है) पंचेन्द्रिय जीव को ही मन मिलता है। इस प्रकार मनुष्य जीवन चेतना के विकास की सर्वोत्तम अवस्था होती है। सभी सन्नी पंचेन्द्रिय जीवों का मन भी समान रूप से विकसित नहीं होता, जितना मनुष्य का होता है।

इन्द्रियों के अनुसार ही जीव को आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, भाषा और मन आदि छः पर्याप्तियों (Bio Potential Energy) अर्थात् मूल प्राण ऊर्जाओं में से पर्याप्तियाँ और श्रोत्रेन्द्रिय बल प्राण, चक्षु इन्द्रिय बल प्राण, घ्राणेन्द्रिय बल प्राण, रसनेन्द्रिय बल प्राण, स्पर्शेन्द्रिय बल प्राण, श्वासोच्छ्वास बल प्राण, मन बल प्राण, वचन बल प्राण, काय बल प्राण और आयुष्य बल प्राण आदि दस प्राणों में से कुछ अथवा सभी प्राण और पर्याप्तियाँ प्राप्त होती हैं। मनुष्य को दसों प्राण प्राप्त होते हैं।

एकेन्द्रिय जीव को छः में से चार पर्याप्तियाँ (आहार, शरीर, इन्द्रिय और श्वासोच्छ्वास) मिलती हैं और दस में से मात्र चार प्राण (स्पर्श इन्द्रिय बल प्राण, काय बल प्राण, श्वासोच्छ्वास बल प्राण और आयुष्य बल प्राण) ही प्राप्त होते हैं। अन्य प्राण और पर्याप्तियाँ नहीं मिलती। दो इन्द्रिय वाले जीवों को चार पर्याप्तियाँ के साथ रसनेन्द्रिय एवं वचन बल प्राण मिलते हैं। तेइन्द्रिय जीवों को चार पर्याप्तियाँ और सात प्राण अर्थात् बेइन्द्रिय की अपेक्षा घ्राणेन्द्रिय अधिक मिलती है। चतुरिन्द्रिय को आठ प्राण अर्थात् तेइन्द्रिय की अपेक्षा चक्षु इन्द्रिय अधिक मिलती है। पंचेन्द्रिय जीवों को चउरिन्द्रिय की अपेक्षा श्रोत्रेन्द्रिय अधिक मिलती है। कहने का तात्पर्य यह है कि एकेन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय जीवों तक की अवस्था में मन नहीं मिलता। मन तो मात्र सन्नी जीवों को ही मिलता है। जब तक आत्मा मोक्ष को प्राप्त नहीं हो जाती तब तक प्रत्येक संसारी आत्मा को कम से कम चार प्राण और चार पर्याप्तियाँ तो मिलती ही हैं। अतः जो इन प्राणों और पर्याप्तियों का अपव्यय अथवा दुरुपयोग करते हैं अथवा भूतकाल में जिन्होंने दुरुपयोग किया

उनको ये चारों प्राण और पर्याप्तियाँ कमजोर मिलेंगे। अर्थात् उनका शरीर दुर्बल होगा, स्पर्श शक्ति कमजोर होगी, श्वसन प्रणाली शक्तिशाली नहीं मिलेगी और आयुष्य भी अपेक्षाकृत कम मिलेगा। मन के बिना मनन और चिंतन नहीं होता। कान के बिना जीव सुन नहीं सकता। चक्षु के बिना जीव में देखने की योग्यता, घ्राणेन्द्रिय के बिना गंध को पहचानने की, रसनेन्द्रिय के बिना स्वाद को जानने एवं बोलने की योग्यता प्राप्त नहीं होती।

यदि आपका प्रिय बच्चा आपसे हजार रुपये का नोट मांगे तो प्रेमवश शायद आप उसको हजार रुपये का नोट दे देंगे। परन्तु यदि वह बच्चा नासमझी से उसे मात्र साधारण कागज समझ कर फाड़ दे और आपसे पुनः दूसरा हजार रुपये का नोट मांगने की जिद्द करे तो कोई भी समझदार व्यक्ति बच्चे को फिर से हजार रुपये का नोट देने की गलती नहीं करता, भले ही वह बच्चा कितना ही प्यारा क्यों न हों? ठीक उसी प्रकार जो एकेन्द्रिय जीवों (पृथ्वी, पानी, हवा, अग्नि एवं वनस्पति) का दुरुपयोग करते हैं, नष्ट करते हैं अर्थात् उनमें उपलब्ध स्पर्शेन्द्रिय बल प्राण, काय बल प्राण, श्वासोच्छ्वास बल प्राण और आयुष्य बल प्राण को नष्ट करते हैं, भविष्य में उस जीव को ये चारों प्राण कमजोर मिलेंगे। यदि अन्य शुभ कर्मों के प्रभाव से मनुष्य जैसी उच्च गति भी मिल जाये तो गर्भ अथवा बाल्यकाल में ही जीव दुनियाँ से विदा हो सकता है अथवा विकलांग या रोग ग्रस्त शरीर मिल सकता है। पृथ्वीकाय की विराधना अथवा दुरुपयोग से कमजोर अस्थि तंत्र मिलेगा या शरीर में हड्डी संबंधी रोग होंगे। जल काय की विराधना से शरीर में जल तत्त्व के असंतुलन, वायुकाय की विराधना से कमजोर श्वसन तंत्र एवं अग्निकाय की विराधना से शरीर में अग्नि तत्त्व कमजोर मिलेगा। शरीर के अंगों का विकास असंतुलित एवं अपूर्ण हो सकता है। कारण स्पष्ट है दुःख देने से दुःख ही मिलेगा। अतः यथासंभव हम अनावश्यक एकेन्द्रिय जीवों को भी कष्ट पहुँचे वैसी प्रवृत्तियों से बचने का प्रयास करें।

तेजस और कार्मण शरीर आत्मा की मलिन अवस्था में सदैव उसके साथ रहते हैं तथा मृत्यु के समय जब तक आत्मा पूर्ण रूप से शुद्धावस्था को प्राप्त नहीं हो जाती, स्थूल शरीर ही नष्ट होता है, सूक्ष्म शरीर समाप्त नहीं होता। परन्तु अधिकांश आधुनिक प्रचलित चिकित्सा पद्धतियाँ उपचार को मात्र स्थूल शरीर तक ही सीमित रखती हैं। रोग के मूल कारण कर्मों तक उनका सोच प्रायः नहीं होता। इसी कारण जन्मजात रोगों एवं मृत्यु का रहस्य उनको पूर्ण समझ में नहीं आ पाता।

इन तीनों शरीरों का स्वास्थ्य के साथ गहरा संबंध होता है। शक्तिशाली सूक्ष्म दर्शक यंत्रों की खोज से भी स्थूल शरीर के रहस्यों को तो जाना जा सकता है। परन्तु सूक्ष्म और सूक्ष्मतरंग शरीर को अभी भी नहीं देखा जा सकता। फिर भी उनका शरीर पर प्रभाव पड़ता है। जिसका प्रत्यक्ष अनुभव किया जा सकता है। कर्म शरीर में जितने स्पन्दन होते हैं, वे स्थूल शरीर में अपना संबंध स्थापित करते हैं। स्थूल शरीर सूक्ष्म शरीर का संवादी होता है।

जीवन से हमारा परिचय शरीर, वाणी और कार्यों के माध्यम से होता है। जिसका आधार मन और चित्त से भी परे हमारी आत्मा है। हमारी चेतना एक सूर्य के समान होती है और उसकी एक किरण का नाम होता है- 'चित्त' चैतन्य मय होता है तथा सूक्ष्म शरीर द्वारा संचालित होता है। अतः भाव, मन और वाणी चित्त द्वारा संचालित होते हैं। चित्त मन की भांति अस्थायी नहीं होता है, दीर्घजीवी होता है। हमारी सारी चेतना का प्रवाह चित्त से ही होता है। सूक्ष्म शरीर का दूसरा उत्पाद होता है, हमारा स्थूल शरीर एवं इन्द्रियाँ। हमारे मन का कोई भाव हम छिपाकर नहीं रख पाते। वह किसी न किसी रूप में प्रकट हो ही जाता है। परोक्ष रूप से छिपे हुए भाव भी हमारे अन्दर निरन्तर क्रियाशील रहते हैं और अपनी अभिव्यक्ति का मार्ग खोज निकालते हैं। शरीर में पनपने वाले असाध्य रोग भी हमारी छिपी भावनाओं को ही अभिव्यक्त करते हैं। हमारी अन्तःस्रावी ग्रन्थियाँ भाव के अनुसार ही शरीर में हारमोन्स अथवा रसायनों का

निर्माण करती हैं। फलस्वरूप हम अच्छी या बुरी, करणीय अथवा अकरणीय प्रवृत्तियाँ करने लगते हैं। अतः अधिकांश रोगों का मूल कारण प्रायः भावनात्मक स्तर पर होता है और जब तक उसमें परिवर्तन नहीं आता, आरोग्य लाभ नहीं मिल सकता। क्षणिक आने वाले भाव तो हमें बहुत प्रभावित नहीं करते, परन्तु लम्बे काल तक बना रहने वाला भावात्मक असंतुलन संस्कार बन गहरा प्रभाव दिखाता है।

सूक्ष्म शरीर से कर्म विपाक के अनुसार जो स्पन्दन आते हैं, वे चित्त को प्रभावित करते हैं। जिससे चित्त मस्तिष्क के साथ कार्य करने वाले भावों का निर्माण करता है तथा उन भावों की अभिव्यक्ति के लिये दो सहयोगी तंत्रों का निर्माण करता है और वे होते हैं, मन और वाणी। इस प्रकार मस्तिष्क चित्त और स्थूल शरीर का संगम स्थल होता है। अतः मन और चित्त एक नहीं, अलग-अलग होते हैं। मन चंचल होता है। चित्त बुद्धि और विवेक से उस पर नियन्त्रण रखने की क्षमता रखता है। मन कुछ भी नहीं होता और सब कुछ भी होता है। मन का कोई स्थायी अस्तित्व नहीं होता परन्तु जब अस्तित्व में होता है तो सब कुछ बन जाता है, परन्तु यदि हम मन को पैदा न करें तो मन कुछ भी नहीं होता। मन को विराम दिया जा सकता है। स्वास्थ्य का संबंध मन के साथ बहुत कुछ जुड़ा होता है। मन स्वस्थ तो शरीर स्वस्थ और मन अस्वस्थ तो शरीर अस्वस्थ।

जीवन एवं स्वास्थ्य की सभी समस्याओं का मुख्य कारण कर्म होता है। कर्मों के प्रभाव से ज्ञान-अज्ञान हो जाता है, दर्शन मिथ्या हो जाता है। अतः जब तक आत्मा पर कर्मों का आवरण रहता है, तब तक सम्पूर्ण स्वास्थ्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। न मालूम कब वे कर्म उदय में आकर व्यक्ति को रोगी बना दें, कहा नहीं जा सकता।

- चोरडियर भवन, जालोरी गेट के बाहर, गोल
बिल्डिंग रोड, जोधपुर-342003 (राज.)

E-mail: cmchordia.jodhpur@gmail.com

Website: www.chordiahealthzone.in

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. श्वेता जैन

महामुनि स्थूलभद्र चरित्र- रचयिता- आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज, **औपन्यासिक रूपान्तरकार-** श्री सम्पतराज चौधरी, **प्रकाशक -** सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोन: 0141-2575997, **पृष्ठ-** 158+6, **मूल्य-** 50 रुपये, सन् 2017

समयचक्र का अनुवर्तन करते हुए रूपान्तरकार श्री चौधरीजी ने कथा काव्य के रूप में आचार्य हस्ती द्वारा लिखित स्थूलभद्र चरित्र को औपन्यासिक विधा में रूपान्तरित किया है। आचार्य श्री ने आर्य स्थूलभद्र के चरित्र को परम्परागत कथा सूत्र के आधार पर शृंखलाबद्ध तरीके से राधेश्याम दोहा, लावणी और गीत नामक प्राचीन ढालों में रचा है। रूपान्तरकार ने स्थान-स्थान पर इनका नामांकन किया है ताकि गाने वाले को सुविधा रहे। सर्वप्रथम उनके द्वारा पद्यबद्ध मंगलाचरण कर पूर्व पीठिका के रूप में काव्यकार कृत चार पद्यों को व्यवस्थित किया गया है। इस कृति की प्रमुख विशेषता यह है कि रूपान्तरकार ने कवि कृत ढालों को समाहित करते हुए औपन्यासिक शैली में 22 शीर्षकों के अन्तर्गत चरित्र पूर्ण किया है। चरित्र कथा में पूर्ण प्रवाह के साथ ऐतिहासिक दस्तावेजों को सुन्दर तरीके से योजित किया गया है।

स्थूलभद्र की कथा कामजयी की कथा है, जो पाठकों के मन को रोमांचित करती है तथा इस सत्य को उजागर करती है कि काम का सुख क्षणिक सुख है एवं बन्धन है, अतः उससे मुक्त होने का प्रयास किया जाना चाहिए। पुस्तक की छपाई वर्णद्वय में हुई है, पद्य लाल वर्ण में तथा गद्य कृष्ण वर्ण में शोभित हो रहे हैं। उपन्यास की भाषा ललित, सहज, सारपूर्ण है। कथा रासकों के लिए सुबुद्ध पाठकों के लिए यह पुस्तक पठनीय है। यह

कृति गद्य-पद्य मिश्रित होने से मंचन हेतु उपयोगी हो सकती है।

जैन सांस्कृतिक चेतना के स्वर- प्रो. भागचन्द्र जैन 'भास्कर', **प्रकाशक -** सन्मति प्राच्य शोध संस्थान, नागपुर, प्राप्ति स्थान- 1. कला प्रकाशन, बी 33/33ए, ए-1, न्यू साकेत कॉलोनी, बी.एच.यू., वाराणसी, 2. श्री दिगम्बर जैन महासभा, राजा बाजार, नई दिल्ली-110003, 3. प्राकृत भारती, मालवीय नगर, जयपुर (राज.) **पृष्ठ-**720, **मूल्य-** 243 रुपये, सन् 2016

सांस्कृतिक चेतना के स्वरों को मुखरित करने में जैन संस्कृति के योगदान को रेखांकित करते हुए लेखक ने 15 परिवर्त में विषय-वस्तु को निबद्ध किया है- 1. जैनधर्म का वैशिष्ट्य और उसकी सार्वभौमिकता, 2. जैन संस्कृति एवं पुरातत्त्व, 3. तीर्थंकर वर्धमान महावीर और उनका अवदान, 4. जैन संघ और सम्प्रदाय, 5. भक्ति, ध्यानयोग एवं मंत्र-तंत्र परम्परा, 6. जैन तत्त्व ज्ञान-दर्शन, 7. अनेकान्तवाद, 8. जैन आचार मीमांसा, 9. अहिंसा और अपरिग्रह, 10. भारतीय भाषाओं में जैन साहित्य, 11. जैनधर्म की सामाजिक चेतना, 12. जैन धर्म का प्रचार-प्रसार, 13. जैन धर्म और आधुनिक विज्ञान, 14. जैनकला और पुरातत्त्व, 15. जैन संस्कृति के विकास में वैदिक एवं बौद्ध परम्परा का योगदान।

जैन परम्परा ने पर्यावरण सन्तुलन और संरक्षण पर इतना अधिक ध्यान दिया है कि सभी तीर्थंकरों के समवसरण में चारों ओर वृक्षों की पंक्तियाँ लगाई जाती रही हैं तथा उनके चिह्न और चैत्यवृक्ष पशु-पक्षी और वनस्पति जगत से अधिगृहीत किये गए हैं तथा यक्ष-यक्षिणियों को उनके रक्षक घोषित किया गया है। संभवतः पर्यावरण को तहस-नहस करने वालों को दण्डित करने हेतु यक्ष-यक्षिणियों का भय दिखाया गया हो। अन्य विषयों में भी लेखक ने इसी तरह सांस्कृतिक दृष्टि से जैन साहित्य और संस्कृति को निरूपित किया है।

शक्ति सन्तुलन भी विश्व शान्ति के लिए

आवश्यक है। व्यक्ति और राष्ट्र के लिए सबल होना निश्चित ही जरूरी है। मात्र अहिंसा से भौतिकत्व या राष्ट्र की सुरक्षा नहीं की जा सकती। शस्त्रीकरण भी इसके लिए अपेक्षित है। सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन में हिंसा और अहिंसा दोनों साधनों से ही विकास के सोपान पाए जा सकते हैं। इन दोनों की सीमा का निर्धारण विवेक के आधार पर ही हो सकता है।

जैन कला में जो कलात्मक सौन्दर्य और मानवता का मूक सन्देश समाहित है, वह अनूठा है।

उसके वैराग्य संवर्धक प्रतीक मात्र कला के लिए नहीं हैं, उनका यथार्थ सम्बन्ध जीवन की सूक्ष्मतम अभिव्यक्ति के लिए है, जिनका उपयोग नैतिक स्तर को समुन्नत बनाने और प्राणियों में समत्व स्थापित करने के लिए किया जा सकता है।

अन्त में सन्दर्भग्रन्थ सूची एवं चित्र सूची भी संलग्न है। यह ग्रन्थ शोधार्थियों, जिज्ञासु पाठकों के लिए संकलनीय है।

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

रत्न संघ के अष्टम पट्टर परम पूज्य आचार्य भगवंत 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पंडितरत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं संत-सतीमण्डल की असीम कृपा एवं रत्नसंघ के संघनिष्ठ गुरुभक्तों के पूर्ण सहयोग से छात्रवृत्ति योजना गत 11 वर्षों से निराबाध रूप से गतिशील है। वर्ष 2017-2018 के लिए जो भी छात्र-छात्राएँ छात्रवृत्ति प्राप्त करना चाहते हैं, वे अपने आवेदन-पत्र योजना समिति के पास प्रेषित कर सकते हैं। इस सत्र के लिए इच्छुक छात्र-छात्राएँ चयन समिति से आवेदन-पत्र मंगवा कर पूरित आवेदन पत्र चयन समिति के पास प्रेषित कर सकते हैं। इस योजना से संबंधित नियमावली इस प्रकार है-

- 1 आवेदक जो वर्तमान में अध्ययनरत है, उसके सत्यापन के लिए आवश्यक दस्तावेजों की प्रतिलिपि भेजना अनिवार्य है। आवेदक आवेदन-पत्र के साथ निम्नलिखित दस्तावेज अवश्य भेजें- (A) उत्तीर्ण की हुई कक्षा की मार्कशीट की प्रतिलिपि। (B) आवेदक वर्तमान में जिस विद्यालय/कॉलेज/कॉचिंग में अध्ययन कर रहा है, उसके द्वारा वहाँ जमा कराये गये शुल्क की रसीद भेजना अनिवार्य है। (रसीद उपलब्ध नहीं होने की दशा में लैटरपेड पर सत्यापित करके भेज सकते हैं।) (C) अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर की मार्कशीट की प्रतिलिपि। (D) अपनी नई पासपोर्ट साइज की फोटो। (E) आवेदक अपना मोबाइल नम्बर उल्लिखित करे, जिस पर योजना समिति द्वारा कभी भी सम्पर्क किया जा सके। योजना समिति द्वारा आवश्यक सूचना आदि मोबाइल पर मैसेज के द्वारा भेज दी जाती है, इसका विशेष ध्यान रखावे। (F) आवेदक छात्र-छात्रा के बैंक खाते की पासबुक की प्रतिलिपि भेजना अनिवार्य है। जिसका खाता खुला हुआ नहीं है, वह अवश्य खुलवा लें। छात्रवृत्ति की राशि आवेदक के खाते में ही भेजी जायेगी।
- 2 छात्रवृत्ति राशि का निर्धारण विद्यालय/कॉलेज/कॉचिंग के शुल्क के आधार पर या योजना की अधिकतम सीमा के आधार पर किया जायेगा। छात्रवृत्ति योजना की छात्रवृत्ति राशि की अधिकतम सीमा निम्नानुसार है।

Class	Up to Class 10th	11th & 12th Graduation	Graduation & Post etc.	Professional
Maximum Limit	Rs. 6000/-	Rs. 9000/-	Rs. 12000/-	Rs. 27500/-

- 3 छात्रवृत्ति योजना समिति के द्वारा आयोजित किये जाने वाले शिविर में भाग लेना अनिवार्य है।
- 4 रत्नसंघ के प्रत्येक कार्यक्रम में सहयोग करना एवं उपस्थित रहना अपेक्षित है। आपके द्वारा स्थानीय स्थल पर लगने वाले शिविर में भाग लेकर, अध्यापन कार्य में सहयोग करने या अन्य रूप में सेवा की जाये तो उसका अलग से विवरण अवश्य संलग्न करें।
- 5 आवेदक को प्रतिदिन एक नवकार मंत्र की माला फेरने का संकल्प करना है।
- 6 आवेदक को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड जोधपुर द्वारा आयोजित परीक्षा देना अनिवार्य है।
- 7 योजना समिति का निर्णय अन्तिम एवं सर्वमान्य होगा। आवेदक अपने आवेदन पत्र 31 अगस्त 2017 तक निम्नलिखित पते पर प्रेषित कर सकते हैं- **M. Harish Kavad, "Guru Hasti Thanga Maaligai", No.5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600056 (TN), Mob.-095430-68382, Email- guruhasti_scholarship@yahoo.co.in**
- 8 आवेदक छात्रवृत्ति योजना के आवेदन-पत्र को वेबसाइट- WWW.RATANSANGH.COM से डाउनलोड कर सकते हैं।
- 9 छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें- मनीष जैन-09543068382

रत्नसंघ के सन्त-सतियों के चातुर्मास

(विक्रम संवत् 2074, ईस्वी सन् 2017)

जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. द्वारा वि.सं. 2074 सन् 2017 हेतु साधु-मर्यादा के समस्त आगारों के साथ घोषित चातुर्मासों का विवरण।-सम्पादक

1. भोपालगढ़, जिला-जोधपुर (राज.)

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

महान् अध्यवसायी सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.

श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा.

श्रद्धेय श्री सुभाषमुनिजी म.सा.

श्रद्धेय श्री आशीषमुनिजी म.सा.

श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा.

श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनिजी म.सा.

नवदीक्षित श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा.

नवदीक्षित श्रद्धेय श्री कल्पेशमुनिजी म.सा.

ठाणा 9

चातुर्मास-स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, जैन स्थानक, (बडा उपासरा), सदर मार्केट रोड़, पो. भोपालगढ़-342603, जिला-जोधपुर (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री शिम्भूलालजी चोरडिया, अध्यक्ष- महादेव मार्केट, पो. भोपालगढ़-342603, जिला-जोधपुर (राज.), फोन: 94148-60036
2. श्री पुनवानचन्द्रजी ओस्तवाल, मंत्री- पीपली बास, पो. भोपालगढ़-342603, जिला-जोधपुर (राज.), फोन: 94141-40468
3. श्री मनोजजी कांकरिया- 94145-63597
4. श्री नेमीचन्द्रजी जैन (कर्नावट)-94130-62049

आवागमन के साधन- भोपालगढ़ के लिए जोधपुर,

जयपुर, अजमेर, ब्यावर, पाली आदि स्थानों से अधिकतर बसों का ठहराव है। नजदीक का रेलवे स्टेशन गोटन है। भोपालगढ़ जोधपुर से 75 किमी., बिलाड़ा से 72 किमी., गोटन से 30 किमी, पीपाड से 35 किमी. एवं मेड़तासिटी से 72 किमी. की दूरी पर स्थित है। नजदीक का हवाई अड्डा जोधपुर एवं जयपुर है।

2. महामन्दिर, जोधपुर (राज.)

परम श्रद्धेय उपाध्याय पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा.

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.

श्रद्धेय श्री लोकचन्द्रमुनिजी म.सा.

श्रद्धेय श्री मोहनमुनिजी म.सा.

श्रद्धेय श्री दर्शनमुनिजी म.सा.

श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा.

श्रद्धेय श्री अभयमुनिजी म.सा.

ठाणा 7

चातुर्मास-स्थल- जैन स्थानक, हस्तीमल सुराणा का कटला (हेमसिंह जी का कटला) महामन्दिर, जोधपुर-342006 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री धनपतचन्द्रजी सेठिया-अध्यक्ष, म.नं.-76, श्याम नगर पहली गली, पाल लिंक रोड़, जोधपुर-342008 (राज.), फोन:-0291-2752472, मो. 098290-22472
2. श्री सुभाषचन्द्र जी हुण्डीवाल-मंत्री, डी-5, रामनगर, प्रथम रोड़, भदवासिया, जोधपुर-342006 (राज.), मोबाइल- 094605-51096
3. श्री कनकराजजी कुम्भट, कुम्भट स्ट्रीट, महामन्दिर,

जोधपुर-342010, मो. 97848-03000, 98292-92939

4. श्री उम्मेदराजजी लोढा, मो. 98291-16236
5. श्री आशीषजी कुम्भट (लोकेशजी), मो. 80033-41180, 98280-27770

आवागमन के साधन- चातुर्मास स्थल जोधपुर मुख्य रेलवे स्टेशन से 6 कि.मी. एवं राईकाबाग रेलवे स्टेशन व बस स्टेण्ड से 2 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

3. भीलवाड़ा (राज.)

❧ मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा.

❧ श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.

❧ श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास-स्थल- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, शान्ति भवन, हेड पोस्ट ऑफिस के सामने, भीलवाड़ा-311001 (राज.) फोन : 01482-222602, 232599

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री गुलाब सिंह जी लोढा, अध्यक्ष, श्री वर्द्धमान कलेक्शन, 44-45, नागौरी गार्डन, भीलवाड़ा-311001 (राज.), फोन : 01482-232413, 98290-46413
2. श्री नवरतनमल जी सूरिया, मंत्री-01482-220368, 235550, 94130-57108
3. श्री महेन्द्रकुमार जी मेहता-01482-221446, 94138-08080
4. श्री दाड़मचन्द जी रांका, द्वारा-नूतन मेडिकल स्टोर, हॉस्पिटल रोड, भीलवाड़ा-311001 (राज.), फोन : 01482-253945, 94121-48982

आवागमन के साधन- चातुर्मास स्थल भीलवाड़ा रेलवे स्टेशन से आधा किमी की दूरी पर एवं बस स्टेण्ड से डेढ़ किमी की दूरी पर स्थित है।

4. पाली-मारवाड़ (राज.)

❧ सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा.

❧ श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा.

❧ श्रद्धेय श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास-स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, सुराणा मार्केट, पाली-306401 (राज.), फोन: 02932-250021, 94610-16028

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री रूपकुमारजी चौपडा, बी-60, वीर दुर्गादास नगर, पाली-306401, मो. 94141-22304
2. श्री चैनराजजी मेहता, 112-नेहरू नगर, पाली-306401(राज.), मो. 94130-79693

आवागमन के साधन- पाली शहर जोधपुर, मेड़तासिटी, अजमेर, जयपुर, बिलाड़ा, ब्यावर जैसे समीपवर्ती शहरों के साथ ही सुदूरवर्ती क्षेत्रों से सड़क तथा रेल मार्ग से जुड़ा हुआ है। पाली से सभी शहरों के लिए नियमित अन्तराल पर रोडवेज एवं प्राइवेट बसें उपलब्ध रहती हैं। चातुर्मास स्थल शहर के बस स्टेण्ड से 1.5 कि.मी. व रेलवे स्टेशन से 3.5 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

5. जयपुर शहर (राज.)

❧ साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकंवरजी म.सा.

❧ व्याख्यात्री महासती श्री सुमनलता जी म.सा.

❧ महासती श्री पुष्पलता जी म.सा.

❧ महासती श्री स्नेहलता जी म.सा.

❧ महासती श्री मंजूलता जी म.सा.

❧ महासती श्री निरंजना जी म.सा.

❧ महासती श्री चैतन्यप्रभा जी म.सा.

❧ महासती श्री दिव्यप्रभा जी म.सा.

❧ महासती श्री मैत्रीप्रभा जी म.सा.

❧ महासती श्री सुदर्शना जी म.सा.

❧ महासती श्री प्रियदर्शना जी म.सा. ठाणा 11

चातुर्मास-स्थल- श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, लाल भवन, चौड़ा रास्ता, जयपुर-302003 (राज.), फोन : 0141-2312414, 4037271, 2565953, मोबाइल: 96609-88458

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री प्रकाशचन्दजी हीरावत, अध्यक्ष, हीरावतों का चौक, परतानियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर-302001(राज.), फोन: 0141-2222707, 99826-22707
2. श्री विमलचन्दजी डागा, मंत्री, 1370, ताराचन्द नायब जी का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर-302001 (राज.), फोन : 0141-2576152, 98290-11588
3. श्री सुरेशचन्दजी कोठारी-0141-2222810, 93145-01627, 94617-71866
4. श्री अशोककुमारजी सेठ-0141-2574749, 93146-25596

आवागमन के साधन- सभी राज्यों से सीधी रेल तथा रोडवेज एवं प्राइवेट बस सेवा उपलब्ध है। सिंधी कैम्प बस स्टेण्ड से सभी स्थानों के लिए प्रत्येक 15 मिनट के अन्तराल से बस सेवा उपलब्ध है। लाल भवन स्थानक जयपुर रेलवे स्टेशन से 4 किमी एवं बस स्टेण्ड से 4 किमी की दूरी पर स्थित है।

6. पावटा-जोधपुर (राज.)

- ✚ तत्त्वचिंतिका महासती श्री रतनकंवरजी म.सा.
 ✚ महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा.
 ✚ महासती श्री शांतिप्रभाजी म.सा.
 ✚ महासती श्री दर्शनलताजी म.सा.
 ✚ महासती श्री शशिकलाजी म.सा.
 ✚ महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा.
 ✚ महासती श्री उषाजी म.सा.
 ✚ महासती श्री सुव्रतप्रभाजी म.सा.
 ✚ महासती श्री कान्ताजी म.सा.
 ✚ महासती श्री आनंदप्रभाजी म.सा. ठाणा 10
- चातुर्मास-स्थल-** श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, सामायिक-स्वाध्याय भवन, सी-55, धर्मनारायणजी का हत्था, पावटा, जोधपुर-342006 (राज.), फोन: 0291-2550146, अतिथि भवन फोन नं. 0291-2550147

सम्पर्क-सूत्र-

1. क्र.सं. (2) के 1 व 2 के अनुसार
2. श्री नरपतराजजी चौपड़ा, पावटा- फोन : 0291-2545265, मो. 094604-22134
3. श्री पारसमलजी गिड़िया, पावटा-फोन: 0291-2545104, मो. 094601-08060

आवागमन के साधन- पावटा स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन जोधपुर मुख्य रेलवे स्टेशन से 4 कि.मी. एवं राईकाबाग रेलवे स्टेशन व बस स्टेण्ड से आधा कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

7. कोटा (राज.)

- ✚ विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा.
 ✚ महासती श्री विनयप्रभाजी म.सा.
 ✚ महासती श्री रक्षिताजी म.सा.
 ✚ महासती श्री पूनमश्रीजी म.सा. ठाणा 4
- चातुर्मास-स्थल-** श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रीसंघ, कोतवाली के सामने, रामपुरा बाजार, कोटा-324001 (राज.), फोन: 0744-2382711

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री बुद्धिप्रकाशजी जैन, वर्द्धमान नमकीन्स, गुमानपुरा मेन रोड, कोटा-324001 मो. 94141-77139
2. श्री जगदीशप्रसादजी जैन, मो. 94608-63488
3. श्री अनिलजी जैन, मो. 94133-13711
4. श्री ज्ञानचन्दजी लोढा, मो. 88900-92722
5. श्री राजकुमारजी नवलखा मो. 77918-60947

आवागमन के साधन- कोटा भारत के प्रमुख शहरों से रेल एवं बस सेवा से जुड़ा हुआ शहर है। रामपुरा बाजार स्थानक मुख्य रेलवे स्टेशन से 7 किमी. तथा नयापुरा बस स्टेण्ड से 1.5 किमी. की दूरी पर स्थित है।

8. घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.)

- ✚ विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा.
 ✚ महासती श्री सुश्रीप्रभाजी म.सा.
 ✚ महासती श्री शारदाजी म.सा.

ॐ महासती श्री लीलाकंवरजी म.सा.

ॐ महासती श्री विजयश्रीजी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास-स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, वर्द्धमान अस्पताल के पास, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) फोन :0291-2624891, 2636763, 2641445

सम्पर्क-सूत्र-

1. क्र.सं. (2) के 1 व 2 के अनुसार
2. श्री राजीव जी मेहता-094133-19570,
3. श्री धीरजजी डोसी-94625-43360
4. श्री मदन जी भंडारी-99835-79439
5. श्री नरेन्द्र जी बुबकिया-94144-39043

आवागमन के साधन- चातुर्मास स्थल जोधपुर रेलवे स्टेशन से 1 किमी. एवं बस स्टेण्ड से 3 किमी की दूरी पर स्थित है।

9. हरमाड़ा, जिला-अजमेर (राज.)

ॐ व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवरजी म. सा.

ॐ महासती श्री कौशल्याजी म.सा.

ॐ महासती श्री पुनीतप्रभाजी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास-स्थल- श्री जैन श्वेताम्बर स्थानक, सदर बाजार, हरमाड़ा-305812, वाया मदनगंज, जिला-अजमेर (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री मंगलचन्दजी चोरडिया, अध्यक्ष-सदर बाजार, पो. हरमाड़ा-305812, वाया मदनगंज, जिला-अजमेर (राज.), फोन : 01497-224023
2. श्री धरमीचन्दजी मेहता, मंत्री-सदर बाजार, पो. हरमाड़ा-305812, वाया मदनगंज, जिला-अजमेर (राज.), फोन : 01497-224026, 81046-97589
3. श्री महावीरप्रसादजी चोरडिया-1497-224016, 93142-85986
4. श्री प्रेमचन्दजी लुणावत-01497-224014, 94607-08235

5. श्री गौतमकुमारजी मेहता-94140-10801

आवागमन के साधन- हरमाड़ा किशनगढ़ रेलवे स्टेशन से 17 किमी एवं बाईपास मार्बल सिटी पेट्रोल पम्प से 15 किमी की दूरी पर स्थित है। किशनगढ़ जयपुर, जोधपुर, ब्यावर, अजमेर सभी स्थानों से जुड़ा हुआ है।

10. हिण्डौनसिटी, जिला-करौली

ॐ व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा.

ॐ महासती श्री विमलावतीजी म.सा.

ॐ महासती श्री जागृतिप्रभाजी म.सा.

ॐ महासती श्री परागप्रभाजी म.सा.

ॐ महासती श्री वृद्धिप्रभाजी म.सा.

ॐ महासती श्री ऋद्धिप्रभाजी म.सा.

ॐ महासती श्री सिद्धिप्रभाजी म.सा. ठाणा 7

चातुर्मास-स्थल- जैन स्थानक, नई मण्डी, हिण्डौन शहर-322230, जिला-करौली (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री धर्मचन्दजी जैन, न्यू ब्रह्मपुरी कॉलोनी, मण्डावरा रोड़, हिण्डौनशहर-322230, जिला-करौली(राज.), मो. 94606-28715
2. श्री निर्मलकुमारजी जैन, आदिनाथ गारमेन्ट्स, जगदम्बा मार्केट, मोहननगर, हिण्डौनशहर-322230, जिला-करौली (राज.), मो.82902-98204
3. श्री हेमचन्दजी जैन-94603-46917

आवागमन के साधन- हिण्डौनसिटी पश्चिम मध्य रेलवे दिल्ली-मुम्बई रेल मार्ग पर स्थित है। सभी रेलों का ठहराव है। जयपुर से 160, आगरा से 108 किमी. की दूरी पर है। प्रतिघंटा बस सेवा उपलब्ध है। चातुर्मास स्थल रेलवे स्टेशन से 1 किमी. की दूरी पर स्थित है।

11. अजमेर (राज.)

ॐ व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा.

ॐ महासती श्री इन्दिराप्रभाजी म.सा.

ॐ महासती श्री सुयशप्रभाजी म.सा.

ॐ महासती श्री प्रभावतीजी म.सा. ठाणा 4

चातुर्मास-स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन,

अरिहन्त कॉलोनी, पुष्कर रोड, अजमेर-305022
(राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री विवेकजी महनोत, मैसर्स कस्तूरचन्द मौखमसिंह, मेटल मर्चेण्ट, नया बाजार, अजमेर-305002 (राज.), फोन नं. 0145-2420571 मो. 98291-54156
2. श्री चन्द्रप्रकाशजी कटारिया, 53-नवग्रह कॉलोनी, पुष्कर रोड, अजमेर-305022 (राज.) फोन नं. 0145-2621819, 94142-81050
3. श्री चन्द्रप्रकाश जी कोठारी-98290-70092
4. श्री रिखबचन्द जी माण्डोत-94140-07508

आवागमन के साधन - अजमेर सभी प्रमुख शहरों से जुड़ा शहर है। रेलवे स्टेशन व बस स्टैण्ड से चातुर्मास स्थल 4 किमी. की दूरी पर स्थित है। नियमित रूप से बस सेवा उपलब्ध है।

12. जबलपुर (मध्यप्रदेश)

- ❧ व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा.
- ❧ महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा.
- ❧ महासती श्री अंजनाजी म.सा.
- ❧ महासती श्री सिन्धुप्रभाजी म.सा.
- ❧ महासती श्री तितिक्षाश्री जी म.सा.
- ❧ नवदीक्षिता महासती श्री हेमप्रभाजी म.सा.

ठाणा 6

चातुर्मास-स्थल- जैन स्थानक भवन, सेठ निहालचंद कॉम्प्लेक्स, मेन रोड, जबलपुर-482001 (म.प्र.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री मदनलालजी बागमार, अध्यक्ष-रेमण्ड रिटेल शॉप, नौद्रा ब्रिज, देशबन्धु कॉम्प्लेक्स के सामने, जबलपुर-482001 (म.प्र.), फोन: 0761-4016491, 94253-24624 (मो.)
2. श्री विजयराजजी रांका, मंत्री- विकास साड़ी सेण्टर, मेन रोड, गोरखपुर, जबलपुर-482001 (म.प्र.), फोन: 0761-2413977, 094797-57977
3. श्री राजेशजी बागमार, फोन : 0761-4016491,

94251-52668 (मोबाइल)

4. श्री महावीरचंदजी चौपड़ा, मो. 93001-01342

आवागमन के साधन- जबलपुर देश के अनेक शहरों से रेल द्वारा जुड़ा हुआ है तथा मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ के प्रमुख नगरों एवं नागपुर से सड़क मार्ग द्वारा भी जुड़ा हुआ है। मुम्बई, दिल्ली, हैदराबाद, भोपाल से सीधी हवाई सेवा उपलब्ध है। चातुर्मास स्थल रेलवे स्टेशन से 3 किमी एवं बस स्टैण्ड से 7 किमी की दूरी पर स्थित है।

13. भोपालगढ़ (राज.)

- ❧ व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा.
- ❧ महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.
- ❧ महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा.
- ❧ महासती श्री नव्यप्रभाजी म.सा.
- ❧ महासती श्री सरोजश्री जी म.सा.
- ❧ महासती श्री अरिहाश्री जी म.सा.
- ❧ महासती श्री महिमाश्री जी म.सा.
- ❧ नवदीक्षिता महासती श्री मधुश्री जी म.सा.

ठाणा 8

चातुर्मास-स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, जैन स्थानक, (छोटा उपासरा), सदर मार्केट रोड, पो. भोपालगढ़-342603, जिला-जोधपुर (राज.)

सम्पर्क-सूत्र एवं आवागमन के साधन- क्रमांक 1 के अनुसार

14. नेहरू पार्क, जोधपुर (राज.)

- ❧ व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा.
- ❧ महासती श्री भावना जी म.सा.
- ❧ महासती श्री प्रीतिश्री जी म.सा.
- ❧ महासती श्री गरिमाश्री जी म.सा.
- ❧ नवदीक्षिता महासती श्री कल्पयशजी म.सा.

ठाणा 5

चातुर्मास-स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, नेहरू पार्क, कुम्हार छात्रावास के सामने, तारघर, जोधपुर-342003 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. क्र.सं. के 1 व 2 के अनुसार
2. श्री अरूणजी मेहता, मो. 98281-41757
3. श्री मंगलचन्दजी चौपडा मो. 93146-64858

आवागमन के साधन- नेहरूपार्क स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन जोधपुर मुख्य रेलवे स्टेशन से 2 कि.मी. एवं राईकाबाग रेलवे स्टेशन व बस स्टेण्ड से 6 कि.मी. की दूरी पर स्थित है।

15. शिवमोगगा (कर्नाटक)

- ॐ व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा.
 ॐ महासती श्री श्रुतिप्रभाजी म.सा.
 ॐ महासती श्री मतिप्रभाजी म.सा.
 ॐ महासती श्री भव्यप्रभाजी म.सा.
 ॐ महासती श्री दीपिकाश्री जी म.सा. ठाणा 5

चातुर्मास-स्थल- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, रामण्णा श्रेष्ठि पार्क, गाँधी बाजार, शिवमोगगा-577202 (कर्नाटक) फोन : 08182-222613

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री मोहनकरणजी मेहता, अध्यक्ष, विनायक कॉरपोरेशन, मंजुनाथ काम्पलेक्स, गाँधी बाजार, शिवमोगगा-577202 (कर्नाटक), फोन: 08182-224257, 94481-24257
2. श्री शान्तिलालजी मेहता, मंत्री, श्री ट्रेडर्स, फर्स्ट क्रॉस, गाँधी बाजार, शिवमोगगा-577202 (कर्नाटक), फोन: 08182-270534, 94484-37971
3. श्री अमृतलालजी बागरेचा, मोबाइल : 93433-11790
4. श्री नरेन्द्रकुमारजी कवाड़, फोन: 08182-260338, 97425-64905

आवागमन के साधन- शिवमोगगा मुम्बई, बैंगलोर, हुबली से रेल द्वारा एवं बैंगलोर, हुबली, मुम्बई से सीधे बस द्वारा पहुँचा जा सकता है। चातुर्मास स्थल रेलवे स्टेशन से 3 किमी एवं बस स्टेण्ड से 2 किमी की दूरी पर स्थित है।

16. फरीदकोट (पंजाब)

- ॐ व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा.
 ॐ महासती श्री उदितप्रभाजी म.सा.
 ॐ महासती श्री संयमप्रभाजी म.सा.
 ॐ महासती श्री कोमलश्री जी म.सा. ठाणा 4
चातुर्मास-स्थल- श्री एस.एस. जैन सभा, किला चौक के पास, फरीदकोट-151203 (पंजाब)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री शरतजी जैन-प्रधान, ऊंची गली, अंजना एकेडमी के पास, फरीदकोट-151203 (पंजाब), मो. 98148-48293
2. श्री पंकजजी जैन-मंत्री, मंदिर वाली गली, सेठिया मौहल्ला, फरीदकोट-151203 (पंजाब), मो. 98141-70128
3. श्री नरेशजी जैन, मो. 94173-82374
4. श्री जिनेन्द्रजी जैन-मैनेजर, मो. 98140-00830

आवागमन के साधन- फरीदकोट पंजाब का प्रतिष्ठित शहर है। स्थानक रेलवे स्टेशन से लगभग 3 किमी. तथा बस स्टेण्ड से 2 किमी.की दूरी पर स्थित है। जोधपुर एवं जयपुर से सीधी रेल सेवा उपलब्ध है।

17. जामनेर (महा.)

- ॐ व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभाजी म.सा.
 ॐ महासती श्री देवागंजाजी म.सा.
 ॐ महासती श्री सुभद्राजी म.सा.
 ॐ महासती श्री वर्षा जी म.सा. ठाणा 4
चातुर्मास-स्थल- महावीर भवन, नगरखाना के पास, पो. जामनेर-424206, जिला-जलगांव (महा.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री सुरेशचन्दजी मोतीलालजी ललवाणी, फोन : 02580-230183, मो. 94404-31837
2. श्री ईश्वरचन्दजी दीपचन्दजी सामडा, फोन : 02580-230021, मो.94043-71221
3. श्री ईश्वरलालजी ललितकुमारजी लोढा, जलगांव रोड़, शिवाजी नगर, पो. जामनेर-424206, जिला-जलगांव (महा.), मो. 94215-17870, 94239-

04366

आवागमन के साधन- जामनेर भुसावल से रेल द्वारा 25 किमी. एवं जलगांव से 35 किमी. की दूरी पर स्थित है। बस द्वारा जामनेर जलगांव से 35 किमी., पहरू से 15 किमी. की दूरी पर स्थित है।

18. काचीगुड़ा (हैदराबाद)

✚ सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा.

✚ महासती श्री यशप्रभाजी म.सा.

✚ महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा.

✚ महासती श्री भक्तिप्रभाजी म.सा.

✚ महासती श्री ज्योतिप्रभाजी म.सा.

✚ महासती श्री विदेहाश्रीजी म.सा.

✚ महासती श्री विरक्ताश्रीजी म.सा. ठाणा 7

चातुर्मास-स्थल- श्री पुनमचन्द गाँधी जैन स्थानक, नं. 3-4-1022, रेलवे स्टेशन के सामने, कांचीगुड़ा, हैदराबाद-500027 (तेलंगाना)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री कान्तिलालजी नाहर, अध्यक्ष-040-27564820, 99599-95008
2. श्री कान्तिलालजी पितलीया, मंत्री-93924-14084
3. श्री हस्तीमलजी गुन्देचा, कार्याध्यक्ष- 2.2.1075/20/ए/7, तिलक नगर, हैदराबाद- 500027 (तेलंगाना), मोबाइल : 98664-14110

आवागमन के साधन- काचीगुड़ा रेलवे स्टेशन के सामने चातुर्मास स्थल स्थित है। इमलीबन बस स्टेशन से 2.5 किमी पर स्थित है। हैदराबाद इण्टरनेशनल हवाई अड्डा है।

19. भायंदर, मुम्बई (महा.)

✚ व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा.

✚ महासती श्री विवेकप्रभाजी म.सा.

✚ महासती श्री कृपाश्रीजी म.सा.

✚ महासती श्री प्रज्ञाश्रीजी म.सा.

✚ महासती श्री संवेगश्रीजी म.सा.

✚ महासतीश्री आराधनाश्रीजी म.सा. ठाणा 6

चातुर्मास-स्थल- श्री भायंदर वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, महावीर अपार्टमेन्ट, भाजी गली, स्टेशन रोड़, भायंदर (वेस्ट), जिला-ठाणा-401101 (महा.), फोन: 022-28199899

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री रतनराज नेमीचन्दजी भण्डारी, अध्यक्ष- ए-404, पंचशील हाइटस, महावीर नगर, कांदिवली (वेस्ट), मुम्बई-400066 (महा.), फोन: 022-28600313, 98226-41172
2. श्री नरेन्द्रभाई सी. गाँधी, मंत्री-022-28182881, 98200-76460
3. श्री सुरेशभाई एच. दलाल, बी-309/310, व्येकटेश आशीष बालाजी कॉम्प्लेक्स, 150 फीट रोड़, भायंदर (वेस्ट), ठाणा-401101 (महा.), फोन: 93243--34317
4. श्री मुकेश राजमलजी जैन, मो. 98202-59711

आवागमन के साधन- भायंदर रेलवे स्टेशन से स्थानक आधा किमी की दूरी पर एवं शिवसेना गली, भायंदर बस स्टेशन से आधा किमी की दूरी पर स्थित है। बाहर से आने वाले श्रद्धालुओं द्वारा बोरीवली से लोकल ट्रेन पकड़कर भायंदर पहुँचा जा सकता है।

20. नागौर (राज.)

✚ व्याख्यात्री महासती प्रतिष्ठाप्रभाजी म.सा.

✚ महासती श्री शिक्षाश्रीजी म.सा.

✚ महासती श्री खुशबूश्रीजी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास-स्थल- सामायिक स्वाध्याय भवन, बोड़ा की पोल, गणेश चौक, नागौर-341001 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री भंवरलालजी कांकरिया, अध्यक्ष, गणेश चौक, नागौर-341001 (राज.), फोन : 01582-242643, 94142-16594
2. श्री निर्मलचन्दजी सुराणा, मंत्री, सांवा गली, नागौर-341001 (राज.), फोन: 01582-240226, 93517-39183
3. श्री कमलचन्दजी उम्मेदमलजी सुराणा, फोन: 01582-240524, 94141-18624

आवागमन के साधन- नागौर शहर चेन्नई, गुवाहाटी, कोलकाता, मुम्बई, बैंगलोर, कोटा, जयपुर, नागपुर, सूरत, अहमदाबाद आदि सभी स्थानों से रेल मार्ग से जुड़ा हुआ है। बस द्वारा नागौर शहर सम्पूर्ण राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात, दिल्ली, हरियाणा आदि से जुड़ा हुआ है। नागौर शहर जोधपुर से 135 किमी, अजमेर से 165 किमी, बीकानेर से 115 किमी, जयपुर से 250 किमी पर स्थित है। चातुर्मास स्थल बस एवं रेलवे स्टेशन से 1.5 किमी की दूरी पर स्थित है।

21. हाउसिंग बोर्ड, सवाईमाधोपुर

❧ व्याख्यात्री श्री संगीताश्री जी म.सा.

❧ महासती श्री भविताश्री जी म.सा.

❧ महासती श्री लक्षितप्रभाजी म.सा. ठाणा 3

चातुर्मास-स्थल- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, 3/48, स्वाध्याय भवन, आवासन मण्डल, सवाई-माधोपुर-322021 (राज.)

सम्पर्क-सूत्र-

1. श्री मोहनलालजी जैन 'करेला वाले', अध्यक्ष-1/279, आवासन मण्डल, सवाईमाधोपुर-322021 (राज.), मोबाइल : 77279-72984, 77279-72984
2. श्री संजयकुमारजी जैन 'जुवाड़ वाले', मंत्री-2/26, आवासन मण्डल, सवाईमाधोपुर-322021 (राज.), मोबाइल : 94131-55796, 97828-85305
3. श्री लल्लूलालजी जैन, मो. 94604-41587
4. श्री ऋषभजी जैन 'बाबई वाले', मो. 96606-05252, 86199-92085

आवागमन के साधन- सवाईमाधोपुर जंक्शन पर दिल्ली, मुम्बई, जयपुर, जोधपुर से आने वाली सभी गाड़ियों का ठहराव है। सवाईमाधोपुर जयपुर से 132 किमी एवं कोटा से 108 किमी की दूरी पर स्थित है। चातुर्मास स्थल सवाईमाधोपुर जंक्शन से 4 किमी की दूरी पर स्थित है।

अन्य प्रमुख चातुर्मास

1. इन्दौर (मध्यप्रदेश) - आचार्य श्री शिवमुनिजी म.सा.
2. सूरत (गुजरात) - आचार्य श्री रामलालजी म.सा.
3. आगर (मध्यप्रदेश) - ज्ञानगच्छाधिपति श्री प्रकाशचन्दजी म.सा.
4. राजनांदगाँव (छत्तीसगढ़) - आचार्य श्री विजयराजजी म.सा.
5. पीपाड़सिटी (राज.) - आचार्य श्री शुभचन्द्रजी म.सा.
6. चैन्नई (तमिलनाडु) - आचार्य श्री सुदर्शनलालजी म.सा.
7. हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश) - आचार्य श्री ज्ञानचन्दजी म.सा.
8. धुलिया (महा.) - समर्थगच्छाधिपति श्री उत्तममुनिजी म.सा.

आगामी पर्व तिथि

श्रावण कृष्णा 8, सोमवार	17.07.2017	अष्टमी
श्रावण कृष्णा 14, शनिवार	22.07.2017	चतुर्दशी
श्रावण कृष्णा 30, रविवार	23.07.2017	पक्खी, आचार्य शोभाचन्द्रजी म.सा. की 91 वीं पुण्य तिथि
श्रावण शुक्ला 8, सोमवार	31.07.2017	अष्टमी
श्रावण शुक्ला 14, रविवार	06.08.2017	चतुर्दशी
श्रावण शुक्ला 15, सोमवार	07.08.2017	पक्खी
भाद्रपद कृष्णा 8, मंगलवार	15.08.2017	अष्टमी
भाद्रपद कृष्णा 12, शनिवार	19.08.2017	पर्युषण प्रारम्भ
भाद्रपद कृष्णा 14, रविवार	20.08.2017	चतुर्दशी
भाद्रपद कृष्णा 30, सोमवार	21.08.2017	पक्खी
भाद्रपद शुक्ला 5, शनिवार	26.08.2017	संवत्सरी महापर्व

समाचार विविधा

गोटन से असावरी होते हुए पूज्य आचार्यप्रवर का नाडसर में पदार्पण

चातुर्मास प्राप्ति से भोपालगढ़ का संघ उत्साहित

आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, ज्ञान सुधाकर, गुणरत्नाकर, सामायिक-शीलव्रत-रात्रिभोजन-त्याग-व्यसन-मुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव, रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यात्री श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 9 के असावरी प्रवासकाल में भोपालगढ़ संघ 29 एवं 30 मई को उपस्थित हुआ। 31 मई को बारनी खुर्द, आसोप, नाडसर संघ क्षेत्र फरसने की विनति लेकर उपस्थित हुए। पूज्य आचार्यप्रवर यहाँ एक सप्ताह विराजे। वीर भ्राता श्री जितेन्द्र जी लोढ़ा ने गोटन से गारासनी तक विहार सेवा एवं सान्निध्य का लाभ लिया।

पूज्य आचार्यप्रवर 01 जून को गारासनी पधारे। यहाँ श्री महावीरचन्द्रजी बाफना की भावना प्रमोदकारी रही। गोटन संघ के सदस्यों ने गोटन से गारासनी तक विचरण-विहार सेवा का बराबर लाभ लिया। श्री लालचन्द्रजी सिंघवी आदि छह भाइयों वाले परिवार जनों की भावना के कारण पूज्यपाद 2 एवं 3 जून को आसोप विराजे। आसोप की धरा पर पूज्य आचार्यप्रवर का 29 वर्षों पश्चात् एवं अपने आचार्यकाल में प्रथम बार पदार्पण हुआ। प्रजापति समाज एवं अन्य भाइयों ने दोनों ही दिन प्रवचन-श्रवण का लाभ लिया। सिंघवी परिवार आगतों की आतिथ्य सेवा में तत्पर रहा। 04 जून को नाराधाणियाँ की ढाणी विराजे। श्री रामचन्द्रजी, श्री हनुमानजी, श्री रामूरामजी पटवारी चौधरी की श्रद्धाभक्ति सराहनीय रही।

05 जून को आपका बारनी खुर्द में मंगलमय पदार्पण हुआ। यहाँ से दीक्षित श्रद्धेय श्री कैलाशमुनिजी म.सा., साध्वीप्रमुखा सरलहृदया महासती श्री सायरकंवरजी म.सा., शासनप्रभाविका साध्वीप्रमुखा महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा., सेवाभावी महासती श्री विमलावतीजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. एवं महासती श्री पुनीतप्रभाजी म.सा. का शासन प्रभावना में महनीय योगदान है। 06 जून को महामंदिर जोधपुर हेतु महासतीवृन्द के चातुर्मास की विनति लेकर पदाधिकारी उपस्थित हुए। 08 जून को सिंघवी परिवार के भाई-बहनों, जो मूलतया बारनी के निवासी हैं तथा वर्तमान में जिनकी कर्म भूमि जोधपुर, जालोर एवं पाली है, ने नित्य सामायिक करने के नियम पूज्य गुरुदेव के मुखारविन्द से स्वीकार किए। पूणिया श्रावक श्री पारसमलजी खटोड़ एवं उनके साथ श्री मोहनलालजी नाहर-विजयनगर से 09 जून को दर्शनार्थ उपस्थित हुए। 10 जून को नागौर संघ एवं 11 जून को जयपुर के पोरवाल संघ की नवगठित कार्यकारिणी के सदस्यों ने अध्यक्ष श्री मेघराजजी जैन के साथ तथा प्रतापनगर, जयपुर से पल्लीवाल सभा के पदाधिकारियों ने दर्शन लाभ लिया। 13 जून को युवक परिषद् के नई कार्यकारिणी के सदस्य पीपाड़ से गुरुदेव की सेवा में समय दान देने की भावना से एवं साथ कार्य करने के संकल्प हेतु ऊर्जा ग्रहण करने के लिए उपस्थित हुए। बारनी में 12 दिन वीतरागवाणी का वर्षण हुआ। जैनेतर भाई-बहनों में प्रवचन-श्रवण की ललक रही। 2.00 से 3.30 बजे तक भीषण गर्मी में भी स्थानक परिसर प्रतिदिन खचाखच भरा रहा। वीर परिवारों में से श्री राजकुमारजी, श्री महेन्द्रजी, श्री प्रवीणजी, श्री लोकाशजी सिंघवी, श्री हीरजी, श्री सुरेशजी भाटी, श्री कचरारामजी चौधरी, श्री जसरामजी सुथार

आदि की सराहनीय सेवाएँ रहीं। बारनी से 16 जून को सायंकाल विहार कर पूज्यश्री धूमगिरि मंदिर पधारे।

17 जून को नाडसर की भूमि पर सन्तवृन्द का पावन पदार्पण हुआ। गुरुभक्त न्यायाधिपति श्री जसराजजी चौपड़ा ने पूज्य आचार्यप्रवर की सेवा एवं चरण सन्निधि का लाभ लिया। यहाँ प्रवचन श्रवण हेतु ग्रामवासियों का उत्साह अनुकरणीय रहा। लोढ़ा परिवार ने सेवा का पूरा लाभ लिया। प्रवचन-श्रवण हेतु लगभग 400 श्रोता प्रतिदिन छोटे से ग्राम में एकत्रित हो रहे थे। गुरुदेव के विराजते समय पाँच-छह बार अच्छी वर्षा का संयोग बना। किसान इसका श्रेय आचार्य प्रवर को देते हुए कह रहे थे- “बाणिया समाज में जो सम्पन्नता है वह वास्तव में इन त्यागी गुरुओं की सेवा सन्निधि के कारण ही है। इस वर्ष तो बाणिया के महाराज ने हमें भी निहाल कर दिया।” नाडसर में आषाढी अमावस्या पर श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी एवं महान् अध्यक्षीय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. के विशेष प्रवचन हुए। इस दिन जैनेतर भाई-बहिनों ने 71 एकाशन तप किए। 14 उपवास सम्पन्न हुए जिनमें 10 उपवास जैनेतर भाई-बहिनों द्वारा श्रद्धा एवं उल्लास से किए गए। वर्षा के कारण प्रवचन में व्यवधान नहीं आया। 25 जून को श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा. ने पचोले की तपस्या सम्पन्न की। 27 जून को शासन सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलालजी बाफना ने सेवा सन्निधि का लाभ लिया। नाडसर में धर्मारोधना का अपूर्व ठाट लगा हुआ है। बहिन सुश्री सोहनी ने लगातार पाँच एकाशन तप किए। यहाँ प्रतिदिन एकाशन, उपवास के प्रत्याख्यान हो रहे हैं। एक बेला, 9 तेले और एक पचोले की आराधना हो चुकी है। आठ शीलव्रत के खंड हुए हैं। श्री प्रकाशचन्द्रजी, श्री शान्तिलालजी, श्री महावीरचन्द्रजी, श्री भंवरलालजी, श्री धर्मेशकुमारजी, श्री गौतमचन्द्रजी, श्री अशोककुमारजी लोढ़ा पूज्य आचार्यप्रवर के प्रवासकाल में अहोभाव से सेवा सन्निधि का लाभ ले रहे हैं। गुरु भक्तों का आवागमन बना हुआ है। नाडसर संघ की अतिथि सेवा सराहनीय है। यहाँ से भोपालगढ़ चातुर्मास हेतु विहार संभावित है।-*जगदीश जैन*

उपाध्यायप्रवर के सांनिध्य में धर्म-ध्यान की निरन्तरता

उपाध्यायप्रवर पण्डितरत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा सुखसातापूर्वक सामायिक-स्वाध्याय भवन पावटा में विराज रहे हैं। ज्येष्ठ शुक्ला चतुदशी 08 जून को क्रियोद्धारक आचार्य श्री रत्नचन्द्रजी म.सा. की 171 वीं पुण्यतिथि नवकार मंत्र के जाप एवं तपाराधन के साथ मनाई गई। आचार्य श्री रत्नचन्द्रजी म.सा. की जीवनी पर तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. ने सुन्दर प्रकाश डाला। आषाढ कृष्णा द्वितीया, 11 जून को क्रियोद्धारक दिवस मनाया गया। तत्त्वचिन्तक मुनिश्री भेदविज्ञान, संघ-सेवा, संत-सेवा, लक्ष्य को पहचान आदि विषयों पर प्रवचन फरमा रहे हैं। उपाध्यायप्रवर 28 जून को विहार कर कुशल जैन छात्रावास पधारे। 29 जून को शीतलनाथ जैन मंदिर होते हुए 30 जून को रेनबो हाउस पधारे हैं। यहाँ से चातुर्मास हेतु प्रवेश की सम्भावना है।-*सुभाषचन्द्र हुण्डीवाल, मंत्री*

कंवलियास- पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा 3 का ब्यावर से भीलवाड़ा की ओर विहार करते हुए कंवलियास पदार्पण हुआ। वर्षों पश्चात् रत्नसंघीय संतों को अपने मध्य पाकर इस क्षेत्र में अनुपम आराधना-साधना का वातावरण रहा। मसूदा, विजयनगर, सरैरी आदि स्थानों पर भी इसी प्रकार श्रावक-श्राविकाओं में उल्लास देखा गया। लोगों ने अहोभाव से जिज्ञासु बनकर प्रवचनों एवं आगम वाचनी का लाभ लिया। प्रवचनों में विशाल उपस्थिति तथा सामायिक वेश में बैठकर लाभ लेने की प्रवृत्ति दिखाई दी। कंवलियास में 23 वर्ष पहले उपाध्यायप्रवर का यशस्वी चातुर्मास हुआ था। वही उत्साह, धर्म रुचि तथा श्रद्धा भाव देखने को मिला। मध्यवर्ती ग्राम-नगरों को फरसते हुए 26 जून को संतप्रवरों ने भीलवाड़ा के उपनगर में प्रवेश किया।-*संजय सुराणा, कंवलियास*

हैदराबाद- व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा का 03 मई 2017 को खेरताबाद स्थानक में

पदार्पण हुआ। यहाँ की आग्रह भरी विनति के कारण लगभग 10 दिन विराजे। यहाँ से डी.वी. कॉलोनी, सिकन्द्राबाद, कोरा संघ, बोधधनपल्ली, डेरी फार्म रोड़, इन्दिरा नगर, लाल बाजार, मल्लकाजगिरी, लाला पेट शान्तिनगर, मारडपल्ली आदि उपनगरों को फरसते हुए चातुर्मास स्थल की ओर बढ़ रही हैं। नगर भ्रमण एवं विहार सेवा में श्री श्रीपालजी देशलहरा, हस्तीमलजी गुन्देचा, विजयराजजी छाजेड़, दलपतराजजी छाजेड़, दिलसुखराजजी दफ्तरी, मनोहरजी, आनन्दजी, बसन्तजी, प्रेमराजजी बागमार, सुकनराजजी, गौतमचन्दजी, राजेशकुमारजी, सज्जनराजजी गुगलिया, राजेन्द्रजी कटारिया की उल्लेखनीय सेवाएँ प्राप्त हुईं। महासती जी का जब से हैदराबाद में प्रवेश हुआ है, तब से लासुर संघ, कोल्हापुर संघ, अहमदाबाद संघ, जलगांव संघ का निरन्तर आवागमन रहा है। महासतीवर्या के सान्निध्य में 16 मई को कोरा की 'सुधर्मा पौषध शाला' में पूज्य आचार्यप्रवर का 27 वां आचार्यपद ग्रहण दिवस मनाया गया, जिसमें अनेक भाइयों ने सामायिक-स्वाध्याय के साथ एकाशन, आयंबिल, उपवास, पौरषी, डेढ पौरषी के प्रत्याख्यान किए। -*गौतमचन्द गुगलिया, सहमंत्री*

मुम्बई- व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा 6 का मुम्बई के उपनगरों में विचरण-विहार चल रहा है। 11 जून को विले पारले स्थानक में सामूहिक सामायिक का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें 150-175 सदस्यों ने सामायिक-स्वाध्याय के साथ प्रवचन-श्रवण का लाभ लिया। प्रवचन का विषय था 'संसार असार है'। 17 जून को एवरशार्डन नगर, मलाड़ स्थानक में महिला मण्डल का सामायिक कार्यक्रम रखा गया, जिसमें 50-60 महिलाओं ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। 25 जून को योगी नगर स्थानक में शनिवार-रविवार को धर्मध्यान का श्रावक-श्राविकाओं को विशेष लाभ प्राप्त हुआ। 100 से 125 श्रावकों ने धर्मारधना की। दोपहर 2 से 4 बजे महिला मण्डल के साथ तत्त्वचर्चा हुई। यहाँ अशोक जी कोठारी ने आजीवन शीलव्रत स्वीकार किया।

दक्षिण भारतीय रत्न बंधुओं का प्रथम क्षेत्रीय सम्मेलन सम्पन्न

मैसूर (कर्नाटक)- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ (कर्नाटक) बैंगलुरु के तत्त्वावधान में मैसूर संघ के सौजन्य से दक्षिण भारतीय रत्न बन्धुओं का प्रथम क्षेत्रीय सम्मेलन सानन्द सम्पन्न हुआ। श्रावक संघ ट्रस्ट (कर्नाटक) बैंगलुरु, श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल (कर्नाटक) बैंगलुरु, श्री जैन रत्न युवक परिषद् (कर्नाटक) बैंगलुरु के संयुक्त सहयोग से आयोजित इस सम्मेलन में बीजापुर सोरापुर, बल्लारी, रायचूर, हुबली, कोप्पल, बागलपेट, हैदराबाद, सिकन्द्राबाद, चेन्नई, बैंगलुरु, मैसूर आदि ग्राम नगरों के करीब 300 प्रतिनिधियों ने सक्रियता से भाग लिया। शुरुआत प्रातःकालीन सामूहिक सामायिक कार्यक्रम से हुई। सम्मेलन में मुख्य अतिथि श्री मोफतराजजी मुणोत-मुम्बई, अध्यक्ष श्री पी. शिखरमल जी सुराणा-चेन्नई, विशिष्ट अतिथि श्री आनन्दजी चौपड़ा-जयपुर, श्री कैलाशचन्दजी हीरावत-जयपुर, श्री सुमेरसिंहजी बोथरा-जयपुर, अतिथि श्री राजकुमारजी गोलेच्छा-पाली, गो-सेवी श्री सोहनलालजी बागमार-मैसूर, गोशाला प्रेमी श्री शांतिलालजी खबिया-मैसूर, गुरुभक्त श्री रिखबचन्दजी धोका, श्री पदमराजजी मेहता-बैंगलुरु, श्री धनरूपचन्दजी मेहता-बैंगलुरु, श्री चेतनप्रकाशजी डूंगरवाल-बैंगलुरु, श्री पारसमलजी बोथरा-बीजापुर-बल्लारी, श्री छगनमलजी लुणावत-बैंगलुरु, श्री गौतमचन्दजी ओस्तवाल-बैंगलुरु, श्रीमती वैजयन्तीजी मेहता-बैंगलुरु, श्री प्रमोदकुमारजी सिंघवी-बैंगलुरु आदि महानुभावों द्वारा मंचासीन होने के बाद सर्वप्रथम मंगलाचरण श्री संपतराजजी बागमार-मैसूर ने प्रस्तुत किया। वन्दन गीत एवं स्वागत गीत के पश्चात् कर्नाटक प्रांतीय संघमंत्री व सभा/मंच संचालक प्रखरवक्ता श्री गौतमचन्दजी ओस्तवाल ने मंचासीन समस्त विशिष्ट व वरिष्ठ अतिथियों का परिचय प्रस्तुत कर सम्मेलन को गुण सौरभमय ऊर्जावान बनाया। अतिथियों का भावभीना स्वागत किया गया। प्रान्तीय अध्यक्ष श्री पदमराजजी मेहता ने स्वागतवचन कहे। क्षेत्रीय प्रधान श्री पारसमलजी बोहरा ने संघ

समर्पणा गीत प्रस्तुत किया।

सम्मेलन में उपस्थित समस्त वीर माता-पिता, भ्राता, वीर पति आदि श्रावक-श्राविकाओं का शॉल एवं माला से अभिनन्दन किया गया। राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री आनन्दजी चौपड़ा ने 'संघ से जुड़ाव किस प्रकार हो' विषय पर वक्तव्य दिया। युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजकुमारजी गोलेच्छा ने युवा शक्ति के जागरण के सम्बन्ध में मार्मिक एवं प्रभावी विचार प्रकट किये। युवा कार्याध्यक्ष श्री राजेन्द्रजी लुंकड़ ने युवा सशक्तीकरण, युवति सक्षमीकरण एवं संस्कार निर्माण पर प्रभावी विचार प्रकट किये। संघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुमेरसिंहजी बोथरा ने सम्मेलन की शानदार सफलता की कामना की तथा संघ समर्पण एवं गुरुभक्ति का सूत्र दिया। राष्ट्रीय मंत्री श्री तरुणजी बोहरा ने सुमधुर संगीत से सम्मेलन को तेजस्वी बनाया। वरिष्ठ स्वाध्यायी एवं कर्नाटक रत्न संघ के परामर्श दाता श्री नवरतनमलजी भंसाली ने वीतराग ध्यान शिविर के सम्बन्ध में प्रेरक विचार प्रकट किये। रत्न संघ के कर्मठ युवा श्री राजेन्द्रजी दुधेडिया ने भी युवा जागृति के सम्बन्ध में विचार व्यक्त किए। मुख्यातिथि श्री मोफतराजजी मुणोत-मुम्बई ने संघनिष्ठा, गुरुभक्ति, संघ समर्पण एवं सक्रिय सेवा में भागीदारी हेतु प्रभावी प्रेरणा की। सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराणा-चेन्नई ने संघहित में गागर में सागर भरते हुए अध्यक्षीय उद्बोधन दिया। अंत में संघ प्रमुख श्री चेतनप्रकाशजी डुंगरवाल-बैंगलुरु ने धन्यवाद घापित करते हुए संघ के कार्यों की भूरि-भूरि अनुमोदना की। मंत्री श्री गौतमचन्दजी ओस्तवाल ने मंच संचालन करते हुए ओजस्वी भाषा में सम्मेलन को ऊँचाई प्रदान की। यह सम्मेलन महावीर दर्शन आई हॉस्पिटल, मैसूर में आयोजित किया गया। मैसूर के रत्नसंघीय श्रावकों, युवकों एवं श्राविकाओं की सेवाएँ काबिले तारीफ रहीं।

प्रतिभा सम्मान कार्यक्रम में समाजसेवी श्री सोहनलालजी बागमार-मैसूर को एवं सरलमना श्री शांतिलालजी खाबिया-मैसूर को विशिष्ट सामाजिक सेवाएँ प्रदान करने हेतु सम्मानित किया गया। श्री ऋषभ ए. सिंघवी-मैसूर को के.एस.सी.ए. मैसूर जोन अन्डर 16 टीम में युवा क्रिकेटर के रूप में चयनित होने हेतु सम्मानित किया गया। सुश्री त्रिशला एस. जैन (आंचलिया) बैंगलुरु-सोरापुर को कर्नाटक श्वेताम्बर जैन समाज से सहायिका पब्लिक प्रोसीक्यूटर के रूप में प्रथम महिला होने हेतु सम्मानित किया गया। सुश्री दीनल वी. जैन-बैंगलुरु को राष्ट्रीय पेरा ओलम्पिक तैराकी स्पर्धा 2017 में तीन रजत पदक हासिल करने हेतु सम्मानित किया गया। श्रीमती शर्मिला धोका-मैसूर को जैनेलॉजी एवं प्राकृत भाषा में एम.ए. में स्वर्णपदक हासिल करने हेतु सम्मानित किया गया। सुश्री निकिता एस. जैन-बैंगलुरु (सिकन्द्राबाद) को सांता क्लारा यूनिवर्सिटी, यू.एस.ए. से सन् 2016 में इंजिनियरिंग प्रबंधन एवं नेतृत्व कला में निपुणता हासिल करने हेतु सम्मानित किया गया। श्रावक-श्राविकाओं व युवक-युवतियों के सम्मान कार्यक्रम का संघीय संचालन श्री सज्जनराजजी मेहता-बैंगलुरु ने किया।

सम्मेलन के द्वितीय सत्र में कर्नाटक युवा मंत्री श्री वेदान्तजी सांखला-बैंगलुरु व आन्ध्रप्रदेश/तेलंगांना क्षेत्रीय प्रधान श्री हस्तीमलजी गुन्देचा, श्री सोहनलालजी बागमार-मैसूर आदि ने प्रारम्भ में सम्मेलन की सार्थकता पर जीवदया सम्बन्धी विचार प्रकट किए। खुली वार्ता/खुला मंच एवं संघ हित चर्चा विषयक उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं द्वारा अपने-अपने उपयोगी विचार प्रस्तुत किए गए।

संघ की ओर से समाधान देते हुए श्री आनन्दजी चौपड़ा-जयपुर, श्री सुमेरसिंहजी बोथरा-जयपुर, श्री राजकुमारजी गोलेच्छा-पाली, श्री मोफतराजजी मुणोत-मुम्बई, श्री पी. शिखरमलजी सुराणा-चेन्नई आदि ने डायरेक्टरी, विहार सेवा व्यवस्था, संघीय सूचना प्रसारण, द्रव्य मर्यादा, जमीकंद निषेध, युवा कार्यक्रम, जिनवाणी, सेवाभावियों का सम्मान, चातुर्मास उपयोगिता व चातुर्मास स्थल चयन आदि विषयों का प्रतिपादन किया तथा विचार-मनन भी किया गया। मैसूर रत्न संघ सदस्यों की सुन्दर सेवाएँ सराहनीय व अभिनन्दनीय रहीं।

सम्मेलन में सामाजिक व धार्मिक संघ हित में उपयोगी प्रस्ताव भी पारित किये गये, जिनमें (अ) आध्यात्मिक विषय- 1. साप्ताहिक सामायिक अपने निवास के नजदीक के धर्म स्थानक में जाकर करना। 2. रत्नसंघ द्वारा आयोजित मासिक सामूहिक सामायिक कक्षा में शामिल होना। 3. संघ रूप में आचार्यप्रवर व उपाध्याय प्रवर के दर्शनार्थ जाने वालों की अधिकतम संख्या 100 से अधिक नहीं होना या 71 के लगभग संख्या होना। 4. संघ में पधारने वाले संघ सदस्य श्रावक-श्राविकाएँ, युवक-युवतियाँ पूज्य साधु-साध्वीवृन्द की निश्रा में आयोजित होने वाले कक्षा, प्रार्थना, प्रवचन, वाचनी (स्वाध्याय) में अवश्य ही उपस्थित रहें। 5. आचार्य भगवन्त के आदेशों व संकेतों का अक्षरशः पालन करने का अवश्य लक्ष्य रखें। 6. संघ रूप में पधारते वक्त रात्रि संवर का भी लक्ष्य संत-सतीवृन्द की सेवा में अवश्य रखें। 7. दक्षिण भारत में संत-सतियों की विहार-व्यवस्था में सक्रिय रहना एवं व्यवस्थित योगदान करना। (ब) सामाजिक विषय- 1. सामाजिक सामूहिक भोज में अधिकतम 31 व्यंजनों की मर्यादा करना। 2. सामाजिक व वैवाहिक आयोजन में सड़क पर नृत्य (डांस) नहीं करना। 3. बारात आदि सामाजिक आयोजन पर आतिशबाजी-पटाखें नहीं फोड़ना। 4. सामूहिक भोजों में जमीकंद का प्रयोग नहीं करना। 5. सामूहिक भोज दिन में आयोजित करना या रखना। इस प्रकार यह सम्मेलन अनेक मायनों में सफल व उत्साहवर्धक साबित हुआ।

इस आयोजन को सफलता के शिखर पर पहुँचाने में मैसूर के श्री दलपतराजजी सिंघवी, श्री सुभाषचन्द्रजी धोका, श्री बुधमलजी बागमार आदि की सेवाएँ स्वर्णिम रहीं। समूचा रत्न संघ मैसूर आयोजित स्थल पर आतिथ्य सत्कार आदि के लिए पैरों पर खड़ा रहा एवं अमूल्य सेवाएँ प्रदान की। सम्मेलन में बैंगलोर, चेन्नई, हुबली, शोरापुर, बीजापुर आदि विभिन्न स्थानों से श्रावक-श्राविका अच्छी संख्या में उपस्थित थे। -*गौतमचन्द्र अरोस्तवाल, संघमंत्री*

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ का स्वाध्यायी शिविर सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ जोधपुर द्वारा स्वाध्यायियों के ज्ञान में विकास हेतु 24 से 28 जून 2017 तक स्वाध्यायी शिविर जोधपुर में परम श्रद्धेय उपाध्याय प्रवर पं. रत्न श्री मानचंद्र जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में पावटा स्थानक में आयोजित हुआ। शिविर में 121 स्वाध्यायी भाई-बहिनों ने भाग लिया। प्रातःकाल से लेकर सायंकाल तक व्यस्त कार्यक्रम में स्वाध्यायियों ने तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री लोकचन्द्रजी म.सा., श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा., महासती श्री चारित्रलताजी म.सा., महासती सुश्रीप्रभाजी म.सा., महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा., महासती श्री भावनाजी म.सा., महासती श्री कान्ताजी म.सा., महासती श्री विजयश्रीजी म.सा. तथा कुशल अध्यापकों से ज्ञानार्जन किया। शिविर में तत्त्वार्थ सूत्र, आचारांग सूत्र, कर्म सिद्धान्त, सम्यक् दर्शन, अन्तगढ़ सूत्र, प्रतिक्रमण, 25 बोल आदि की विशेष जानकारी कराई गई।

शिविर का समापन 28 जून को शासन सेवा समिति के संयोजक श्रावकरत्न श्री रतनलालजी बाफना के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। जोधपुर संघ के अध्यक्ष श्री धनपतजी सेठिया ने स्वाध्यायी की महत्ता पर, संघ कार्याध्यक्ष श्रीमती सुशीलाजी बोहरा ने पर्युषण पर्व में जाने के साथ नये क्षेत्रों की खोज हेतु प्रेरणा की। स्वाध्याय संघ के निदेशक श्री जगदीशमलजी कुम्भट ने आभार प्रकट किया। मुख्य अतिथि श्री बाफना साहब ने स्वाध्यायी के आचरण के सम्बन्ध में विशेष मार्गदर्शन दिया। स्वाध्याय संघ के संयोजक श्री ओमप्रकाशजी बांठिया ने जोधपुर संघ को सुन्दर आवास एवं भोजन व्यवस्था के लिए धन्यवाद दिया। -*गोपालराज अरबानी, सचिव*

स्वाध्यायियों एवं संघों से निवेदन

1. श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के समस्त स्वाध्यायी बंधुओं से निवेदन है कि आत्मगुणों के

- संचय, संवर्धन एवं संरक्षण हेतु पर्वाधिराज पर्युषण पर्व 19 से 26 अगस्त 2017 को उपस्थित हो रहे हैं। इस अवसर पर आप की सेवाओं की महती आवश्यकता है। कृपया अपनी स्वीकृति शीघ्र प्रदान करावें।
2. स्वाध्याय संघ, जोधपुर को कुछ क्षेत्रों की माँग चातुर्मास काल से लेकर पर्युषण पर्व तक आती है। इस हेतु जो स्वाध्यायी भाई-बहिन चातुर्मास काल से संवत्सरी पर्व (श्रावण से भाद्रपक्ष) तक अपनी सेवाएँ दे सकते हैं, वे शीघ्र ही स्वाध्याय संघ कार्यालय को सूचित करावें। जिससे 15-15 दिन के ग्रुप बनाकर उस क्षेत्र की पूर्ति की जा सके।
 3. श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा चातुर्मास काल से संवत्सरी पर्व (श्रावण-भाद्रपक्ष) तक जो संघ स्वाध्यायी आमंत्रित करना चाहता है वह संघ पत्र एवं फोन के माध्यम से स्वाध्याय संघ, जोधपुर कार्यालय में सूचना करावे जिससे उस क्षेत्र में योग्य एवं अनुभवी स्वाध्यायी भिजवाने की व्यवस्था हो सके।

-गोपालराज अबानी, सचिव

आ. शिक्षण बोर्ड परीक्षा के वरीयता पुरस्कार प्रदाता हेतु अवसर

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, घोड़ों का चौक जोधपुर द्वारा आध्यात्मिक परीक्षाओं के माध्यम से जिनवाणी को गांव-गांव व घर-घर में पहुँचाने का महान् कार्य विगत 17 वर्षों से किया जा रहा है। कक्षा 1 से 12 तक के व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध पाठ्यक्रम की परीक्षा जुलाई माह में तथा 5-5 थोकड़ों की कक्षा 1 से 9 तक की परीक्षा जनवरी माह में आयोजित की जाती है।

इन परीक्षाओं में प्रत्येक कक्षा में वरीयता सूची (मेरिट लिस्ट) में स्थान पाने वालों को विशिष्ट सम्मान पुरस्कार प्रदान किया जाता है। परीक्षार्थियों का उत्साह एवं मनोबल बढ़ता रहे, इस लक्ष्य से कक्षा 1 से 4 तक 10 मेरिट, कक्षा 5 से 8 तक 7 मेरिट तथा कक्षा 9 से 12 तक 3 मेरिट घोषित की जाती है। इन सब को दी जाने वाली सम्मान राशि का विवरण इस प्रकार है-

Class	1st Merit			2nd Merit			3rd Merit			4th to 10 th			Total
	Rs	Stu.	Total	Rs	Stud.	Total	Rs.	Stud	Total	Rs	Stud.	Total	
1 to 4	2000	4	8000	1500	4	6000	1000	4	4000	500	28	14000	32000
5 to 8	2500	4	10000	2000	4	8000	1500	4	6000	750	16	12000	36000
9 to 10	4000	4	16000	3000	4	12000	2000	4	8000	-	-	-	36000
Total												104000	

जुलाई की परीक्षा के सम्पूर्ण पुरस्कार की राशि 4,50,000/- तथा जनवरी परीक्षा के सम्पूर्ण पुरस्कार की राशि 2,50,000/- के लगभग होती है एवं प्रति परीक्षा मात्र मेरिट पुरस्कार की कुल राशि 104000/- होती है।

समाज के ज्ञानरसिकों, श्रुतप्रेमियों, उदारमना दानदाताओं से विनम्र निवेदन है कि अपनी रुचि, सामर्थ्य एवं अनुकूलता के अनुसार उक्त पुरस्कार-प्रायोजक के रूप में अपना महीन सहयोग प्रदान करने की कृपा करावें।

-नवरत्न गिड़िया, सचिव

अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की जयपुर शाखा का गठन

अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान् पी. शिखरमलजी सुराणा ने 25 जून 2017 को अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की स्थानीय जयपुर शाखा का गठन किया एवं श्री प्रमोदजी महनोत को अध्यक्ष पद पर मनोनीत किया। युवक परिषद् के शिविर समापन समारोह में इसकी विधिवत् घोषणा की गई। नवीन शाखा के अध्यक्ष श्री प्रमोदजी महनोत द्वारा उपाध्यक्ष- श्री प्रमोदजी लोढ़ा, सचिव- श्री सुरेशचन्द्रजी कोठारी और कोषाध्यक्ष- श्री हरीशजी बोथरा को मनोनीत किया गया।-सुरेशचन्द्र कोठारी

लाइफ डिजाइनिंग-3 शिविर का सफल आयोजन

नागपुर- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, नागपुर के तत्त्वावधान में महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. ठाणा 6 के सान्निध्य में 15 वर्ष की आयु से ऊपर की अविवाहित लड़कियों को ज्ञान कवच प्रदान कर सुसंस्कारों के बीजारोपण एवं उनके भविष्य निर्माण हेतु 12 से 14 मई 2017 के बीच लाइफ डिजाइनिंग-3 शिविर का आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। 45 शिविरार्थियों ने इस त्रिदिवसीय आवासीय शिविर का लाभ लिया। शिविर की मुख्य सूत्रधार महासती मुदितप्रभाजी म.सा. ने शिविर को उपयोगी और सार्थक बनाने के लिये अथक प्रयास किये। भारतीय जैन संघटना के राष्ट्रीय पदाधिकारी रजनीश जैन ने 21 वीं सदी में लड़कियों का सक्षमीकरण विषय पर संबोधित किया। इसी अवसर पर समझ शक्ति, सहन शक्ति एवं स्मरण शक्ति बढ़ाने के लिये विशेष महिला सत्र का आयोजन भी किया गया। 2 घण्टे चले इस सत्र में शताधिक महिलायें उपस्थित थीं। पूज्य महासती श्री मुदितप्रभाजी म.सा. ने प्रोजेक्टर-पोस्टर जैसे भौतिक साधनों का उपयोग किये बिना केवल अपनी वाणी के ओज से विषय का बड़ी सुन्दरता के साथ प्रतिपादन किया।-डॉ. गौतम सिंगी

जयपुर एवं जोधपुर में ग्रीष्मकालीन धार्मिक एवं नैतिक शिक्षण शिविर सम्पन्न

जयपुर- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर के द्वारा 14 मई से 04 जून 2017 तक जयपुर के सांगानेरी गेट स्थित सुबोध स्कूल, जवाहर नगर, लालकोठी, महावीर नगर, मालवीय नगर, प्रतापनगर, मानसरोवर, श्यामनगर, नित्यानन्द नगर, झोटवाड़ा, विद्याधर नगर इत्यादि दस स्थानों पर धार्मिक एवं नैतिक संस्कार शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें 700 बालक-बालिकाओं ने नियमित रूप से भाग लेकर धार्मिक, नैतिक एवं संस्कार निर्माण की शिक्षा प्राप्त की। शिविर का समय प्रातः 7.00 बजे से 9.00 बजे तक रहा। प्रतिदिन प्रातः 7.00 बजे से 7.20 बजे तक सामूहिक प्रार्थना करवाई जाती थी और एक प्रेरक कहानी बच्चों को सुनाई जाती थी। ये सभी कहानियाँ जैनागमों में वर्णित महापुरुषों से सम्बन्धित थीं। कहानी समाप्त होने के पश्चात् इस कहानी से सम्बन्धित दो प्रश्न भी पूछे जाते ताकि बच्चे कहानी एकाग्रता से सुनें। शिविरार्थी बच्चों को दैनिक प्रत्याख्यान नियम लेने हेतु प्रेरित किया गया। वे कम से कम एक नियम स्वीकार करते, किन्तु कई बच्चों ने प्रतिदिन के 15 से 20 नियम भी लिये हैं। कई शिविर केन्द्रों पर प्रार्थना के समय भी दैनिक प्रत्याख्यान/नियम दिलवाये गये। शिविर में बच्चों के धार्मिक ज्ञान के आधार पर विभिन्न कक्षाएँ बनायी गईं। शिशु कक्षा में 10 वर्ष तक के बच्चों को जैन धर्म की सामान्य जानकारी के साथ सामायिक सूत्र, तीर्थंकर भगवान के नाम आदि का अध्ययन कराया गया। इनसे बड़े बच्चों को उनके ज्ञान के आधार पर स्थानीय स्तर पर तैयार की गई पुस्तकों एवं आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के पाठ्यक्रमानुसार कक्षा प्रथम से दसवीं तक अध्ययन कराया गया। शिविर में अनेक बच्चों ने सामायिक, 25 बोल, प्रतिक्रमण आदि कठस्थ किये। सभी शिविर-स्थलों पर लगभग 100 से अधिक अध्यापकों ने पूर्ण निष्ठा एवं आत्मीयता से अपनी अमूल्य सेवाएँ प्रदान कीं।

बालक-बालिकाओं के बौद्धिक एवं व्यक्तित्व विकास हेतु सभी शिविर केन्द्रों पर भजन, भाषण, धार्मिक प्रश्नोत्तरी (क्वीज) एवं विभिन्न विषयों पर पोस्टर प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में विद्यालय की कक्षा 01 से 04, कक्षा 05 से 08 तथा 9 एवं उससे ऊपर की कक्षाओं के अलग-अलग ग्रुप बनाये गये। इन प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय आने वाले बच्चों को पुरस्कृत किया गया। शिविर के दौरान बच्चों को साप्ताहिक पुरस्कार भी दिये गये। शिविर के दौरान बालक-बालिकाओं को साध्वीप्रमुखा, पूज्या महासती श्री

तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन हेतु अवसर दिया गया। शिविर के प्रथम 10 दिनों में बच्चों ने क्या सीखा और याद किया, इसकी परख करने के लिये 25 मई 2017 को सभी शिविरार्थी बच्चों की परीक्षा ली गई। जो बच्चे इस परीक्षा में कमजोर रहे, उन पर आगे के 10 दिनों में विशेष ध्यान दिया गया।

शिविर के दौरान बच्चों ने प्रतियोगिताओं में महापुरुषों की जीवनी के बारे में अपने विचार रखे तथा दैनिक जीवन में संस्कारों की उपयोगिता एवं शाकाहारी भोजन से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर निबन्ध प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया। प्रथम कक्षा एवं उससे बड़ी कक्षाओं के शिविरार्थियों को श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा देने हेतु प्रेरणा की गई तथा सभी शिविर केन्द्रों से कुल 148 बच्चों ने बोर्ड की परीक्षा हेतु फॉर्म भरे।

25 जून 2017 को सुबोध पब्लिक स्कूल में आयोजित समापन समारोह के अध्यक्ष अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी.एस. सुराणा तथा मुख्य अतिथि माननीय न्यायाधीश श्री हेमन्तकुमारजी जैन थे। शिविर के संचालन हेतु प्रत्येक केन्द्र पर अलग-अलग संयोजक एवं क्षेत्रीय संयोजक बनाये गये, जिनके अथक एवं अनवरत प्रयासों से शिविर का सफल संचालन सम्भव हुआ। परिषद् के सदस्यों एवं परामर्शदाताओं का भी शिविर के सफल संचालन में विशेष सहयोग रहा है। -*मनीष मुणोत, क्षेत्रीय प्रधान*

जोधपुर- श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर द्वारा 18 मई से 04 जून तक 18 दिवसीय धार्मिक एवं नैतिक शिक्षण शिविर आयोजित किया गया। यह शिविर दो वर्गों में विभाजित था- प्रथम वर्ग में लगभग 300 शिशु शिविरार्थियों को जोधपुर के विभिन्न संस्कार केन्द्रों पर ही ज्ञानार्जन करवाया गया। दूसरे वर्ग में 8 वर्ष से अधिक आयु के बालक-बालिकाओं को एक केन्द्र पर ही सुनियोजित आवागमन के साधनों के द्वारा लाकर विद्वान् प्रशिक्षकों द्वारा शिक्षण प्रदान किया गया। महावीर पब्लिक स्कूल के प्रांगण में आयोजित इस शिविर में लगभग 450 बालक-बालिकाओं ने भाग लिया। सभी बच्चों को शिक्षण बोर्ड द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रमानुसार 1 से 10 कक्षाओं में वर्गीकृत कर अनुभवी अध्यापकों द्वारा नियमित चार कालांशों में अध्ययन कराया गया। लगभग सभी शिविरार्थियों से आगामी बोर्ड परीक्षा के फार्म भरवाये गये।

शिविर की नियमित दिनचर्या में प्रातः काल 7.15 बजे प्रार्थना करवाई गई। शिविर में उपाध्याय प्रवर की असीम कृपा से श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री लोकचन्द्रमुनि जी म.सा. तथा श्रद्धेय श्री जितेन्द्र मुनि जी म.सा. का पावन सान्निध्य तथा उद्बोधन भी प्राप्त हुआ। शिविर में पोस्टर प्रतियोगिता, भजन प्रतियोगिता के साथ नाटक-नाटिकाओं का मंचन भी हुआ। शिविर का समापन कार्यक्रम 04 जून को हनवन्त गार्डन में सम्पन्न हुआ। समापन समारोह में तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोद मुनि जी म.सा. तथा श्रद्धेय श्री मनीषमुनि जी म.सा. विशेष प्रेरणा हेतु पधारे। मुनिवृन्द ने सभी बच्चों को आशीर्वचन प्रदान करते हुए धर्म के क्षेत्र में आगे बढ़ने की प्रेरणा की। तदनन्तर 8.30 बजे समापन समारोह कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। समारोह में मुख्य अतिथि श्री गौतमचन्द्रजी भंडारी, सम्माननीय अतिथि श्री सुन्दरलाल जी जैन (सालेचा) थे। संघ कार्याध्यक्ष श्रीमती सुशीला जी बोहरा, महामंत्री श्री पूरणराजजी अबानी, क्षेत्रीय प्रधान श्री पारसमलजी गिड़िया, अ.भा. युवक परिषद् महासचिव श्री मनीष जी लोढ़ा, स्वाध्याय संघ सचिव श्री गोपाल जी अबानी, शिक्षण बोर्ड संयोजक श्री अशोक जी चोरडिया, संस्कार केन्द्र संयोजक श्री हर्षवर्द्धन जी ललवाणी, स्थानीय संघ अध्यक्ष श्री धनपतजी सेठिया, मुख्य शिविर संयोजक श्री नवरतनजी डागा, युवक परिषद् अध्यक्ष श्री अमरचन्द जी चौधरी, सचिव श्री गजेन्द्र जी चौपड़ा भी मंच पर आसीन हुए।

स्थानीय संघ अध्यक्ष श्री धनपतजी सेठिया स्वागत वचन कहे। सभी पधारे हुए अतिथियों का शिविर में अपनी उल्लेखनीय सेवाएं प्रदान करने वाले कार्यकर्ताओं का सम्मान किया गया। संत-सती विचरण विहार में स्थान

तथा गोचरी-सेवा में अपनी उल्लेखनीय सेवाएं प्रदान करने वाले समीपवर्ती ग्रामीण बन्धु-बहिनों का भी सम्मान किया गया। चतुर्विध संघ सेवा के लिए सुश्रावक श्री सम्पतराज जी बोथरा, श्री नवरतनजी बाफना, श्री मदनजी भंडारी को उनके द्वारा श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ को प्रदत्त महनीय सेवाओं हेतु सम्मानित किया गया।

विभिन्न केन्द्रों के छोटे-बड़े बच्चों ने सामायिक, प्रतिक्रमण के पाठ, 25 बोल में से बोल, भजन, भाषण एवं नाटिकाओं के द्वारा अपनी अर्जित योग्यता प्रदर्शित की। सभी आगन्तुक अतिथियों एवं महानुभावों ने बच्चों के कार्यक्रमों को सराहा। मुख्य शिविर संयोजक नवरतनजी डागा ने शिविर रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा कक्षाओं में वरीयता प्राप्त शिविरार्थियों का परिणाम घोषित कर उन्हें अतिथियों से पुरस्कृत करवाया।

अंत में युवक परिषद् शाखा सचिव श्री गजेन्द्रजी चौपड़ा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। अखिल भारतीय युवक परिषद् से बैंगलोर के श्री राजेन्द्र जी दुधेड़िया तथा श्री दिनेश जी भंसाली के विशेष उद्बोधन से भी शिविरार्थी लाभान्वित हुए। शिविर के सफल संचालन में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के पदाधिकारियों एवं सदस्यों का भी सहयोग प्राप्त हुआ।

-नवरतन डागा, शिविर संयोजक

अखिल भारतीय संस्कृत विद्वत्सम्मेलन श्रवणबेलगोला में सम्पन्न

श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) के गोम्पटेश्वर बाहुबली श्री क्षेत्र में आचार्य वर्धमान सागरजी तथा अन्य अनेक आचार्यों मुनिराजों की ससंघ पावन सन्निधि में एवं श्री चारुकीर्तिभट्टारक स्वामीजी के पावन नेतृत्व में 7 से 9 जून 2017 तक संस्कृत के जैन साहित्य के विविध पक्षों पर तथा इनके विकास में जैनाचार्यों के योगदान पर आधारित त्रिदिवसीय अखिल भारतीय संस्कृत विद्वत्सम्मेलन सम्पन्न हुआ। जिसमें कवियों, साहित्यकारों, दार्शनिकों, कुलपतियों एवं मनीषियों की सहभागिता रही। सम्मेलन में उत्तर भारत तथा दक्षिण भारत के लगभग 70 विद्वानों ने भाग लिया एवं 35 वरिष्ठ मनीषियों ने जैन संस्कृत साहित्य एवं आचार्यों के योगदान पर आधारित गहन शोध आलेख प्रस्तुत किये।

उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष अभिनव कालिदास प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र जी तथा मुख्यातिथि पद्मश्री आचार्य रमाकांत शुक्ल एवं कुलपति प्रो. पद्मा शेखर थी। प्रमुख संयोजक प्रो. फूलचन्द जी जैन 'प्रेमी' ने संगोष्ठी के उद्देश्यों को प्रस्तुत किया। संस्कृत भारती ने संस्कृत और विज्ञान पर आधारित भव्य पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया।

समारोह में विभिन्न सत्रों की अध्यक्षता प्रो. राधामाधव दासजी, प्रो. गंगाधर पंडाजी, डॉ. एस.रंगनाथनजी, प्रो. प्रेमसुमनजी जैन ने की तथा समापन समारोह की अध्यक्षता प्रो. पीयूषकांतजी दीक्षित ने की तथा धन्यवाद ज्ञापन सह-संयोजक डॉ. एस. देवेन्द्र ने किया। प्रमुख मनीषियों में प्रो. धर्मचन्द जैन-जोधपुर, प्रो. जयकुमार उपाध्ये, प्रो. एच.वी. नागराज राव, डॉ. अनन्त नागेन्द्र भट्ट, पण्डित हबडेजी, डॉ. नारायण वैद्य, डॉ. चन्द्रकांत भट्ट, डॉ. राजेन्द्र पाटिल आदि अनेक विद्वानों ने व्याख्यान दिए तथा अनेक विद्वानों ने उत्साहपूर्वक प्रतिभागिता की।

ज्ञातव्य है कि मस्ताकभिषेक महामहोत्सव 2018 के उपलक्ष्य में श्री क्षेत्र में विभिन्न कार्यक्रमों की शृंखला में यह कार्यक्रम मंगलाचरण के रूप में प्रथम कार्यक्रम था जो संस्कृत विद्वानों के शास्त्रीय प्रवचनों से परिपूर्ण रहा।

-डॉ. अनेकान्त कुमार जैन, सह संयोजक

समग्र जैन चातुर्मास सूची 2017 का प्रकाशन

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी समग्र जैन सम्प्रदायों (श्वेताम्बर, मूर्तिपूजक, स्थानकवासी, तेरापंथी एवं दिगम्बर)

के चातुर्मास की सूची का प्रकाशन किया जा रहा है। आपके गाँव/शहर/कस्बे/उपनगरों में जिन पूज्य जैन गच्छ नायक आचार्यों, साधु-साध्वियों के 2017 वर्ष के चातुर्मास स्वीकृत हुए हैं, उन सभी संत-सतियों के चातुर्मास की जानकारी शीघ्र भिजवाने की कृपा करावें, ताकि चातुर्मास प्रारम्भ होने तक इनका प्रकाशन हो सके। चातुर्मास की जानकारी ई-मेल से भी प्रेषित कर सकते हैं। **सम्पर्क सूत्र**- बाबूलाल जैन 'उज्ज्वल' संपादक, 105, तिरुपती अपार्टमेंट्स, आकुर्ली क्रॉस रोड नं.1, रेलवे स्टेशन के सामने, कांदिवली(पूर्व), मुम्बई-400101(महा.), टेलीफैक्स-022-28871278, मोबाइल-093245-21278, E-mail:ujjwalprakashan@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

इन्दौर- पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. के 26 वें पुण्यस्मृति दिवस पर 03 मई 2017 को जैन स्थानक जानकी नगर में मालव कीर्ति महासती श्री कीर्तिप्रभाजी म.सा. ने कहा कि आत्म कल्याण का राजमार्ग सामायिक और स्वाध्याय है। श्री अशोक मण्डलिक, श्री संतोष मामा, श्री मोहनलाल पीपाड़ा ने भी आचार्य श्री के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उनके बताये हुए मार्ग पर चलने की प्रेरणा की।-*गजेन्द्र तारतेड़, महामंत्री*

चेन्नई- श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, तमिलनाडु के तत्त्वावधान में द्विदिवसीय स्वाध्यायी शिविर 3 एवं 4 जून 2017 को सम्पन्न हुआ, जिसमें 43 स्वाध्यायियों ने भाग लिया एवं वरिष्ठ प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। डॉ. दिलीपजी धींग, शकुन्तलाजी संकलेचा, डॉ. प्रियदर्शनाजी जैन एवं श्री राजेशजी ललवाणी द्वारा अलग-अलग विषयों पर प्रशिक्षण दिया गया।-*प्रकाशचन्द्र मुथा, संयोजक*

जोधपुर- शान्त-दान्त-गम्भीर उपाध्यायप्रवर श्रद्धेय श्री मानचन्द्रजी म.सा. के सान्निध्य में श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर की ओर से सप्त दिवसीय अध्यात्म प्रशिक्षण शिविर 07 से 13 जून 2017 तक आयोजित किया गया। इस शिविर में कक्षा प्रथम (जैन धर्म का परिचय) से कक्षा ग्यारहवीं तक की परीक्षा की तैयारी करवाई गई। शिविर में संत-सतियों का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के रजिस्ट्रार श्री धर्मचन्द्रजी जैन, वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री मूलचन्द्रजी बाफना, श्री रंगरूपमल जी डागा, श्री नरपत जी चौपड़ा, श्रीमती मोहनकौरजी जैन, श्रीमती कमलाजी सुराणा, श्रीमती अमृतकंवरजी भण्डारी, श्रीमती सुशीलाजी कोठारी, श्रीमती कंचनजी रांका, श्रीमती विमलाजी चौपड़ा तथा श्राविका मण्डल जोधपुर की पूर्व महामंत्री श्रीमती सुनीताजी मेहता का अध्यापन कार्य में पूर्ण सहयोग रहा।

इस शिविर में तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. ने अपने उद्बोधन के माध्यम से शिविरार्थी बहिनों को कई हित शिक्षाएँ और प्रेरणाएँ दीं, शिविर में 100 बहिनों ने भाग लिया। चार नई श्राविका बहिनों ने इस वर्ष पर्युषण में सेवा देने की स्वीकृति प्रदान की। साठ से अधिक श्राविकाओं ने आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षा के आवेदन-पत्र भरे। आकाशवाणी के आगे कांकरिया भवन स्थानक में श्राविका मण्डल की एक नई शाखा 07 जून 2017 को खोली गई। शिविर का संचालन श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ की पूर्व सचिव एवं वरिष्ठ स्वाध्यायी श्रीमती मोहनकौर जैन ने किया।-*सुशीला गोलेच्छा, अध्यक्ष*

राजकोट- भारतीय जैन संघटना, गुजरात द्वारा 'जैन परिचय मिलन' 13 अगस्त 2017 को विधवाओं, विधुरों, तलाकशुदाओं और 35 वर्ष से अधिक कुँआरों के लिए आयोजित किया जा रहा है। भाग लेने के इच्छुक अभ्यर्थी वेबसाइट www.bjsindia.org से रजिस्ट्रेशन फार्म प्राप्त कर सकते हैं। अंतिम तिथि 18 जुलाई 2017 है। अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें- रोमक शाह, सूरत-99099-01915

चेन्नई- आचार्य श्री उमेशमुनिजी म.सा. द्वारा रचित साहित्य के आधार पर 'साहित्य पढ़ो- क्षयोपशम करो' प्रतियोगिता की शृंखला में इस वर्ष 'जिज्ञासा की तरंगें' पुस्तक पर प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। उत्तर पुस्तिका प्रेषित करने की अंतिम तिथि 31 दिसम्बर 2017 है। यह पुस्तक निःशुल्क प्राप्त करने हेतु निम्नलिखित सम्पर्क सूत्र पर सम्पर्क करें- आर. नरेन्द्र कांकरिया, स्वाध्याय भवन, 24/25, बेसिन वॉटर वर्क्स स्ट्रीट, साहुकार पेट, चेन्नई-600079 (तमिलनाडु), फोन: 98411-48948

चिकपेट (बैंगलुरु)- श्री कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ द्वारा 17 से 21 मई 2017 तक शिविर आयोजित किया गया, जिसमें शूले क्षेत्र एवं बैंगलोर के विभिन्न उपनगरों के कुल 300 विद्यार्थियों ने भाग लिया। जैन धर्म एवं दर्शन, तत्त्व ज्ञान एवं आराधना विधियों का प्रशिक्षण करवाया गया। साथ ही जीवन निर्माण, परिवार भावना, श्रावक व्रत एवं **Art of Parenting** आदि विशेष कक्षाओं का आयोजन किया गया। जैन चित्रकला, जैन हाउजी आदि विभिन्न प्रतियोगिताओं का भी संचालन किया गया। श्री छगनलालजी लुणावत की अध्यक्षता में समापन समारोह हुआ। शिविर का संचालन श्री शांतिलाल बोहरा ने किया। -*शांतिलाल बोहरा, संयोजक*

बधाई



जोधपुर- श्री उज्ज्वल गुलेच्छा सुपुत्र श्री हीराचन्दजी गुलेच्छा एवं सुपौत्र स्व. श्री तिलोकचन्दजी गुलेच्छा ने कम्प्यूटर साइन्स में मास्टर्स की डिग्री अमेरिका के कैलिफोर्निया से UCSD (University of California San Deigo) से 17 मई 2017 को प्राप्त की।



चेन्नई- अन्तरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र के निदेशक साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग 25 जून 2017 को 'डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम राष्ट्रत्न पुरस्कार-2016' से सम्मानित हुए। पद्मश्री डॉ. मणिभाई देसाई मानव सेवा न्यास, उरुली कांचन (पुणे, महाराष्ट्र) द्वारा उन्हें यह सम्मान प्रदान किया गया। उन्हें यह सम्मान शोधपूर्ण व चिंतनपरक लेखन के जरिये सांस्कृतिक व मानवीय मूल्यों के संवर्द्धन में योगदान के लिए प्रदान किया गया। -*डॉ. एस. कृष्णचंद चोरडिया, महासचिव*

नागपुर- डॉ. अरुणा गौतम सिंघी, अध्यक्ष- श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्राविका मण्डल को श्री जैन सेवा मण्डल के तत्वावधान में कोठारी ज्वैलर्स अहिंसा अवार्ड के कार्यक्रम में समारोह की मुख्यातिथि केन्द्रिय मंत्री शाकाहार प्रेमी श्रीमती मेनका गाँधी के द्वारा 'श्राविका अवार्ड' से सम्मानित किया गया। यह अवार्ड उन्हें आध्यात्मिक सिद्धान्तों की प्रभावना, श्रुतज्ञान के क्षेत्र में क्रांतिकारी उपलब्धियाँ और स्वाध्याय के माध्यम से ज्ञानाराधना के क्षेत्र में किए गए रचनात्मक कार्यों के लिए प्रदान किया गया।



डॉ. श्वेता जैन



डॉ. हेमलता चैन



आदिशशिवा



तनवी सिंघवी



अपूर्व मेहता



समयकिंत सुखाना



आदित्य हीरावब



पानसी सराईक

जोधपुर- डॉ. श्वेता जैन सुपुत्री श्रीमती विमला-सायरचन्दजी कोटड़िया ने जगद्गुरु रामानन्दाचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर से साहित्याचार्य की उपाधि प्रथम श्रेणि से प्राप्त की है। आप जिनवाणी मासिक पत्रिका की सह-सम्पादक हैं।

जोधपुर- डॉ. हेमलता जैन धर्मपत्नी श्री विकासजी ललवानी ने जगद्गुरु रामानन्दाचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर से साहित्याचार्य की उपाधि प्रथम श्रेणि से प्राप्त की है।

दूद- श्री आदिश मेहता सुपुत्र श्रीमती मीनाक्षी-संदीपकुमारजी मेहता एवं सुपौत्र श्रीमती चन्द्रकला-महावीरप्रसाद जी मेहता ने 10वीं सी.बी.एस.ई. परीक्षा में 10 CJPA अंक प्राप्त किए हैं।

भीलवाड़ा- श्री श्रेणिक पोखरणा सुपुत्र श्रीमती सुनीताजी-प्रवीणजी एवं सुपौत्र श्रीमती पारसकुमारीजी-शान्तिलालजी पोखरणा ने सी.बी.एस.ई. की दसवीं कक्षा में 10 CJPA प्राप्त किए हैं।

जोधपुर- सुश्री तनवी सिंघवी सुपुत्री श्रीमती शुब्रता-विनयजी सिंघवी एवं सुपौत्री श्रीमती प्रेम-शिखरचन्दजी सिंघवी ने 12 वीं विज्ञान की सी.बी.एस.ई. की परीक्षा 95 प्रतिशत अंक से उत्तीर्ण की है।

जोधपुर- श्री अपूर्व मेहता सुपुत्र श्रीमती नीतू-संजयजी मेहता एवं सुपौत्र श्रीमती सुशीला-अर्जुनराजजी मेहता ने 12 वीं वाणिज्य की सी.बी.एस.ई. की परीक्षा में 91 प्रतिशत अंक प्राप्त किए।

जयपुर- श्री समकितजी सुपुत्र श्रीमती सुनीता-सुरेन्द्र जी एवं सुपौत्र श्रीमती सूरजजी-हेमराजजी सुराना ने सी.बी.एस.ई. बोर्ड की दसवीं की परीक्षा 10 CJPA से उत्तीर्ण की।

जयपुर- श्री आदित्य हीरावत सुपुत्र श्रीमती अनुश्री-डॉ. राकेशजी हीरावत एवं सुपौत्र श्रीमती प्रवेशजी-कुशलचन्द जी हीरावत ने 12 वीं वाणिज्य की सी.बी.एस.ई. की परीक्षा में 95.6 प्रतिशत अंकों से सफलता प्राप्त की। आपको सामायिक, प्रतिक्रमण एवं 25 बोल कण्ठस्थ है तथा पिछले 10 वर्षों से धार्मिक शिविर में शिविरार्थी रहे हैं।

जोधपुर- सुश्री मानसी सर्राफ सुपुत्री श्रीमती ममता-मुकेशजी सर्राफ एवं सुपौत्री श्रीमती सुन्दरजी-मानराजजी सर्राफ ने 12वीं वाणिज्य की सी.बी.एस.ई. की परीक्षा में 96.2 प्रतिशत अंकों से सफलता प्राप्त की।

श्रद्धाञ्जलि



अजमेर- धर्मपरायण सुश्रावक श्री ताराचन्दजी ढाबरिया सुपुत्र स्व. श्री हरकचन्दजी ढाबरिया का 12 जून 2017 को स्वर्गवास हो गया। आपकी आचार्य श्री पन्नालालजी म.सा. के प्रति समर्पित भावना थी। सामायिक, प्रतिक्रमण, पौषध एवं अन्य कई तपस्याएँ आपने अपने जीवनकाल में सम्पन्न कीं। आप सरल हृदय के धनी थे। -*रिखबचन्द ढाबरिया*



जोधपुर- सुश्राविका श्रीमती सोहनजी धर्मपत्नी श्री बिलमराजजी भण्डारी का 86 वर्ष की अवस्था में 02 जून, 2017 को देहावसान हो गया। उन्होंने अपने जीवन में अठाई, तेले जैसी कई तपस्याएँ कीं। प्रतिदिन सामायिक करना उनका नियम था। आपके धर्म सहायक श्री भण्डारी साहब ने लगभग 25-27 वर्षों पूर्व चौपासनी हाउसिंग बोर्ड में स्थानक बनाने हेतु भूमि खरीदने के लिए संघ को 100000/- रुपये की राशि प्रदान की थी।

चित्तौड़गढ़- सुश्राविका श्रीमती मुर्बाईजी धर्मसहायिका श्री मनोहरलालजी श्रीश्रीमाल (भटवाडा वाले) का 5 जून 2017 को 95 वर्ष की वय में प्रयाण हो गया। श्रमण संघीय उपप्रवर्तक गौतममुनिजी म.सा. ने 3 जून को प्रातः 11 बजे संथारे का प्रत्याख्यान करवाया। आप धर्मनिष्ठ, मधुर व्यवहारी श्राविका थीं। लम्बे समय से चौविहार, जमीकंद

के त्याग थे। नित्य धोवन पानी पीने का नियम था। प्रतिदिन 10-15 सामायिक करती थीं। आपने उपवास से लेकर अठाई तक की कई तपस्याएँ कीं। -*नारायणलाल श्रीश्रीमाल*

कोटा- सरल स्वभावी सुश्रावक श्री रमेशचन्दजी लोढ़ा सुपुत्र स्व. श्री चिरंजीलालजी लोढ़ा का 61 वर्ष की आयु में 10 अप्रैल 2017 को देवलोकगमन हो गया। आप श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्री संघ रामपुरा-कोटा के कोषाध्यक्ष थे। नियमित सामायिक-स्वाध्याय आपकी दिनचर्या का अंग था। आपने सजोड़े आजीवन शीलव्रत का नियम ग्रहण कर रखा था। आप परिवार सहित साधु-साध्वीवृन्द की सेवा में तत्पर रहते थे। 2012 के चातुर्मास में महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. की प्रेरणा से आपने अठाई तप भी सम्पन्न किया। जीवनकाल में अन्य तेले, बेले की तपस्याएँ भी कीं।

-*अजितकुमार जैन, सहमंत्री, रामपुरा-कोटा*

अलीगढ़-रामपुरा- सुश्री हर्षिता सुपुत्री श्री धर्मेन्द्रकुमारजी जैन का 11 मई 2017 को देवलोकगमन हो गया। आप धार्मिक पाठशाला में निरन्तर अध्ययनशील थीं। विद्यालयीय अध्ययन में भी अग्रणी रहती थीं। प्रतिक्रमण भी स्मरण था।

हिंगनघाट- सुश्रावक श्री अजीतकुमारजी विजयकुमारजी मुणोत का 51 वर्ष की आयु में 9 मई 2017 को निधन हो गया। आप श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के उपाध्यक्ष थे। आप श्रमणसंघीय महासती श्री पुष्पाकंवरीजी म.सा. के सांसारिक भाणेज थे। -*उमेश कटारिया, संघ मंत्री*

रामगंजमण्डी (कोटा)- श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका श्रीमती लक्ष्मीदेवीजी चण्डालिया का 23 मई 2017 को स्वर्गवास हो गया। आप संत-सतियों की सेवा में सदैव अग्रणी रहती थीं। आपके द्वारा प्रदान किये गये धार्मिक संस्कारों का निर्वहन आपका पूरा परिवार कर रहा है।



जोधपुर- सुश्रावक श्री सुनीलजी सुपुत्र श्री पारसमलजी मेहता का 14 जून 2017 को परलोकगमन हो गया। आप नित्य सामायिक करते थे। देव, गुरु एवं धर्म के प्रति आपकी पूरी श्रद्धा भक्ति थी।

-*धनपतचन्द सेठिया, अध्यक्ष*

जयपुर- श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका श्रीमती रेनूजी धर्मपत्नी श्री राजेन्द्रजी बालिया का 13 जून, 2017 को स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन सहज, सरल एवं सादगी से पूर्ण था। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति पूर्ण समर्पित थीं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

जिनवाणी पर अभिमत

श्री सुजितकुमार जैन

जैन समाज की प्रतिष्ठित मासिक पत्रिका 'जिनवाणी' का जैन जीवन-शैली विषयक मार्च, 2017 का अंक जैन धर्म व संस्कृति के बारे में अमूल्य एवं सारगर्भित जानकारियाँ प्रदान करने वाला रहा। 'विचार-वारिधि' स्तम्भ में 'इच्छा-परिमाण' शीर्षक से प्रकाशित आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. के विचार हमें अपरिग्रही जैन जीवन-शैली अपनाने की ओर प्रेरित करते हैं। इसी अंक में प्रकाशित 'जैनों का आहार कितना वैज्ञानिक' आलेख पढ़ कर लगा कि समस्त विश्व के लिए शाकाहार ही सर्वोत्तम आहार है। नयी पीढ़ी में जैन संस्कारों को सींचने के उद्देश्य से 'बाल-जिनवाणी' के प्रकाशन के लिए 'जिनवाणी' की पूरी टीम को हार्दिक धन्यवाद।

-*जैनविहार कॉलोनी, अलीगढ़, जिला-टोंक-304023 (राज.)*

❀ साभार-प्राप्ति-स्वीकार ❀

- 4000/- मण्डल साहित्य की सदस्यता हेतु प्रत्येक (अधिकतम 20 वर्ष)**
- 791 श्री संजय जी कटारिया, पो. लोनी, तालुका-राहटा, जिला-अहमदनगर (महा.) 2100/- श्रीमती शान्तिदेवीजी धर्मपत्नी स्व. श्री पारसमल जी मेहता, जोधपुर, अपने पुत्र श्री सुनीलजी मेहता के आकस्मिक स्वर्गवास पर उनकी पुण्य स्मृति में।
- 1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक**
- क्रम संख्या 15818 से 15825 तक 8 सदस्य बने।
- 'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त**
- 5100/- श्री अनन्तजी जैन सुपुत्र श्री देवेन्द्रकुमारजी-कनकजी बढेर, दिल्ली की ओर से सप्रेम भेंट। 2100/- श्रीमती अनिताजी बागरेचा, अहमदाबाद, स्व. श्री धनेशजी बागरेचा की पुण्य स्मृति में भेंट।
- 5100/- श्रीमती सायरदेवीजी, अमृतलालजी लुंकड, पचपदरा, सुपौत्र चि. सवाईजी सुपुत्र श्री कान्तिलालजी लुंकड का शुभविवाह सौ.कां. प्रियंकाजी सुपुत्री श्री अशोक कुमारजी मदाणी के संग एवं प्रपौत्र प्रज्ञानजी सुपुत्र श्रीमान् एवं श्रीमती रुचिकाजी सुपौत्र श्री शान्तिलालजी लुंकड के जन्मोत्सव पर सप्रेम भेंट। 2100/- श्रीमती वन्दनाजी-सुभाषजी भण्डारी, दुबई, सुपुत्र चि. प्रतीकजी का शुभविवाह सौ.कां. स्नेहा के संग सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम।
- 5100/- श्री ज्ञानजी कांकरिया, जोधपुर, पूज्य पिताजी स्व. श्री विजयरजजी कांकरिया की 50 वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में। 1101/- श्री सौभाग्यमलजी, प्रदीपजी, दिलीपजी, अशोकजी चण्डालिया एवं पारिवारिकजन, रामगंजमण्डी-कोटा, पूजनीया मातुश्री श्रीमती लक्ष्मीदेवीजी चण्डालिया का 23 मई 2017 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।
- 5100/- श्री ज्ञानजी कांकरिया, जोधपुर, पूज्य पिताजी स्व. श्री विजयरजजी कांकरिया की 50 वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में। 1100/- श्री नरेन्द्र कुमारजी जैन (सेवानिवृत्त प्राचार्य), हिण्डौनसिटी, पूज्य पिताजी स्व. प्रभुदयालजी जैन की 02 जून 2017 को छठी पुण्य स्मृति के उपलक्ष्य में भेंट।
- 5100/- श्रीमती रेखा-प्रवीणजी अबानी, जोधपुर, अपने सुपुत्र श्री प्रांजल अबानी, सुपौत्र श्रीमती लीला-पूणराजजी अबानी के सी.बी.एस.ई. बोर्ड की वाणिज्य वर्ग की परीक्षा 94.4 प्रतिशत अंक प्राप्त करने के उपलक्ष्य में। 1100/- श्रीमती दीपालीजी पारख, जयपुर, सुपुत्र श्री अभिनवजी पारख के 10वीं कक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।
- 5000/- श्री पी. शांतिलालजी, सुरेशकुमारजी, मुकेशकुमार जी, नमनजी गुन्देचा, हैदराबाद, श्री पी. शांतिलाल जी-कमलादेवीजी की शादी की 46 वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में। 1100/- श्रीमती चन्द्रकलाजी-महावीर प्रसादजी मेहता, दूद, सुपौत्र श्री आदिशजी सुपुत्र श्रीमती मीनाक्षीजी-संदीपजी मेहता के सीबीएसई बोर्ड की 10वीं कक्षा में 10 सीजीपीए प्राप्त होने की खुशी में सप्रेम।
- 3000/- श्री प्रकाशजी, आशीषजी गेलड़ा, चनपटना, सुपौत्र श्री लक्ष्यजी सुपुत्र श्री आशीषजी गेलड़ा के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट। 1100/- श्री अमोलकचन्दजी, सुरेश कुमारजी जैन (जरखोदा वाले), सवाईमाधोपुर, चि. नितिन (निक्की) का शुभविवाह सौ.कां. जागृतिजी (प्रिया) के संग 06 मई 2017 को सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम।
- 2103/- श्री महेन्द्रमलजी-ललितानी गांग एवं अभिषेकजी गांग, सूरत, श्री अभिषेक-प्रियदर्शनीजी गांग 1100/- श्रीमती सूरजजी धर्मपत्नी श्री हेमराजजी सुराणा,

जयपुर, सुपौत्र समकितजी सुपुत्र श्रीमती सुनीताजी-सुरेन्द्रजी सुराणा के सीबीएसई के 10वीं की परीक्षा में 10 सीजीपीए से उत्तीर्ण करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री सायरचन्दजी एवं श्रीमती विमला जी कोटडिया, जोधपुर, अपनी सुपुत्री डॉ. श्वेता जैन के साहित्याचार्य की उपाधि प्राप्त करने के उपलक्ष्य में।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल हेतु साभार प्राप्त

162000/- श्री पी. एस. सुराणा, चेन्नई, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से प्रकाशित नूतन पुस्तक "महामुनि स्थूलभद्र चरित्र" के प्रकाशन हेतु सप्रेम भेंट।

80000/- श्री भागचन्दजी कोचेटा एवं पारिवारिकजन, मदनगंज-किशनगढ़, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से प्रकाशित पुस्तक 'सामायिक दर्शन' के पुनः मुद्रण हेतु सप्रेम भेंट।

71000/- श्री सुभाषजी, अशोकजी, विपिनजी, पुनीतजी धोका, मैसूर, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से प्रकाशित पुस्तक 'अन्तगडदसा सूत्र' के पुनः मुद्रण हेतु सप्रेम भेंट।

60000/- श्री पी. हस्तीमलजी, सज्जनराजजी, उत्तमचन्दजी गुन्देचा एवं पारिवारिकजन, हैदराबाद, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से प्रकाशित पुस्तक "जैन इतिहास के प्रसंग भाग-1 से भाग-5" के पुनः मुद्रण हेतु सप्रेम भेंट।

30000/- श्री प्रकाशचन्दजी हीरावत, जयपुर, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से प्रकाशित नूतन पुस्तक 'हीरा प्रवचन पीयूष भाग-5' के प्रकाशन हेतु सप्रेम भेंट।

12000/- श्री प्रकाशचन्दजी, कांतिजी, अभिषेकजी जैन (श्यामपुरा वाले), जलगाँव, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से प्रकाशित पुस्तक 'वृहद् आलोचना' के पुनः मुद्रण हेतु सप्रेम भेंट।

10200/- श्री सौभाग्यमलजी, प्रदीपजी, दिलीपजी, अशोकजी चण्डालिया, रामगंजमण्डी-कोटा, पूजनीय मातुश्री श्रीमती लक्ष्मीदेवीजी चण्डालिया का 23 मई 2017 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

2000/- श्री अशोकजी पारसचन्दजी समदडिया, जलगाँव, शिविर सहयोग हेतु।

1100/- श्री अमोलकचन्दजी, सुरेश कुमारजी जैन (जरखोदा वाले), सवाईमाधोपुर, चि. नितिन (निककी) का शुभविवाह सौ.कां. जागृतिजी (प्रिया) के संग दिनांक 06 मई 2017 को सुसम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री रामलक्ष्मणजी कुम्भट, जोधपुर, अपनी मातुश्री स्व. श्रीमती उगमकंवरजी धर्मपत्नी स्व. श्री मगराजजी कुम्भट की सप्तम पुण्य तिथि पर उनकी पुण्य स्मृति में।

गजेन्द्र निधि द्वारा आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

111000/- श्री पानमलजी दुग्गड़, चेन्नई, मुमुक्षु भाई श्री अशोकजी कवाड़, मुमुक्षु भाई श्री कल्पेशजी कवाड़ एवं मुमुक्षु बहिन सुश्री मधुबालाजी कवाड़ की भागवती दीक्षा के अनुमोदनार्थ सप्रेम भेंट।

50000/- श्री बुधमलजी बोहरा, (पूजा फाउण्डेशन प्रा. लि.) चेन्नई।

12000/- श्री सोहनलालजी बुधमलजी बागमार, मैसूर।

12000/- श्री हकमलजी सुराणा, बीकानेर (राज.)

12000/- भगवानमलजी सुराणा, बीकानेर (राज.)

12000/- श्रीमती रिंकीजी धर्मपत्नी श्री कृष्णकुमारजी जैन, मुडियासद, भरतपुर, अपने पूज्य पिताजी श्री त्रिलोकचन्दजी जैन की पुण्य स्मृति में।

12000/- श्री पूरणराजजी, प्रवीणजी अबानी, श्री प्राजल अबानी सुपुत्र श्रीमती रेखा-प्रवीणजी एवं सुपौत्र श्रीमती लीला-पूरणराजजी अबानी, जोधपुर, के द्वारा सी.बी.एस.ई. बोर्ड में वाणिज्य वर्ग में 94.4 प्रतिशत अंक प्राप्त करने एवं टेबल टेनिस में जिला स्तर पर तथा आई.पी.एस.सी. टूर्नामेंट में खेलने की उपलब्धि प्राप्त करने पर भेंट।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट (Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- **Sh. M. Harish Kawad, No. 5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600056(T.N.)** (Mob. 9543068382)

बाल-जिनवाणी

ध्वजवंदन

संकलित

लहरायेगा लहरायेगा, झण्डा प्रभु महावीर का।

अखिल विश्व का जो है प्यारा,
मनुज जाति का दिव्य सितारा,
हम युवकों का प्राण सहारा,
झण्डा प्रभु महावीर का.....॥1॥

सदा शान्ति बरसाने वाला,
प्रेम क्षीर सरसाने वाला,
दीनों को हर्षाने वाला,
झण्डा प्रभु महावीर का.....॥2॥

युवकों को सोते से जगाया,
दीन जनों को गले लगाया।
कायरता को दूर भगाया,
झण्डा प्रभु महावीर का.....॥3॥

(जिनवाणी, जनवरी 1946 से गृहीत)

चाबी, ताला और हथौड़ा

श्री गौतम पारख

हथौड़ा और ताला दोनों के परिप्रेक्ष्य में जब एक दूसरे का तुलनात्मक अध्ययन किसी विशेष परिप्रेक्ष्य में हम करते हैं तो हथौड़ा तोड़ने का, अस्तित्व को समाप्त करने का, चोट पहुँचाने का कार्य करता है, जबकि चाबी ताले को खोलने व बन्द करने का कार्य करती है। चाबी की संरचना इस प्रकार की जाती है ताकि वह ताले के दिल में प्रवेश कर जाए, ताले के दिल में जगह बना ले, दिल में जगह बनाकर चाबी ताले के दिलों में राज करती है। आवश्यकता पड़ने पर उसे खोल देती है और आवश्यकता पड़ने पर उसे बन्द कर देती है। चाबी के

दिशा निर्देश में ताला कार्य करता है। चाबी के खोने पर, गुम हो जाने पर ही तो हथौड़े की जरूरत पड़ती है। ताले को हथौड़े से बेरहमी से ठोका जाता है, चोट पहुँचाया जाता है। अन्त में ताला टूट जाता है, अपना अस्तित्व खो देता है। जिस तरह चाबी ताले के दिल में प्रवेश कर उसके दिल की मलिका बन जाती है वैसे ही दूसरे व्यक्ति के दिल दिमाग में प्रेम, स्नेह, करुणा, दया अपनत्व की चाबी बनकर प्रवेश कर जाए तो उसे कोई पराया नहीं लगेगा, वह सभी के दिलों में राज करेगा। दूसरों के आँसू पोंछकर उनकी जरूरत के वक्त में काम आकर उससे आत्मीयता का व्यवहार करने से मेरे तेरे का भेद समाप्त हो जायेगा।

हथौड़ा जब गरम लोह पिण्ड पर पड़ता है तो वह उस पिण्ड को जैसा आकार देना चाहता है वैसे आकार दे देता है। हथौड़े की चोट गरम लौह पिण्ड के अनगढ़ रूप को निखार देती है। इसी प्रकार विपत्तियों की मार व्यक्ति को संघर्ष करने और चोट सहने की ताकत प्रदान करती है। प्रतिकूलता रूपी हथौड़े की चोट जो व्यक्ति सहन कर लेता है वह नर से नारायण बनने की कला सीख लेता है।

मंदिर की प्रतिमा बनने के पूर्व पाषाण को खान से निकाला जाता है, तोड़ा जाता है फिर छैनी और हथौड़े से उस पाषाण खण्ड को तराशने का कार्य प्रारम्भ किया जाता है। तेज धार की छैनी और हथौड़े से मारा जाता है। फिर वह प्रतिमा मंदिर में स्थापित होकर हजारों-लाखों लोगों की आस्था का केन्द्र बन जाती है।

प्रभु से हम प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभो! हमें हथौड़ा भी यदि बनना पड़े तो दूसरों का भविष्य संवारने के साथ उसमें सामने वाले के हित व उत्थान का लक्ष्य रहे। परन्तु विध्वंस और विनाश के लिए हथौड़ा मत बनाना।

साथ ही प्रभो! यदि हमें चाबी बनना पड़े तो निश्चल, निस्पृह और निष्काम भाव से दूसरों के दिलों में प्रेम, स्नेह और अपनत्व के साथ सेवा व सहयोग करने के उद्देश्य से उनके मन की ग्रंथियों को खोलने में हमारा उपयोग हो।

रात्रिभोजन त्याग से कई लाभ

श्री अभयकुमार जैन

आयुर्वेद के अनुसार प्रकृति और सूर्य की रोशनी से हमारे भोजन चक्र का गहरा सम्बन्ध है, यदि रात का भोजन जल्दी ले लिया जाय तो कई बीमारियों से बचा जा सकता है। आयुर्वेद की मान्यता है कि सूर्यास्त के बाद हृदय कमल और नाभि कमल सिकुड़ जाता है तथा शारीरिक परिश्रम भी रात को कम हो जाता है अतः पाचन के अभाव में वजन बढ़ता है। कब्ज, एसिडिटी, मुख में दुर्गंध, दांतों में इंफेक्शन, गले में इंफेक्शन, अल्पनिद्रा, जोइंट पेन, शुगर एवं हार्ट अटैक आदि बीमारियों के शिकार बन सकते हैं। हांगकांग में अभी खोज हुई उसमें बताया गया है कि जो लोग सूर्यास्त से पहले खाना खा लेते हैं उन्हें हृदय रोग की बीमारी का खतरा भी बना रहता है। आहार विशेषज्ञों के अनुसार रात का खाना जल्दी खाना चाहिए कि सूर्यास्त से पूर्व शाम का भोजन ग्रहण कर लेना चाहिए। बताया जाता है कि सूर्यास्त के साथ शरीर की फेट जलाने की शक्ति कमजोर हो जाती है, इसलिए अक्सर बड़े बुजुर्ग भी कहते हैं कि सुबह का नाश्ता जमकर, दोपहर का भोजन उससे कम व रात का भोजन बिल्कुल कम लें। दुनिया भर में हुए शोधों के अनुसार भी कहा जाता है कि शाम का भोजन जल्दी करें।

डॉक्टर व डायटिशियन के मुताबिक शाम को जल्दी खाने से स्वास्थ्य की दृष्टि से निम्न फायदे:-

1. **मोटापे से राहत:-** रात में जल्दी खाना खा लेने से शरीर स्वस्थ रहने के साथ ही साथ वजन भी नहीं बढ़ता। रात में जल्दी खाने से अगले दिन के ब्रेकफास्ट के बीच 14 से 16 घण्टे का फर्क होता है। इससे रात में खाए भोजन को पचने के लिए

वक्त अच्छी तरह मिल जाता है। खाना ठीक से पचने से शरीर को पर्याप्त ऊर्जा मिलती है, और वह मोटा भी नहीं होता है।

2. **आती है मीठी नींद:-** एक शोध के मुताबिक अगर आप रात में देर से खाते हैं और ज्यादा मात्रा में खाते हैं तो इससे भोजन ठीक तरह से नहीं पचता और नींद भी अच्छी नहीं आती है। इसलिए जल्दी भोजन करें तथा आवश्यक और सही मात्रा में भोजन करें। इससे नींद भी अच्छी आएगी और तनाव भी नहीं होगा।
3. **दिल रहेगा स्वस्थ:-** जो लोग रात में हमेशा देर से खाना खाते हैं उनके शरीर में ट्राइग्लिसराइड्स फैट का स्तर बढ़ जाता है। इसकी वजह यह है कि खाना खाने के बाद अगर आपने अपनी कैलोरी का सही इस्तेमाल नहीं किया तो यह फैट (ट्राइग्लिसराइड) में बदल जाती है। खून में ट्राइग्लिसराइड्स की बढ़ोतरी हार्ट अटैक और स्ट्रोक का कारण बन सकती है। इसलिए जल्दी खाएं और स्वस्थ रहें।

-भवानी मण्डी (राज.)

चौबीस तीर्थकरों की 24 शिक्षाएँ

डॉ. दिलीप धींग

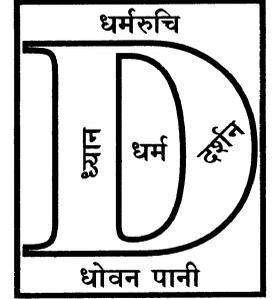
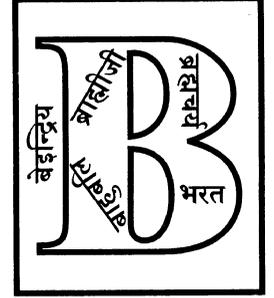
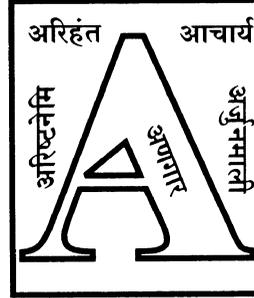
1. **भगवान श्री ऋषभदेवजी-** सफलता के लिए जरूरी है- हुनर व परिश्रम।
2. **भगवान श्री अजितनाथजी-** अपनी इच्छाओं को जीतना ही सच्ची जीत है।
3. **भगवान श्री संभवनाथजी-** आत्मबल से असंभव भी संभव हो जाता है।
4. **भगवान श्री अभिनन्दन स्वामीजी-** त्याग करने वालों का अभिनन्दन होता है।
5. **भगवान श्री सुमतिनाथजी-** जहाँ सुमति (अच्छी बुद्धि) वहाँ स्नेह-सम्पत्ति।
6. **भगवान श्री पद्मप्रभुजी-** पानी में पद्म (कमल)

की तरह निर्लिस रहो।

7. भगवान श्री सुपार्श्वनाथजी- प्रेम, करुणा, मैत्री आदि सब अहिंसा के सुफल हैं।
8. भगवान श्री चन्द्रप्रभजी- अज्ञान की रात में ज्ञान का चन्द्रमा है- स्वाध्याय।
9. भगवान श्री सुविधिनाथजी- कार्य विधिपूर्वक करें, अच्छा परिणाम आएगा।
10. भगवान श्री शीतलनाथजी- स्वभाव शीतल और भाव उज्ज्वल होने चाहिये।
11. भगवान श्री श्रेयांसनाथजी- श्रेष्ठ कार्य करने वाले को श्रेय मिलना चाहिये।
12. भगवान श्री वासुपूज्यजी- सतत साधना करने वाला पूज्य बन जाता है।
13. भगवान श्री विमलनाथजी- तप से तन-मन विमल यानी शुद्ध हो जाते हैं।
14. भगवान श्री अनन्तनाथजी- ज्ञान अनन्त है।
15. भगवान श्री धर्मनाथजी- अहिंसा परम धर्म है।
16. भगवान श्री शान्तिनाथजी- शान्ति का स्रोत बाहर नहीं, भीतर है।
17. भगवान श्री कुन्थुनाथजी- श्रद्धा, ज्ञान और सदाचरण तीन रत्न हैं।
18. भगवान श्री अरनाथजी- क्रोध शूल है, क्षमा फूल है।
19. भगवान श्री मल्लिनाथजी- विनाशी शरीर से अविनाशी आत्मा पाओ।
20. भगवान श्री मुनिसुव्रतजी- मौन और मनन से व्रत सुव्रत बन जाता है।
21. भगवान श्री नमिनाथजी- जीवन का खास सदगुण है- नम्रता।
22. भगवान श्री अरिष्टनेमीजी- प्राणियों की रक्षा में प्रकृति की सुरक्षा है।

23. भगवान श्री पार्श्वनाथजी- हम पारस नहीं बन सके तो स्वर्ण अवश्य बनें।
24. भगवान श्री महावीर स्वामीजी- जियो और जीने दो।

-निदेशक : अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र,
सुगन हाउस, 18, रामानुजा अख्यर स्ट्रीट,
साहूकारपेट, चेन्नई-600001 (तमिलनाडु)



A B C D से निम्न प्रश्नों के सही उत्तर ढूँढने हैं-
संकलित

1. संघ के नायक
2. एक जाति
3. साधु को कहते हैं?
4. भगवान महावीर की प्रथम शिष्या?
5. एक तप/निर्जरा का एक भेद।
6. ऋषभदेवजी के पुत्र जिन्होंने दीक्षा लेकर केवलज्ञान प्राप्त किया।
7. कीड़ियों पर करुणा कर भवसागर किसने पार किया?
8. तीर्थंकर जिन्होंने जानवरों की करुण पुकार सुनकर

- विवाह स्थल से रथ मोड़ लिया।
9. सशरीरी उपकारी देव।
 10. एक महाव्रत।
 11. मोक्ष प्राप्ति का एक उपाय।
 12. सम्यक् साधना के लिए किसकी विशुद्धि जरूरी है? (पच्चीस बोल में से एक बोल।)
 13. प्रतिदिन हत्या करने वाला भगवान के चरणों में दीक्षित हो समता भाव से वंदनीय बना, कौन?
 14. श्लाघनीय पुरुष में से एक?
 15. भगवान ऋषभदेव की पुत्री, एक सती।
 16. प्रथम चक्रवर्ती।
 17. संसार से तिराने वाला सहारा।
 18. साधु को कल्पनीय है।
 19. साधु को कब विहार नहीं करना चाहिए?
 20. साधु+साध्वी+श्रावक+श्राविका।

Behaviour of Children towards fellow groups, elders, society and other People

Miss Anjita Bhandari

Children face many sorts of difficulties in their life. The entire blame of not doing a particular thing properly should not be placed upon their shoulders, because they too might be facing some sort of peer pressure. They should be treated as learners.

Children, our parents and elders, in their best possible way, teach us the quality of living our lives. Now its totally up to us, how do we keep their teachings in our mind and apply then when needed.

Suppose, when we go out to play, we always have that winning strike in our minds or it can be said that we always want to defeat the apposite team by hook or by

crook. This creates a gap between our friendships and that is the reason why most of us lack friends.

Do you want to loose more friends, Children?

No! Right? So, Friends, always speak in friendly manner to your friends even if they are your opponents. Never always be in a mindset to win over the other by wrong means. This will make your friendship strong and you will have more friends added in your company.

-17 E-24, C.H.B. Jodhpur-342008 (Raj.)

‘चमत्कार’ चाहिए

संकलन : श्री नमन मेहता

छोटी लड़की ने गुल्लक से सब सिक्के निकाले और उनको बटोर कर जेब में रख कर निकल पड़ी। घर के पास ही केमिस्ट की दुकान थी। उसकी सीढ़ियाँ धीरे-धीरे चढ़ गयी। वह काउण्टर के सामने खड़े होकर बोल रही थी पर छोटी-सी लड़की किसी को नज़र नहीं आ रही थी और न ही उसकी आवाज़ पर कोई गौर कर रहा था, सब व्यस्त थे। दुकान मालिक का कोई दोस्त किसी बाहर देश से आया था, वो भी उससे बातें करने में व्यस्त था। तभी उसने जेब से एक सिक्का निकाल कर काउण्टर पर फेंका। सिक्के की आवाज़ से सबका ध्यान उसकी ओर गया, उसकी तरकीब काम आ गयी।

दुकानदार उसकी ओर आया और उससे प्यार से पूछा- “क्या चाहिए बेटा?” उसने जेब से सब सिक्के निकाल कर अपनी छोटी सी हथेली पर रखे और बोली- मुझे ‘चमत्कार’ चाहिए।

दुकानदार समझ नहीं पाया। उसने फिर से पूछा, वो फिर से बोली मुझे ‘चमत्कार’ चाहिए। दुकानदार हैरान होकर बोला- “बेटा! यहाँ चमत्कार नहीं मिलता।”

वो फिर बोली- ‘अगर दवाई मिलती है तो चमत्कार भी आपके यहाँ ही मिलेगा।’

दुकानदार बोला- ‘‘बेटा! आपसे यह किसने कहा?’’

अब उसने अपनी तोतली जबान में विस्तार से बताना शुरू किया- ‘‘मेरे भैया को टुमर (ट्यूमर) हो गया है, पापा ने मम्मी को बताया है कि डॉक्टर 4 लाख रुपये इलाज के बता रहे थे। अगर समय पर इलाज न हुआ तो कोई चमत्कार ही इसे बचा सकता है। और कोई संभावना नहीं है। अपने पास कुछ बेचने को भी नहीं है। न कोई जमीन जायदाद और नहीं कोई गहने। पहले ही सब इसके इलाज पर खर्च हो गए हैं। दवा के पैसे भी बड़ी मुश्किल से जुटा पा रहा हूँ।’’

उस दुकानदार का दोस्त भी उसके पास आकर बैठ गया और प्यार से बोला- ‘‘अच्छा! कितने पैसे लाई हो चमत्कार खरीदने को।’’

उसने अपनी मुट्ठी से सब रुपये उसके हाथों में रख दिए। दोस्त ने वो रुपये गिने जो लगभग 21 रुपये 50 पैसे थे। वो हँसा और लड़की से बोला तुमने चमत्कार खरीद लिया। चलो, मुझे अपने भाई के पास ले चलो।’’

वो व्यक्ति जो उस दुकानदार का दोस्त था अपनी छुट्टियाँ बिताने भारत आया था और न्यूयार्क का एक प्रसिद्ध न्यूरो सर्जन था। उसने उस बच्चे का इलाज 21 रुपये 50 पैसे में किया और बच्चा सही हो गया।

प्रभु ने उस लड़की को चमत्कार बेच दिया। वो बच्ची बड़ी श्रद्धा से उसको खरीदने चली थी जो उसको मिल भी गया।

सारांश:- नीयत साफ और मकसद सही हो तो, किसी न किसी रूप में धर्म भी आपकी मदद करता है और यही आस्था का चमत्कार है।

-उपाध्यक्ष, धार्मिक शिक्षण शिविर, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर-342001 (राज.)

Jain Values

Sh. Dulichand Jain

Jainism is one of the oldest religion

of India. It promotes non-violence and reverence of all forms of life. It has independent scriptures, literature, art and had inspired people of all ages and backgrounds.

Jainism promotes the following values:-

Ahimsā- Peace. Peace comes from auspicious thoughts and from a stable relaxed mind.

Satya- Integrity. We have to be true to ourselves and to others.

Aparigraha- A life free from attachments- limiting the desires.

Asteya- To share what we have with others and not to grab anything from others.

Brahmacarya- Chastity. Dwelling in the self- not to have illegal sexual contacts.

Sānyamaā- We should be master of senses and not slave to them. Restraint in eating.

Anekanta- Tolerance of different viewpoints and beliefs.

Kṣamā- Forgiveness.

When we ask for forgiveness, we develop humility.

-70, T.T.K. Road, Alwarpet, Chennai-600018 (TN)

राजा का न्याय

श्रमण डॉ. पुष्पेन्द्र

अयोध्या के राजा सगर न्यायप्रिय शासक थे। प्रजा के दुःख-सुख में वह हमेशा सहभागी रहते थे। एक दिन वह दरबार में बैठे थे। दरबान ने आकर उन्हें बताया कि अयोध्या के कुछ प्रमुख लोग उनसे भेंट करना चाहते हैं। महाराजा सगर ने उन्हें दरबार में बुलवा दिया। उन्होंने महाराजा को सिर झुकाकर नमस्कार किया और बैठ गए। महाराजा ने कुशल-क्षेम पूछी तो उनमें से एक रो

पड़ा। महाराज को समझते देर न लगी कि ये सब किसी दुःख से पीड़ित होकर आए हैं। महाराजा ने कहा- “आप निःसंकोच बताइए कि आपको मेरे राज्य में क्या कष्ट है।” “महाराज, हमें लाचार होकर यहाँ आना पड़ा है।” एक वृद्ध नागरिक ने कहा- “महाराज, आप तो प्रजा को पुत्रों की तरह स्नेह और संरक्षण देते हैं। किन्तु आपके पुत्र राजकुमार असमंजस ने राज्य में हमारा रहना दूँधर कर दिया है। वह शाम को सरयू तट पर पहुँचते हैं और अबोध बालकों को नदी की उफनती धार में फेंक देते हैं। जब डूबते बालक रोते हैं तो राजकुमार जोर से अट्टहास कर अपना मनोरंजन करते हैं।” सुनते ही महाराज का चेहरा गुस्से से लाल हो उठा। उन्होंने कहा-

“आप सभी निश्चिन्त होकर अपने-अपने घर लौट जाइए।” महाराज दरबार से महल में पहुँचे। उन्होंने राजकुमार असमंजस को अपने पास बुलाया। वे बोले- “तुम राजकुमार हो या जल्लाद। तुम प्रजाजनों के निर्दोष बच्चों को सरयू में फेंक कर मनोरंजन करते हो। मेरे राज्य में ऐसा क्रूर व्यक्ति एक क्षण भी नहीं रह सकता।” राजकुमार भय से कांपने लगे। हाथ जोड़कर बोले- “पिताजी, क्षमा करें भविष्य में ऐसा पाप नहीं करूँगा।” सगर बोले- “किन्तु अनेक अबोध बच्चे तुम्हारे इस क्रूरतापूर्ण मनोरंजन के शिकार बन चुके हैं। मैं ऐसे क्रूर युवक को अपना पुत्र मानकर संरक्षण नहीं दे सकता।” राजा ने असमंजस को तुरन्त अयोध्या से निष्कासित कर

तीसरा बोल- काय छह

छह काय:- 1. पृथ्वीकाय, 2. अप्काय, 3. तेजस्काय, 4. वायुकाय, 5. वनस्पतिकाय एवं 6. त्रसकाय।

‘काय’ शब्द का अर्थ शरीर (Body) है। तरह-तरह के पुद्गलों से बने हुए शरीर को काय कहते हैं। काय छह हैं-

1. **पृथ्वीकाय**- जिनका शरीर पृथ्वी, मिट्टी आदि रूप है, वे पृथ्वीकाय हैं। जैसे खान से निकला हुआ सोना, चाँदी, कोयला, पत्थर आदि। पृथ्वीकाय वाले जीव पृथ्वीकायिक कहलाते हैं एवं परिष्कृत सोना-चाँदी एवं सोने-चाँदी के आभूषण में जीवत्व नहीं होता।
2. **अप्काय**- सचित्त पानी स्वरूप शरीर अप्काय है। जैसे- बरसात का जल, ओस की बूँद इत्यादि। अप्काय वाले जीव अप्कायिक कहलाते हैं। गर्म एवं धोवन जल जीव नहीं होता।
3. **तेजस्काय**- अग्नि आदि ही जिनका शरीर है, उन्हें तेजस्काय कहते हैं। तेजस्काय वाले जीव तेजस्कायिक कहलाते हैं।
4. **वायुकाय**- वायु ही जिनका शरीर है, वे वायुकायिक कहलाते हैं।
5. **वनस्पतिकाय**- वनस्पति जिनका शरीर है, वे वनस्पतिकायिक जीव हैं। जैसे-पेड़-पौधे, बीज, अंकुर आदि।
6. **त्रसकाय**- हलन-चलन करने वाले जीव त्रसकायिक कहलाते हैं। बेन्द्रिय, तेन्द्रिय, चौरन्द्रिय एवं पंचेन्द्रिय जीव त्रसकाय में आते हैं।

विशेष जानकारी

1. प्रारम्भ की पाँच काया के जीव एकेन्द्रिय हैं। इन्हें ‘स्थावर’ भी कहते हैं। स्थावर अर्थात् जो जीव अपनी इच्छा से एक स्थान से दूसरे स्थान पर आ-जा नहीं सकते, एक ही स्थान पर स्थिर रहते हैं, उन्हें स्थावर कहते हैं।
2. पृथ्वी, पानी, अग्नि और वायु में असंख्य जीव हैं। कैप्टन स्कोर्स ने सूक्ष्मदर्शी यंत्र से एक जल की बूँद में 36,450 जीव चलते-फिरते देखे हैं। छना हुआ पानी उपयोग में लेने से इन सब जीवों की रक्षा होती है। इसके अतिरिक्त पानी स्वयं जीव रूप है।
3. वनस्पति जो कंद मूल है, लीलण-फूलण है, उनमें एक सूई टिके उतनी जगह में अनन्त जीव है।

अधूरा ज्ञान

संकलित

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 अगस्त, 2017 तक जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, सामायिक-स्वाध्याय भवन, कुम्हार छात्रावास के सामने, प्लॉट नं. 2, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.) के पते पर प्रेषित करें। उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

किसी नगर में समान अवस्था के दो नवयुवक एक निमित्तज्ञ के पास निमित्त शास्त्र की शिक्षा लेने गये। उनमें एक नवयुवक बड़ा विनयशील था। गुरुजी महाराज जो कुछ पढ़ाते, उसे बड़े ही विनयपूर्वक एवं ध्यान से सुनता था। सुनने के बाद उस पाठ को एकान्त में बैठकर चिन्तन करता और सन्देह होने पर बड़े ही विनय के साथ गुरुदेव से उस संदेह का निराकरण करता था। गुरुदेव भी बड़े ही प्रेम के साथ उसे शिक्षा प्रदान करते थे।

दूसरा शिष्य कुछ अविनयी था। वह न तो ढंग से कुछ पढ़ता, न कुछ सीखता, न गुरु से कुछ पूछता और न ही वह पढ़ाये गये विषय पर कुछ विचार करता था। किसी तरह उन दोनों की शिक्षा सम्पूर्ण हुई। गुरुदेव से विदा लेकर वे दोनों अपने नगर की ओर चल दिए। रास्ता बहुत लम्बा था। चलते-चलते उन्हें एक सरोवर नज़र आया। वे बहुत थके हुए थे और कुछ देर तक विश्राम करना चाहते थे। सरोवर में उन्होंने जलपान किया और कड़ाके की धूप से बचने के लिए उन्होंने एक छायादार वृक्ष का आश्रय लिया। कुछ ही देर में उनकी आँख लग गयी।

नींद से जब वे उठे तो शाम हो चली थी। सरोवर के पास चहल-पहल मच गयी। नगर की नारियाँ पानी के घड़े भर-भर कर अपने घरों की ओर

जाने लगीं। एक वृद्धा की नज़र उन दोनों नवयुवकों पर पड़ी। युवकों के परिधान से ही उनके पांडित्य का पता लग रहा था। वृद्धा ने सरोवर के जल से अपने घट को भरा और उसे अपने सिर पर रखते हुए पूछा- “पंडितवर! मेरे पुत्र को परदेश गये हुए बहुत लम्बा समय बीत गया है। आप मुझे यह बताने की कृपा करें कि उसका क्या हालचाल है और वह लौट कर कब आयेगा?” इतना कहते-कहते अचानक उस वृद्धा का सिर से पानी का घड़ा नीचे गिर गया और टुकड़े-टुकड़े हो गया।

अविनीत युवक तुरन्त अपनी कर्कश आवाज में बोल उठा- “हे वृद्धे! तेरा पुत्र तो परदेश में ही मर गया है। अब किस लिए उसका हालचाल पूछ रही हो?” यह सुनते ही वृद्धा का सिर चकराने लगा। वह मूर्छित होकर धरती पर गिरने ही वाली थी कि उस विनयशील युवक ने उसे थाम लिया और बड़े ही शान्त स्वर में बोला- “हे माते! आप धैर्य धारण कीजिये। आपके पुत्र को कुछ नहीं हुआ है। वह सकुशल आपके घर लौट आया है। परदेश से वह बहुत सारा धन-माल कमाकर आया है और घर पर आपके आने का इन्तजार कर रहा है।”

यह सुनते ही वृद्धा की आँखों में चमक-सी आ गयी। वह दौड़ती हुई अपने घर पहुँची। घर पहुँचते ही

उसकी प्रसन्नता का पार नहीं रहा। वास्तव में उसका पुत्र घर आ पहुँचा था और उसका इन्तजार कर रहा था। वृद्धा ने अपने पुत्र को गले से लगा लिया। उसकी आँखों में से प्रसन्नता की गंगा जमुना बहने लगी। पुत्र ने परदेश से लाये धन-माल को माता के चरणों में रख दिया। अचानक वृद्धा को उन नवयुवकों की याद आ गयी। वह अहसान फरामोश नहीं थी। इतनी अच्छी खबर सुनाने वाले निमित्तज्ञ को पुरस्कृत करने हेतु वह कई बहुमूल्य उपहार लेकर सरोवर की ओर दौड़ पड़ी। दोनों निमित्तज्ञ अभी तक उसी पेड़ के नीचे बैठे हुए थे। वृद्धा ने अपने साथ लाई हुई बहुमूल्य वस्तुएँ उस विनयशील निमित्तज्ञ को भेंट करते हुए पूछा- “बेटा! तुम दोनों ज्योतिष शास्त्र में पारंगत लगते हो। मगर तुम्हारे इस मित्र ने तो अपनी भविष्यवाणी द्वारा मेरे प्राण ही हर लिये थे। यह तो अच्छा हुआ कि तुमने मुझे संभाल लिया और सही बात बताकर मेरे प्राणों की रक्षा की। तुम मुझे यह बताने का कष्ट करो कि तुम दोनों की भविष्यवाणी में इतना अन्तर किस प्रकार आया?”

विनयशील नवयुवक बोला- मेरे मित्र की भविष्यवाणी गलत नहीं थी। मगर वह भविष्यवाणी अधूरी थी। घड़े का गिरकर फूट जाना एक तरह से अपशकुन था। उस अपशकुन के अनुसार तो आपकी मृत्यु निश्चित थी। मगर घड़े के पानी का बहकर वापस सरोवर में मिल जाना शुभ शकुन का संकेत था। उस शुभ शकुन का अर्थ मेरे इस मित्र ने नहीं लगाया

और मैंने उसका अर्थ लगाकर आपको बताया कि आपका पुत्र सकुशल घर लौट आया है और वह घर पर आपका इन्तजार कर रहा है।

वृद्धा अत्यन्त प्रसन्न हुई। उन दोनों युवकों को अपने घर ले आयी। हाथों से बनाकर उसने उन दोनों को स्वादिष्ट भोजन खिलाया और उन्हें विदा किया। उस अविनीत युवक को अपने अधूरेपन पर बहुत पश्चात्ताप हुआ। उसने उस वृद्धा से बारम्बार क्षमायाचना की। शिक्षा ग्रहण करते समय शिक्षा पर अपना पूरा ध्यान न देकर अपने अधूरे ज्ञान द्वारा आज कितना बड़ा अनर्थ होने वाला था। यह सोचकर उसे अपने आप पर बहुत क्रोध आया और उसका सिर शर्म के मारे झुक गया।

प्रश्न:-

1. निमित्त शास्त्र किसे कहते हैं?
2. विनयी और अविनयी शिष्य में क्या अन्तर है?
3. वृद्धा ने युवकों से क्या प्रश्न किया?
4. विनयी युवक ने वृद्धा को क्या उत्तर दिया?
5. अर्थ बताइये- पण्डितवर, अहसान फरामोश, भविष्यवाणी, मूर्च्छित, परिधान, अपशकुन।
6. अपने ज्ञान को परिपूर्ण बनाने के लिए क्या करना चाहिए?
7. दोनों निमित्तज्ञों की भविष्यवाणी में अन्तर किस कारण आया?

बाल-स्तम्भ [मई-2017] का परिणाम

जिनवाणी के मई-2017 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'अनुमोदना में रहें सजग' के प्रश्नों के उत्तर 18

बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक 30 हैं।

पुरस्कार एवं राशि नाम		अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	ऋषभ चौपड़ा-जोधपुर (राज.)	28
द्वितीय पुरस्कार-300/-	त्रिशला छाजेड़-भुसावल (महा.)	26
तृतीय पुरस्कार-200/-	नमन श्रेणिक जैन-भुसावल (महा.)	25.5
सान्त्वना पुरस्कार-150/-	जिया जैन-ब्यावर (राज.)	24
	चेतन कुमार जैन-सुरेली, जिला-टोंक (राज.)	24
	मंगलम हींगड़-अजमेर (राज.)	23
	निधि कीमती-रामपुरा (मध्यप्रदेश)	23
	अमीषा कोठारी-अजमेर (राज.)	23

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 71 से भी अधिक वर्षों से सन्त-सतियों के चातुर्मासों से वंचित गाँव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान् स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहाँ जैन सन्त-सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष पर्युषण पर्व 19 अगस्त से 26 अगस्त 2017 तक रहेंगे। अतः देश-विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक 15 जुलाई 2017 तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करायें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गाँव/शहर का नाम.....जिला.....प्रान्त.....
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता.....
3. संघाध्यक्ष का नाम, पता मय फोन नं.....
4. संघ मंत्री का नाम, पता मय फोन नं.....
5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन.....
6. समस्त जैन घरों की संख्या.....
7. क्या आपके यहाँ धार्मिक पाठशाला चलती है?.....
8. क्या आपके यहाँ स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?.....
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव.....
10. अन्य विशेष विवरण.....

आवेदन करने का पता-संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 0291-2624891, 94141-26279(कार्यालय), फैक्स-2636763, मो.-9461522309 (संयोजक), 09422775692 (सह-संयोजक), 8003615215(सचिव), 9462543360 (का. प्रभारी), ईमेल-swadhyaasanghiodhpur@gmail.com

विशेष- दक्षिण भारत के संघ अपनी मांग श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ शाखा चेन्नई 24/25, Basin Water Works Street, Sowcarpet, Chennai-600079 के पते पर भी भेज सकते हैं। सम्पर्क सूत्र- श्री प्रकाशचन्द मुथा (संयोजक)-09884554801, श्री सुधीर सुराणा (पूर्व संयोजक)-09381540004



जय गुरु हस्ती

||GURUDEV||

जय गुरु हीरा-मान



गुरु हस्ती के दो फरमान
सामायिक स्वाध्याय महान

गुरु हीरा का यह सन्देश
व्यसन मुक्त हो देश विदेश



UDAY INDUSTRIES CHENNAI PVT. LTD.

IMPORT & EXPORT AND DEALERS OF IRON & STEEL
LONG & FLAT PRODUCTS

UDAY CONSULTS LLP

OVERSEAS AND DOMESTIC MANPOWER RECRUITMENT
AND
FACILITY MANAGEMENT

CONNECTING BRIGHT TALENT WITH THE RIGHT COMPANY

STEEL

| **LOGISTICS** |

MANPOWER

WITH BEST COMPLIMENTS from:

G R SURANA & RAJESH SURANA

No.10&11, Jawaharlal Nehru Road,
Koyambedu, Chennai - 600 107.

Mobile No: 9940566666, Contact No: 044-24797675

Website: www.udaygroup.net

Mail Id: industries@udaygroup.net



भण्डारी हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेन्टर



(आपके स्वास्थ्य के साथ हमेशा)



Certificate No. H-2012-0128

राजस्थान व पड़ोसी राज्यों में लेजर, लैप्रोस्कोपी एवं लिथोट्रिप्सी
का सर्वश्रेष्ठ एवं विश्वसनीय सेन्टर

~ अस्पताल की विशेषताएं ~



Lithotripsy Treatment

दूरबीन पद्धति से पेट, अपेन्डिक्स, हर्निया, प्रोस्टेट, पाइल्स आदि की शल्य
चिकित्सा की सुविधा।

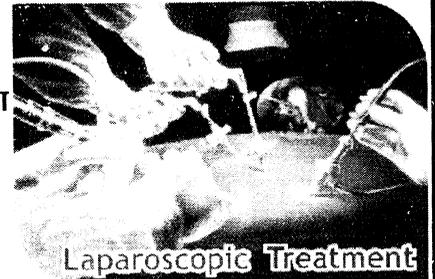
शरीर में किसी भी स्थान पर होने वाली पथरी के ईलाज का सर्वश्रेष्ठ संस्थान।

स्त्री रोग, नॉर्मल, सिजेरियन व हाई रिस्क डिलेवरी का अग्रणीय संस्थान।

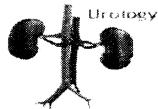
विशेषज्ञों की सेवायें

- ▲ मूत्र व पथरी रोग
- ▲ पेट, लीवर व आंत रोग
- ▲ जनरल व मोटापा निवारण
सर्जरी
- ▲ स्त्री रोग
- ▲ जनरल फिजिशियन

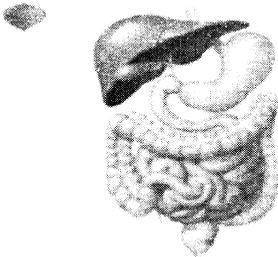
- ▲ प्लास्टिक व कॉस्मेटिक सर्जरी
- ▲ बाल रोग एवं बाल शल्य चिकित्सा
- ▲ न्यूरो सर्जरी
- ▲ दन्त रोग
- ▲ नाक, कान व गला रोग
- ▲ चर्म रोग



Laparoscopic Treatment



Urology



सुविधायें

- ▲ 30 वर्ष का अनुभव
- ▲ 4 लाख से अधिक रोगियों का सफल ईलाज
- ▲ 2 लाख से अधिक रोगियों का शल्य क्रिया द्वारा उपचार।
- ▲ 50,000 से अधिक पथरी रोगियों का उपचार।
- ▲ NABH & NABL से मान्यता प्राप्त।
- ▲ MLC (Medico Legal Case) की सुविधा
- ▲ 24x7 ICU, Emergency Facility

CGHS, ECHS, ESIC, NPCIL (Rawatbhata), BSNL, BHEL, GAIL, IOCL, CWC, FCI, NFL, MNIT, CIPET, CSWRI, HCL, AAI, Coal India, CISF (8th RES BN), Rajasthan University, केन्द्र व राजस्थान सरकार के सभी कर्मचारी व पेंशनर्स एवं सभी

प्रमुख TPA व इंश्योरेंस कंपनियों से ईलाज हेतु अधिकृत

138-ए, वसुन्धरा कॉलोनी, गोपालपुरा बाईपास, टॉक रोड़, जयपुर - 302018

फोन: 0141-2703851-52 (मो.) 9660006228, 9829770055



जयगुरु हस्ती

जयगुरु हीरा

जयगुरु मान



साधना के मार्ग में प्रगतिशील वही बन सकता है,
जिसमें संकल्प की दृढ़ता हो।

- आचार्य श्री हस्ती

**C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS**

218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karnataka)

With Best Compliments from :

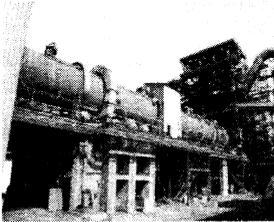
*C. Sohanlal Budhmal Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurabh, Akhilesh Baghmar*

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)

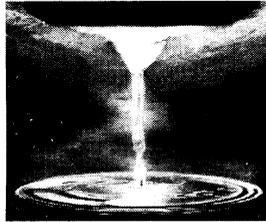
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)



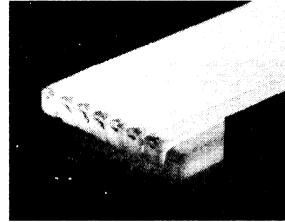
Gurudev



DRI Plant



Electric Arc Furnace



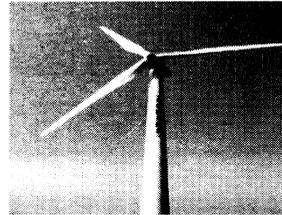
Billets



Rolling Mill



Captive Power Plant



Windmill

With best wishes from



ISO 9001-2008



SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL | POWER | MINING

॥ श्री महावीराय नमः ॥

हस्ती-हीरा जय जय !

हीरा-मान जय जय !



छोटा सा नियम धोवन का ।
लाभ बड़ा इसके पालन का ॥

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.

एवं समस्त

रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल

के चरण कमलों में भावभरा कोटिशः वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHVIRAJ PREM KUMAR KAVAD

690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056

Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273



MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

GURU HASTI THANGA MAALIGAI

(JEWELLERS & BANKERS)

5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056

Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्वल भविष्य की ओर एक कदम.....

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

आदरणीय रत्नबंधुवर,

छात्रवृत्ति योजना की निरन्तर गतिशीलता के लिए सदस्यता अभियान से जुड़िये। सदस्यता अभियान का प्रारूप इस प्रकार है -

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्वल भविष्य की ओर एक कदम.....

सदस्यता अभियान

हीरक स्तम्भ सदस्य
(5 लाख रुपये प्रति वर्ष)

स्वर्ण स्तम्भ सदस्य
(1 लाख रुपये प्रति वर्ष)

नोट-सदस्यता को ग्रहण करने वाले सभी सदस्यों का नाम जिनवाणी पत्रिका में प्रति माह प्रकाशित किया जायेगा।

Acharya Hasti Scholarship Fund*Ujjawal Bhavishya Ki Aur Ek Kadam.....*

Your Contribution Towards This Noble Cause Will Go A Long Way In Lighting The Lamp Of Knowledge To Deserving and Intelligent Students, Hence We Kindly Request You To Contribute For This Noble Cause.

Note-The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. The Bank A/c Details is as follows -

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund

A/c No. 168010100120722

Bank Name & Address - AXIS BANK LTD. Anna Salai, Chennai(TN) IFSC Code - UTIB0000168

PAN No. - AAATG1995J

Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

• For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad, Chennai (+91 95001 14455)

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनायें रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पुण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यों के नामों की सूची -

हीरक स्तम्भ सदस्य (5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य (1 लाख रुपये प्रति वर्ष)
श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई। युवारत्न श्री हरीश जी कवाड़, चैन्नई। श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्यूस्टन श्रीमान् रिखबचंद सा सुखानी, रायचूर (कर्नाटक)	श्रीमान् दूलीचंद बाघमार एण्ड संस, चैन्नई। श्रीमान् दलीचंद जी सुरेश जी कवाड़, पूनामल्लई। श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई। श्रीमान् गणपत जी हेमन्त जी बाघमार, चैन्नई। श्रीमान् प्रेम जी कवाड़, चैन्नई। गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् अम्बालाल जी बसन्तीदेवी जी कर्नावट, चैन्नई। श्रीमान् सम्पतराज जी राजकंवर जी मंडारी, ट्रिपलीकेन-चैन्नई। गुप्त सहयोगी, चैन्नई।

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें-

M. Harish Kumar Kavad - 5, Car Street, Poonamallee, CHENNAI-600056 (TN)

छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सर्मक करें- मनीष जैन, चैन्नई (Mob. +91 95430 68382)

'छोटा सा चिन्तन परिग्रह को हल्का करने का, लाभ बड़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का'

Jai Guru Heera

Jai Guru Hasti

Jai Guru Maan

॥ जैनं जयति शासनम् ॥

With Best Compliments from:

Dharamchand Paraschand Exports

Paras Chand Hirawat

CC 3011-3012, Bandra Kurla Complex, Bandra (E),

Mumbai-400 098 (MH)

Tel. : +91 22 4018 5000

Email : dpe90@hotmail.com

KANTILAL SHANTILAL RAJENDRA LUNKER

PACHPADRA-PALI-ERODE

K.L. ASSOCIATES

'Sanskar', 177-B, Adarsh Nagar, Pali-306401 (Raj.)

Mobile : 094141-22757

135, N.M.S. Compound, ERODE-638001 (T.N.)

Tel. : 3205500 (O), Mobile : 093600-25001

BHANSALI GROUP

Dhanpatraj V. Bhansali

BHANSALI DEVELOPERS

Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road, Vile Parle (E),

Mumbai-400057 (MH) Tel. : 26185801, 32940462 (O),

E-mail : bhansalidevelopers@yahoo.com

S.D. GEMS & SURBHI DIAMONDS

Prakash Chand Daga

Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)

FC51, Bharat-Diamond Bourse,

Bandra Kurla Complex,

Bandra (E), Mumbai-400098 (MH)

Ph. : 022-23684091, 23666799 (o), 022-28724429

Fax : 22-40042015, Mobile : 098200-30872

E-mail : sdgems@hotmail.com

Basant Jain & Associates, C.A.

BKJ & Associates, C.A.

BKJ Consulting Pvt. Ltd.,

Megha Properties Pvt. Ltd.

Ambition Properties Pvt. Ltd.

बसंत के जैन

अध्यक्ष: श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई

ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट

601, Dalamal Chambers, New Marine Lines,

Mumbai - 400020 (MH)

Ph. : 022-22018793, 22018794 (o), 022-28810702

NARENDRA HIRAWAT & CO.

N.H. Studios

Launches

N.H. Jewells

A-1502, Floor-15th, Plot-FP616(PT), Naman Midtown, Senapati Bapat Marg,

Near Indiabulls, Elphinstone (W), Mumbai-400013 (MH)

Web. www.nhstudios.tv, Tel. : 022-24370713

!!Jai Guru Heera!!

!!Jai Guru Hasti!!

!!Jai Guru Man!!

LIFE
SHOULD NOT
ONLY BE LIVED,
IT SHOULD BE
CELEBRATED!

With best compliments from:

C. R. Kothari & Sons Group of Companies

Stock Broking - DP-CDSIL-NBFC-Solar Power

Mumbai - Baroda - Jaipur - Ajmer

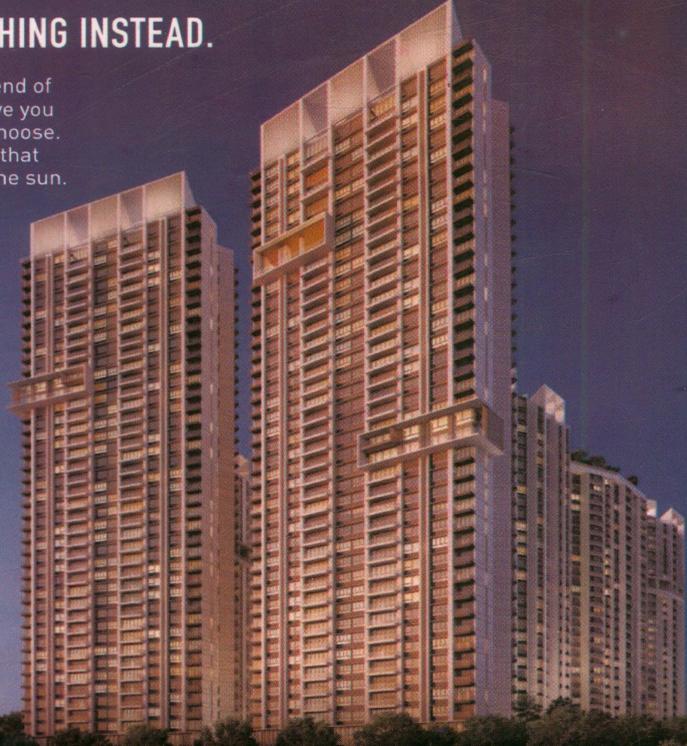
Pradeep Kothari
Sanjay Kothari

Hemant Kothari
Alok Kothari

WELCOME TO A HOME THAT DOESN'T
FORCE YOU TO CHOOSE.
BUT, GIVES YOU EVERYTHING INSTEAD.

Life is all about choices. So, at the end of your long day, your home should give you everything, instead of making you choose. Kalpataru welcomes you to a home that simply gives you everything under the sun.

 022 3064 3065



ARTIST'S IMPRESSION

Centrally located in Thane (W) | Sky park | Sky community | Lavish clubhouse | Swimming pools | Indoor squash court | Badminton courts

PROJECT
IMMENZA
THANE (W)
EVERYTHING UNDER THE SUN

TO BOOK 1, 2 & 3 BHK HOMES, CALL: +91 22 3064 3065

Site Address: Bayer Compound, Kolshet Road, Thane (W) - 400 601. | **Head Office:** 101, Kalpataru Synergy, Opposite Grand Hyatt, Santacruz (E), Mumbai - 400 055. | **Tel:** +91 22 3064 5000 | **Fax:** +91 22 3064 3131 | **Email:** sales@kalpataru.com | **Website:** www.kalpataru.com

This property is secured with Axis Trustee Services Ltd. and Housing Development Finance Corporation Limited. The No Objection Certificate/Permission would be provided, if required. All specifications, designs, facilities, dimensions, etc. are subject to the approval of the respective authorities and the developers reserve the right to change the specifications or features without any notice or obligation. Images are for representative purposes only. *Conditions apply.

In association with
HDFC
PROPERTY FUND

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - विनय चन्द डागा द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शाँप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन